हिंदी

बालभारती

सा विद्या या विमुक्तये

१९६७ २०१७

बालभारती

सुवर्णमहोत्सव

छठी कक्षा

स्वीकृति क्रमांक : मराशैसंप्रप/अविवि/शिप्र २०१५-१६/१६७३ दिनांक ६/४/२०१६

हिंदी

बालभारती

छठी कक्षा

मेरा नाम _____ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

प्रथमावृत्ति : २०१६
पहला पुनर्मुद्रण : २०१७

© **महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४**

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य–अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील–सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला–सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी–सदस्य
श्री संतोष धोत्रे–सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी–सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे–सदस्य
डॉ.अलका पोतदार–सदस्य–सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

डॉ.वर्षा पुनवटकर
सौ. वृंदा कुलकर्णी
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
डॉ.आशा वी. मिश्रा
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती माया कोथळीकर
श्री रामहित यादव
श्री प्रकाश बोकील
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्री रामदास काटे
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
डॉ.शैला चव्हाण
श्रीमती शारदा बियानी
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुसकुटे
श्रीमती रत्ना चौधरी

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक,
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई–२५

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : रेश्मा बर्वे
चित्रांकन : राजेश लवळेकर, श्री रा. भा. राजपुत, महेश किरडवकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री सचिन मेहता, निर्मिति अधिकारी
श्री नितीन वाणी, निर्मिति सहायक

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2016-17/35,000
मुद्रक : SAP PRINT SOLUTION PVT. LTD., THANE.

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

बच्चों का 'निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षाधिकार अधिनियम २००९ और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप–२००५' को दृष्टिगत रखते हुए राज्य की 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या–२०१२' तैयार की गई । इस पाठ्यचर्या पर आधारित 'हिंदी बालभारती' छठी कक्षा की यह पुस्तक 'मंडळ' प्रकाशित कर रहा है । इस पुस्तक को आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अतीव आनंद हो रहा है ।

पाठ्यपुस्तक में कविता, कहानी, निबंध, संवाद, हास्य–व्यंग्य आदि विविध विधाओं का समावेश करते समय विद्यार्थियों की आयु, अभिरुचि, पूर्वानुभव एवं भावविश्व पर विशेष ध्यान दिया गया है । भाषाई कौशल एवं विभिन्न क्षेत्रों के विकास हेतु प्राय: घर, परिसर में घटित होनेवाली घटनाओं/प्रसंगों, स्वच्छता, पर्यावरण, जल संरक्षण आदि आवश्यकताओं/ समस्याओं को आधार बनाया गया है । कौशल एवं विभिन्न क्षेत्रों के दृढ़ीकरण हेतु नाविन्यपूर्ण खेल, कृति, स्वाध्याय, उपक्रम तथा विविध प्रकल्प दिए गए हैं । इनके माध्यम से विद्यार्थियों की रचनात्मकता को विशेष महत्त्व दिया गया है । पुस्तक को अधिक बालोपयोगी बनाने के लिए इसे चित्रमय एवं विद्यार्थीकेंद्रित रखा गया है । भाषाई दृष्टि से आवश्यक अन्य विषयों को भी समाविष्ट किया गया है ।

विद्यार्थी की कल्पनाशीलता, सृजनशीलता एवं विचार शक्ति का उचित ढंग से विकास होना चाहिए । शिक्षक एवं अभिभावकों के मार्गदर्शन के लिए 'दो शब्द' तथा प्रत्येक पृष्ठ पर सूचनाएँ दी गई हैं । अध्ययन–अध्यापन की प्रकिया में ये सूचनाएँ निश्चित ही उपयोगी होंगी । प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न चरणों में विद्यार्थी निश्चित रूप से किन क्षमताओं को प्राप्त करें; यह अध्ययन–अध्यापन करते समय स्पष्ट होना चाहिए । इसके लिए प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के प्रारंभ में हिंदी भाषा विषय की अपेक्षित क्षमताओं का पृष्ठ दिया गया है । इन क्षमताओं का अनुसरण करते हुए पाठ्यपुस्तक में समाविष्ट पाठ्यांशों की नाविन्यपूर्ण प्रस्तुति की गई है ।

हिंदी भाषा समिति, भाषा अभ्यासगट और चित्रकारों के निष्ठापूर्ण परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की गई है । पुस्तक को दोषरहित एवं स्तरीय बनाने के लिए राज्य के विविध भागों से आमंत्रित प्राथमिक शिक्षकों, विशेषज्ञों द्‌वारा पुस्तक का समीक्षण कराया गया है । समीक्षकों की सूचनाओं और अभिप्रायों को दृष्टि में रखकर हिंदी भाषा समिति ने पुस्तक को अंतिम रूप दिया है ।

'मंडळ' हिंदी भाषा समिति, अभ्यासगट, समीक्षकों, विशेषज्ञों, चित्रकारों, भाषाविशेषज्ञ डॉ. प्रमोद शुक्ल के प्रति हृदय से आभारी है । आशा है कि विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

पुणे
दिनांक :– ९ मई २०१६, अक्षय तृतीया
भारतीय सौर : १९ वैशाख १९३८

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे–०४

दो शब्द

यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को दृष्टि में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजक विषयों के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है । पाठ्यपुस्तक को स्तरीय (ग्रेडेड) बनाने हेतु दो विभागों में विभाजित करते हुए इसका 'सरल से कठिन' क्रम रखा गया है। यहाँ विद्यार्थियों के पूर्व अनुभव, घर-परिवार, परिसर को आधार बनाकर श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन के भाषाई मूल कौशलों के साथ भाषा अध्ययन और अध्ययन कौशल पर विशेष बल दिया गया है । इसमें स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करने वाली रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।

पाठ्यपुस्तक में क्रमिक एवं श्रेणीबद्ध कौशलाधिष्ठित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, स्वाध्याय और उपक्रम भी दिए गए हैं । विद्यार्थियों के लिए लयात्मक कविता, बालगीत, कहानी, संवाद, आदि विषयों का समावेश है । स्वयं की अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता के साथ-साथ वैविध्यपूर्ण स्वाध्याय के रूप में 'जरा सोचो....', 'खोजबीन', 'मैंने क्या समझा', 'अध्ययन कौशल' आदि कार्यात्मक कृतियाँ भी दी गई हैं । सृजनशील गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले अभ्यास 'मेरी कलम से' 'वाचन जगत से', 'बताओ तो सही', 'सुनो तो जरा', 'स्वयं अध्ययन' तथा 'विचार मंथन' आदि का समावेश किया गया है । इन कृतियों में एक दृष्टिकोण रखने का प्रयास किया है जिसे समझकर विद्यार्थियों तक पहुँचाना और उनसे कृतियाँ करवाना अपेक्षित है ।

शिक्षकों एवं अभिभावकों से यह अपेक्षा है कि अध्ययन-अनुभव देने से पहले पाठ्यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेत एवं दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । सभी कृतियों का विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' की पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराएँ । आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक में दिए गए शब्दार्थ का उपयोग करें । लयात्मक, ध्वन्यात्मक शब्दों का अपेक्षित उच्चारण एवं दृढ़ीकरण कराना आवश्यक है। इस पाठ्यपुस्तक में लोक प्रचलित तद्भव शब्दों का भी प्रयोग किया गया है । विद्यार्थी इनसे सहज रूप में परिचित और अभ्यस्त होते हैं । व्याकरण (भाषा अध्ययन) को समझने हेतु 'भाषा की ओर'के अंतर्गत चित्रों तथा भाषाई खेलों को दिया गया है ताकि पुनरावर्तन और नए व्याकरण का ज्ञान हो ।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक के माध्यम से जीवन मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्त्वों के विकास का अवसर विद्यार्थियों को प्रदान करें । पाठ्यसामग्री का मूल्यांकन निरंतर होने वाली प्रक्रिया है । इससे विद्यार्थी परीक्षा के तनाव से मुक्त रहेंगे । पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं-श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन, भाषा अध्ययन (व्याकरण) और अध्ययन कौशल का सतत मूल्यांकन अपेक्षित है ।

विश्वास है कि आप सब अध्ययन-अध्यापन में पाठ्यपुस्तक का उपयोग कुशलतापूर्वक करेंगे और हिंदी विषय के प्रति विद्यार्थियों में अभिरुचि और आत्मीयता की भावना जागृत करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में सहयोग देंगे ।

भाषा विषयक क्षमता

क्रमांक	क्षमता	क्षमता विस्तार
१.	श्रवण	१. कविता, कहानी, देशभक्तिपरक गीत, दोहे, चुटकुले रुचि लेते हुए ध्यानपूर्वक सुनना तथा आनंदपूर्वक दोहराना । २. प्रासंगिक कथाएँ/भाषण, बालसभा की चर्चा, समारोह का वर्णन, घटना, संवाद, जानकारी ध्यानपूर्वक एकाग्रता से समझते हुए सुनना और सुनाना । सुनी हुई सामग्री को हावभाव सहित सुनाना । ३. आदेश, निर्देश, अनुरोध, विनती, सूचना के वाक्यों को सुनकर कृति करना ।४. संचार माध्यमों के कार्यक्रमों और विज्ञापनों को रुचिपूर्वक देखना, सुनना । प्रसंगों का विश्लेषण करते हुए उनकी नकल करना । ५. गद्य, पद्य, परिच्छेद, संवाद ध्यानपूर्वक रुचि से सुनना और सुनाना ।
२.	भाषण-संभाषण	१. गीत, समूह गीत, कविता एवं दोहे की शुद्ध उच्चारण के साथ प्रस्तुति । २. किसी भी घटना, प्रसंग, शालेय कार्यक्रम, मुख्य समाचार एवं प्रासंगिक कथाओं के प्रत्येक प्रसंग को उचित क्रम देते हुए अपने शब्दों में प्रस्तुत करना । ३. वर्णों को जोड़कर सार्थक शब्द, शब्दों को जोड़कर सार्थक वाक्य, बताना । दैनिक व्यवहार की बातचीत में यथास्थान मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग करके बोलना । ४. हिंदीतर विविध विषयों के उपक्रमों एवं प्रकल्पों पर सहपाठियों से चर्चा करते हुए विस्तृत जानकारी देना । ५. अपनी चर्चा में स्वर-व्यंजन, विशेष वर्ण, पंचमाक्षर, संयुक्ताक्षर से युक्त शब्दों एवं वाक्यों का मानक उच्चारण करना। गद्य एवं पद्य परिच्छेदों में आए हुए शब्दों को दोहराना तथा अपने शब्द-भंडार में वृद्धि करना ।
३.	वाचन	१. गीतों, कविताओं एवं दोहों का लय-ताल, आरोह-अवरोह, हाव भाव के साथ वाचन करना । २. कहानी, निबंध, घरेलू पत्र, मुहावरे-कहावतें एवं विविध विषयों से संबंधित संवादों का रुचि लेते हुए वाचन करना । ३. राष्ट्रीय त्योहार, राष्ट्रीय महापुरुष आदि विषयों पर दिए गए भाषणों का, वर्णनात्मक निबंधों एवं हास्यकथाओं का रुचिपूर्वक, आकलन सहित वाचन करना । ४. अलग-अलग कलाओं, जीवनोपयोगी वस्तुओं की प्रदर्शनी एवं यात्रावर्णन समझते हुए वाचन करना । ५. विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, परिसर एवं सामाजिक घटकों के संबंध में जानकारी प्राप्त करने हेतु वाचन करना । सांकेतिक चिह्नों का वाचन करना और प्रयोग करते हुए दैनिक जीवन से जोड़ना ।
४.	लेखन	१. गद्य, पद्य आदि का आकलन करते हुए एकाग्रता से, विरामचिह्नों का उचित प्रयोग करते हुए सुपाठ्य, सुडौल अनुलेखन, सुलेखन, श्रुतलेखन करना । २. हिंदी की मात्राएँ, वर्तनी, वर्णों के मानक रूप आदि के आधार पर परिच्छेद एवं निर्देशित लेखन का आकलन सहित लेखन करना । ३. गद्य, पद्य तथा अन्य पठित/अपठित सामग्री के आशय का आकलन करते हुए सभी प्रकार के प्रश्नों के सटीक उत्तर अपने शब्दों में लिखना । ४. नियत तथा निर्देशित विषयों पर पत्र, निबंध , रूपरेखा के आधार पर कहानी, भाषण, संवाद आदि का स्वयंस्फूर्त लेखन करना । ५. सृजनशील अभिव्यक्ति-अपनी रुचि के अनुसार विद्यालयीन एवं घरेलू कार्यक्रम, त्योहार, प्रसंग, घटना आदि का क्रमबद्ध लेखन करना ।
५.	भाषा अध्ययन (व्याकरण)	१. पुनरावर्तन — स्वर, व्यंजन, बारहखड़ी, लिंग, वचन, उपसर्ग, प्रत्यय, विकारी शब्द २. अविकारी शब्द(अव्यय) पहचान एवं प्रयोग करना ३. विराम्चिह्न (-, —,‘ ’, ;) योजक, निर्देशक, इकहरा अवतरण चिह्न, अर्ध विराम चिह्न आदि का लेखन में उचित प्रयोग करना । ४. वाक्य भेद-रचना के अनुसार, अर्थ के अनुसार पहचान एवं प्रयोग । ५. मुहावरे, कहावतों के अर्थ का आकलन तथा प्रयोग । ६ क्रिया के काल: परिचय (भेद सहित), पहचान एवं प्रयोग । ७. कारक चिह्न-प्रयोग ।
६.	अध्ययन कौशल	१. काव्य पंक्तियाँ, सुवचन, सुभाषित आदि के संकलन का स्वयंस्फूर्त लेखन में उचित प्रयोग करना । २. उपलब्ध सामग्री पर आधारित चित्र, आकृति, आलेख, चित्रकथा आदि बनाकर शीर्षक देना । ३. अंतरजाल और लिखित साहित्य सामग्री से जानकारी का संकलन कर उनके आधार पर विषयानुरूप प्रस्तुति । ४. सुनी, पढ़ी सामग्री से संबंधित उचित मुद्दों को अधोरेखांकित करते हुए उनका संकलन करना । ५. दैनिक लेखन, भाषण-संभाषण में उपयोग करने हेतु अब-तक पढ़े हुए नए शब्दों का लघु शब्दकोश तैयार करना ।

✻ अनुक्रमणिका ✻

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
✻	वर्षाऋतु	१
१.	स्वाद की पाठशाला	२,३
२.	पुकार	४–६
३.	आँखें मूँदो नानी	७–१०
४.	नई रीत	११–१५
५.	राजस्थानी	१६
६.	चाचा छक्कन ने चित्र टाँगा	१७–२१
७.	आए कहाँ से अक्षर?	२२,२३
८.	इनसे सीखो	२४–२६
९.	अस्तित्व अपना–अपना	२७–३०
१०.	आसन	३१
११.	सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा	३२–३५
१२.	पढ़क्कू की सूझ	३६–३८
१३.	घड़ी ने खोला राज	३९–४३
१४.	बिना टिकट	४४–४७
१५.	नीला अंबर	४८–५०
✻	पुनरावर्तन – १	५१
✻	पुनरावर्तन – २	५२

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	विज्ञान प्रदर्शनी	५४–५५
२.	काटो खेताँ काटो रे	५६–५७
३.	तीन लघुकथाएँ	५८–६१
४.	ऊर्जा आए कहाँ से?	६२–६६
५.	मेरा भाग्य देश के साथ	६७–६९
६.	हमारे परमवीर	७०–७२
७.	बूझो तो जानो	७३
८.	आह्वान	७४–७६
९.	फैसला	७७–८१
१०.	दिनदर्शिका	८२
११.	सुनहरे हिमालय के दर्शन	८३–८७
१२.	दोहे	८८–९०
१३.	नई राह की ओर	९१–९४
१४.	सारे जहाँ से अच्छा	९५–९८
१५.	झाँसी की रानी	९९–१०१
✻	एकता का गूँजे इकतारा	१०२
✻	पुनरावर्तन – ३	१०३
✻	पुनरावर्तन – ४	१०४

● देखो, पहचानो और चर्चा करो :

* वर्षाऋतु *

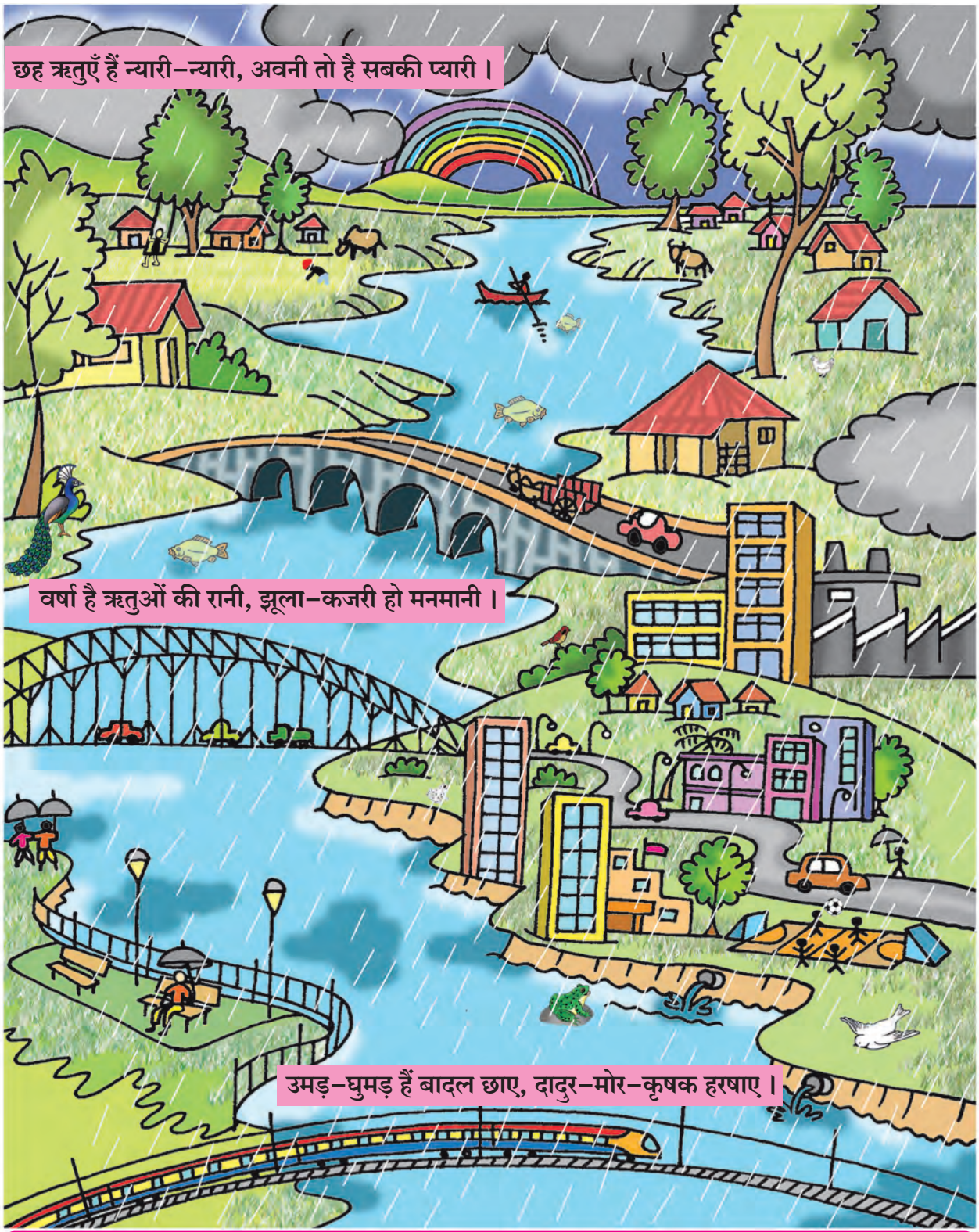

❑ **अध्यापन संकेत :** विद्यार्थियों से उनके अनुभव के आधार पर वर्षाऋतु का वर्णन करवाएँ । चित्र का निरीक्षण कराएँ । दिए गए वाक्यों पर चर्चा करके पाँच वाक्य लिखवाएँ । वर्षा ऋतु से संबंधित उनके पूर्वज्ञान का उपयोग अध्ययन–अध्यापन के लिए करें ।

● **देखो, बताओ और कृति करो :**

१. स्वाद की पाठशाला

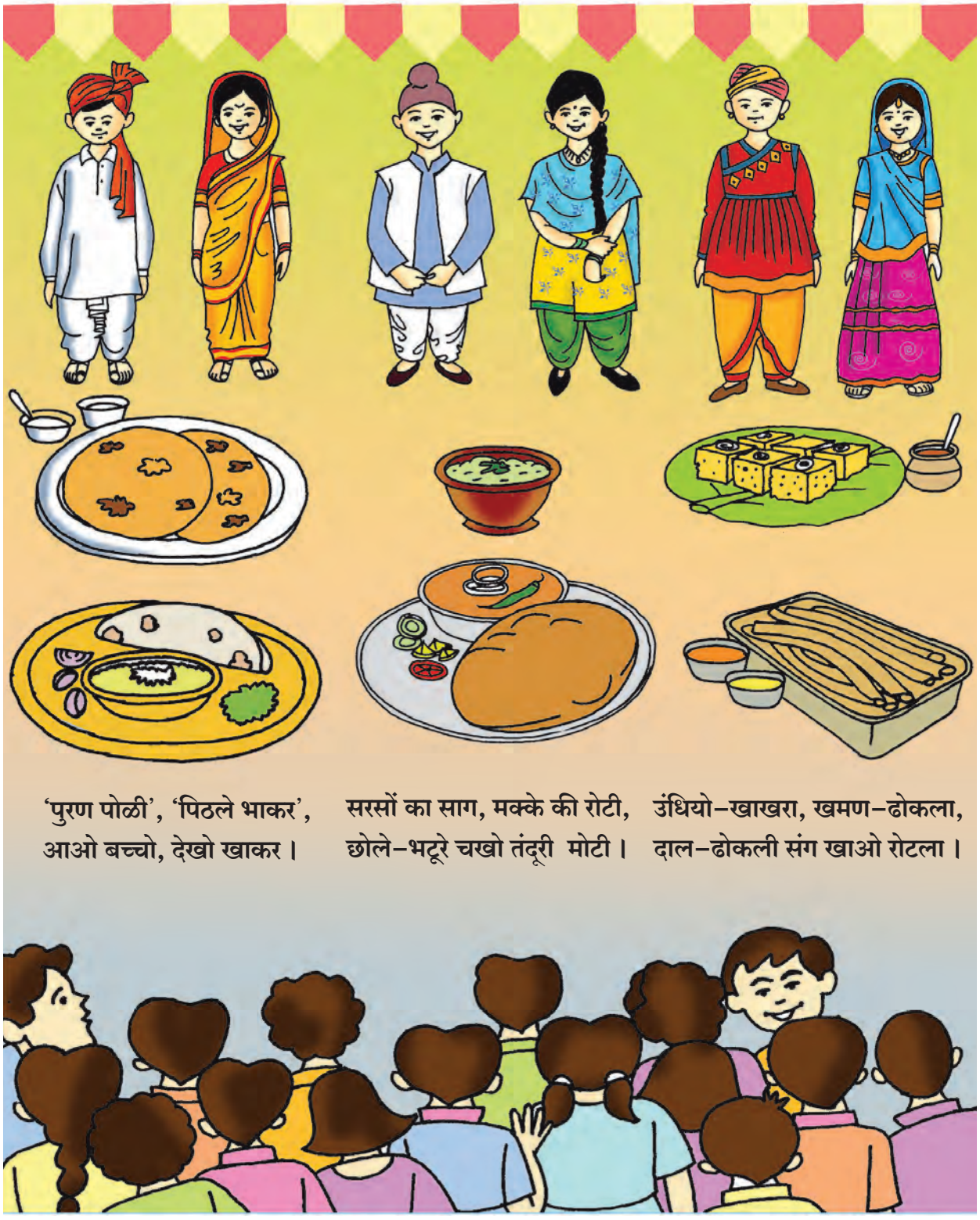

'पुरण पोळी', 'पिठले भाकर',
आओ बच्चो, देखो खाकर ।

सरसों का साग, मक्के की रोटी,
छोले–भटूरे चखो तंदूरी मोटी ।

उंधियो–खाखरा, खमण–ढोकला,
दाल–ढोकली संग खाओ रोटला ।

❑ विद्यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण कराएँ । भारत के विभिन्न राज्यों के नाम और उनके विशेष खाद्य पदार्थों के बारे में चर्चा करें। व्यंजनों के संबंध में विद्यार्थियों की पसंद/नापसंद की जानकारी लें । विभिन्न खाद्य पदार्थों के स्वाद के बारे में प्रश्न पूछें ।

पहली इकाई

मालपुआ, खाजा, पूड़ी, कचौड़ी,
प्रेम से खाओ गुझिया फिर रबड़ी ।

रसगुल्ले, संदेश का थाल
देख के याद आया बंगाल ।

इडली साँभर, मसाला डोसा,
उत्तम स्वाद का पूर्ण भरोसा ।

❑ चित्र में आए वाक्यों का वाचन कराएँ । मीठे, नमकीन और तीखे खाद्य पदार्थों की अलग-अलग सूची बनवाएँ । उनको स्वयं की पसंद के किसी एक खाद्य पदार्थ को बनाने की विधि की जानकारी प्राप्त करने के लिए कहें तथा विधिवत लिखने के लिए प्रेरित करें ।

● पढ़ो और गाओ :

२. पुकार

–जयशंकर प्रसाद

जन्म : ३० जनवरी १८८९ **मृत्यु :** १५ नवंबर १९३७ **रचनाएँ :** 'कामायनी' 'स्कंदगुप्त' 'तितली और कंकाल' आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं । झरना, आँसू, लहर आदि आपकी काव्य कृतियाँ हैं । **परिचय :** हिंदी के प्रसिद्ध लेखक । आपने कविता, नाटक और कहानी आदि विधाओं में सफलतापूर्वक लेखन किया है । इस कविता में सृष्टि के निर्माता की महानता एवं गुणों का वर्णन किया है ।

स्वयं अध्ययन

उगते सूरज का प्राकृतिक दृश्य दर्शाने वाला चित्र बनाकर रंग भरो और वर्णन करो।

विमल इंदु की विशाल किरणें
प्रकाश तेरा बता रही हैं ।
अनादि तेरी अनंत माया
जगत को लीला दिखा रही है ॥

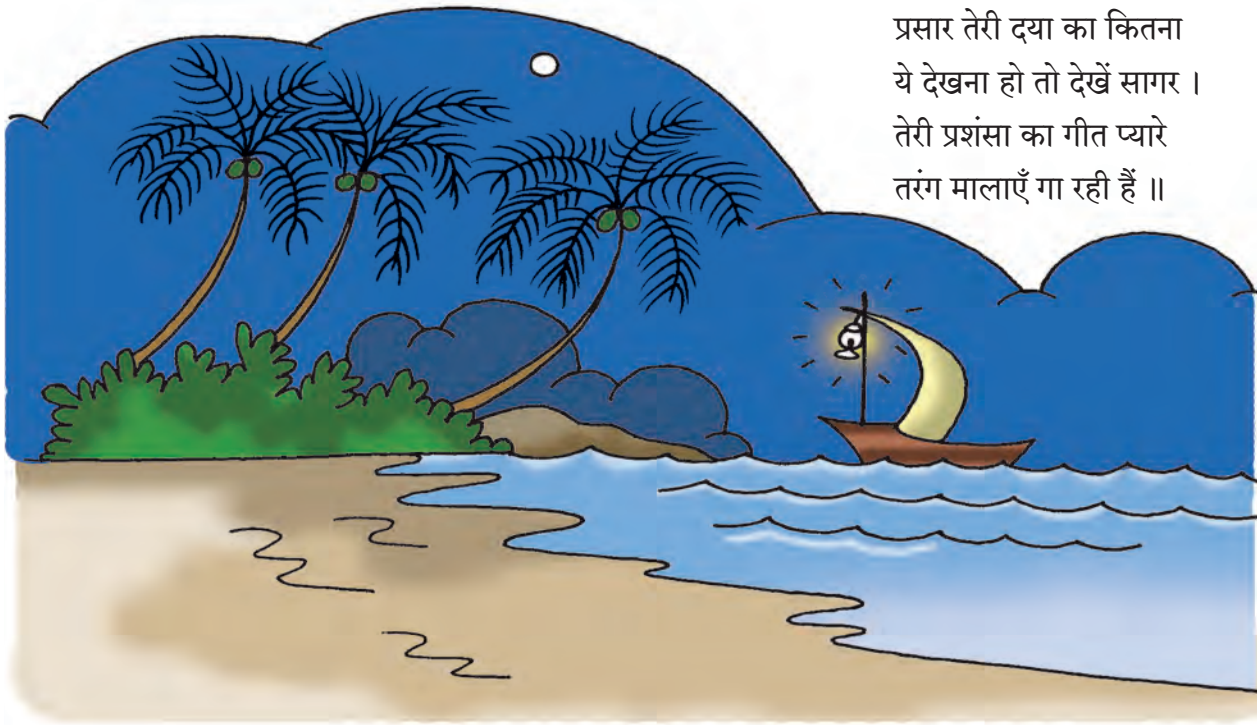

प्रसार तेरी दया का कितना
ये देखना हो तो देखें सागर ।
तेरी प्रशंसा का गीत प्यारे
तरंग मालाएँ गा रही हैं ॥

❑ कक्षा में विद्यार्थियों को हाव-भाव सहित कविता गाकर सुनाएँ और दोहरवाएँ । कविता की एकल, समूह में सस्वर प्रस्तुति कराएँ । कविता में आए भावों पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से चर्चा करें तथा नए शब्दों के अर्थ बताएँ ।

जरा सोचो तो .... चर्चा करो

यदि शांत, हास्य 'रस' नहीं होते तो.....

तुम्हारा स्मित हो जिसे निरखना
वो देख सकता है चंद्रिका को ।
तुम्हारे हँसने की धुन में नदियाँ
निनाद करती ही जा रही हैं ॥

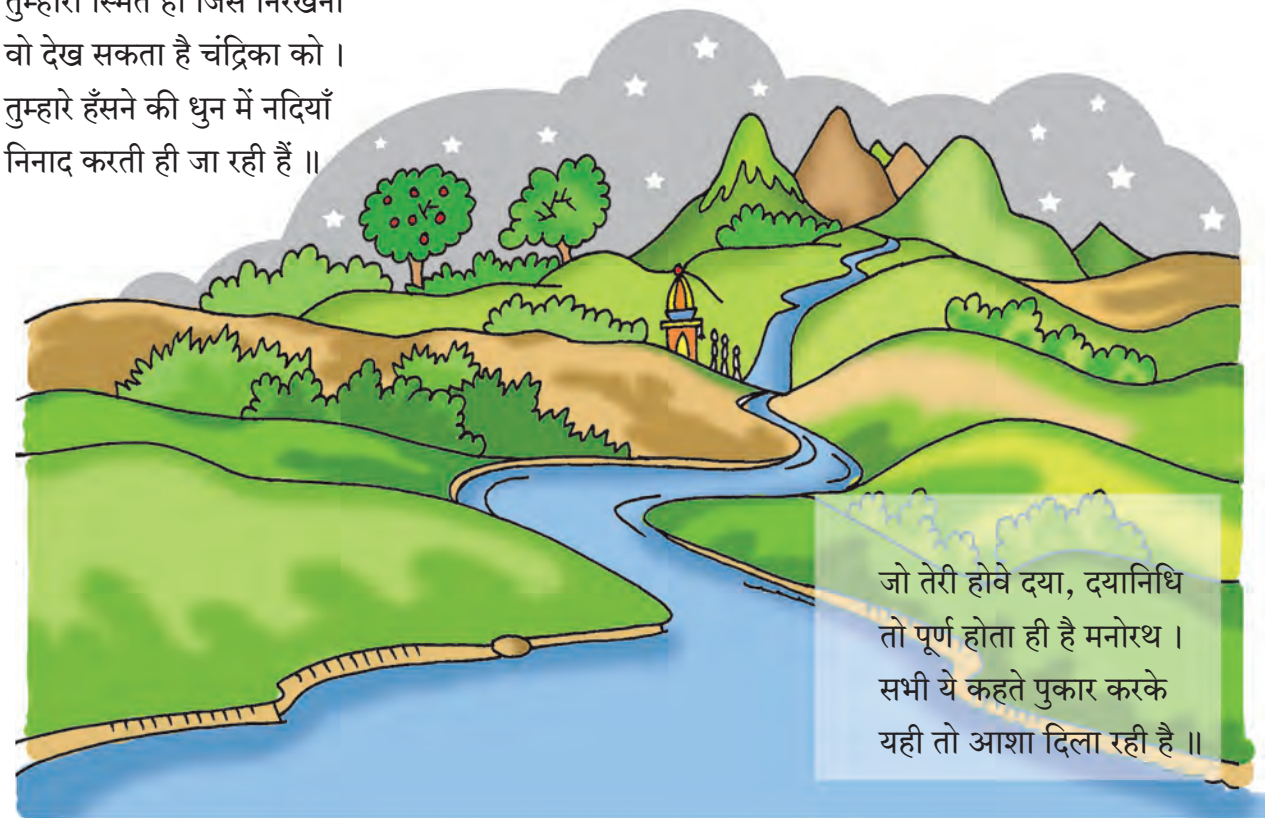

जो तेरी होवे दया, दयानिधि
तो पूर्ण होता ही है मनोरथ ।
सभी ये कहते पुकार करके
यही तो आशा दिला रही है ॥

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

अनादि = जिसका आदि न हो, सदा से
अनंत = जिसका कोई अंत न हो
निरखना = देखना
चंद्रिका = चाँदनी
निनाद = आवाज
दयानिधि = दया के सागर
मनोरथ = मन की इच्छा

सदैव ध्यान में रखो

जीवन में सदैव आशावादी तथा कृतिशील रहना चाहिए ।

विचार मंथन

।। वसुधैव कुटुंबकम् ।।

❑ बताने, दिखाने, गाने, लिखने आदि कृतियों का मूक अभिनय कराएँ । अभिनय की इन क्रियाओं का विद्यार्थियों को उनके अपने वाक्यों में प्रयोग करने हेतु प्रेरित करें । विद्यार्थियों को इन कृतियों के आधार पर छोटे-छोटे वाक्यों की रचना करके बताने के लिए कहें ।

खोजबीन

सागर में मिलने वाले जीव-जंतु तथा वनस्पतियों के नामों की सूची बनाओ ।

सुनो तो जरा

कोई नई प्रार्थना सुनो और दोहराओ ।

बताओ तो सही

'शालेय स्वच्छता अभियान' में तुम्हारा सहयोग क्या है ?

वाचन जगत से

कवि दिनकर जी की कोई कविता पढ़ो और सुनाओ।

मेरी कलम से

किसी अन्य कविता की चार पंक्तियों का सरल अर्थ लिखो ।

⁂ रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

१. विमल इंदु की ..... किरणें
२. तेरी .....का गीत प्यारे
३. वो देख सकता है ..... को ।
४. तो पूर्ण होता ही है ..... ।

भाषा की ओर

बिंदुओं में क्रमश: पूरी वर्णमाला लिखकर जोड़ो और क्रम से बोलो ।

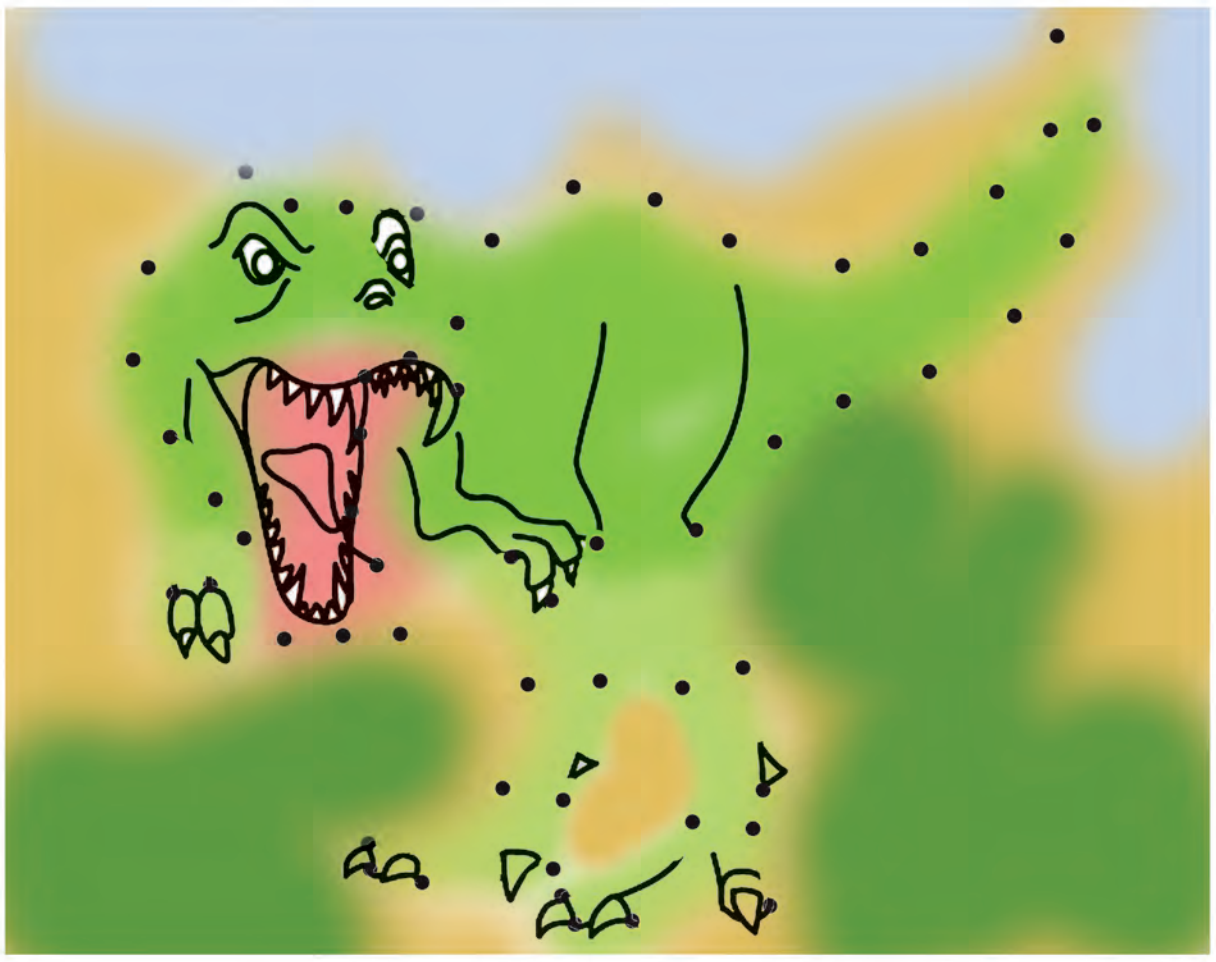

● **सुनो, समझो और बताओ :**

३. आँखें मूँदो नानी

–डॉ. दिविक रमेश

जन्म : ६ फरवरी १९४६, किराड़ी, दिल्ली **परिचय :** आपने बच्चों के भावविश्व से संबंधित अनेक पुस्तकें लिखी हैं । **रचनाएँ :** बालनाट्य, कविता संग्रह, काव्यनाटक, बालसाहित्य, एवं अनूदित रचनाएँ ।

प्रस्तुत कहानी में बताया गया है कि छोटे-छोटे बच्चे भी प्रतिभावान होते हैं । कल्पना के पंख लगाकर वे भी ऊँची उड़ान भर सकते हैं ।

खोजबीन

किसी प्रसिद्ध कारटूनिस्ट की जानकारी प्राप्त करो ।

डोलू ने हँसकर कहा, ''नानी, आप चाहें तो मैं पहाड़ ला सकती हूँ ।''

उसकी बात सुनकर नानी चौंकी । सोचने लगी, 'अरे ! यह लड़की है कि तूफान, पता नहीं इसके दिमाग में क्या चल रहा है ।' फिर बोलीं, ''लेकिन कैसे? क्या तुम्हारी कोई परी दोस्त है, जो मदद करेगी?''

''हाँ नानी ! है न मेरी परी दोस्त । एक नहीं, कई ।''

''अच्छा!'' नानी ने आश्चर्य से आँखें फैलाईं ''पर तुझपर विश्वास कौन करेगा? कंप्यूटर के इस जमाने में किस तरह की बातें कर रही हो?''

'' नानी, आप तो मेरी बात मानती ही नहीं । मुझे परियाँ अच्छी लगती हैं । वे मेरी दोस्त हैं ।''

''अच्छा, क्या तुम्हारी परी पहाड़ उठा सकती है?'' नानी ने बात टालने की नीयत से पूछा ।

''हाँ, हाँ ।''

''पर परी तो कोमल होती है ।''

''हो सकती है, पर उसमें ताकत बहुत है । वह बहुत कुछ कर सकती है । एक बार मैंने परी दोस्त से कहा कि धरती पर खड़ी-खड़ी तारा छुओ । परी ने मुझे गोद में उठाया और लंबी, और-और लंबी, और-और-और-और लंबी होती चली गई और पहुँच गए हम तारे के पास । मैंने तो खूब-खूब छुआ तारे को । उनके साथ खेली भी ।''

नानी को लगा कि कहीं डोलू की बात सच तो नहीं है । पूछा, ''और क्या-क्या था तारे पर ?''

डोलू को इस बार नानी की बात अच्छी लगी । उसने उत्साह से जवाब दिया, ''तारे पर बड़े ही लंबे-लंबे बच्चे थे, बाँस जैसे ! नीचे खड़े-खड़े ही पहली मंजिल की छत से सामान उतार सकते थे । इससे भी मजेदार बात यह है कि उनके माता-पिता कद में बौने थे ।''

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ कहानी के एक-एक परिच्छेद का वाचन करें । कुछ विद्यार्थियों द्वारा उसी परिच्छेद का मुखर वाचन कराएँ । कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा पूरी कहानी का मौन वाचन कराके कहानी के आशय पर चर्चा करवाएँ ।

स्वयं अध्ययन

सह्याद्रि से निकलने वाली नदियों की सूची बनाओ ।

''एँ!'' नानी इस बार सचमुच चौंक गई थीं ।

''हाँ, मुझे भी अचरज हुआ था नानी । परी दोस्त ने बताया कि तारे की धरती और हमारी धरती में अंतर है । तारे की धरती पर आयु बढ़ने के साथ कद छोटा होता है, धरती पर बड़ा ।''

''और क्या वह बोलती भी थी? तूने बात की?'' नानी ने पूछा ।

''हाँ-हाँ नानी, खूब बातें की, पर मैं आपको बताऊँगी नहीं। अरे, मैंने तो परी को नदी उठाकर, आसमान में उड़ते भी देखा है । '' डोलू ने बताया ।

''नदी को उठाकर ! और पानी ?''

'' अरी नानी, पानी समेत । बिलकुल लहराते लंबे कपड़े-सी लग रही थी । कितना मजा आया था ।''

नानी को डोलू की बात पर विश्वास तो नहीं हो रहा था पर मजा बहुत आ रहा था । नानी बोली ''अच्छा डोलू ! तू तो हर रोज ही परी से मिलती है, परी कभी थकती भी है कि नहीं ?''

'' थकती है न नानी । जब कोई उसपर विश्वास नहीं करता, जब कोई उससे उबाऊ बातें करता है, तो बहुत थक जाती है ।''

''सुनो नानी,'' एक बार मुसकराते हुए परी ने कहा-''चलो आज तुम्हें पूरा जंगल निगलकर दिखाती हूँ।'' सुनकर मुझे कुछ-कुछ अविश्वास हुआ । जाने क्यों देखते-ही-देखते परी का मुँह उतरने लगा । उदासी छाने लगी । मैंने झट से अपनी गलती समझी । परी पर विश्वास किया । परी के मुँह पर खुशी लौट आई । वह मुझे जंगल के पास ले गई । परी ने देखते-ही-देखते पूरा जंगल निगल लिया । मैं तो अचरज से भरी थी। मैंने पूछा, ''तुम्हारे पेट में जंगल क्या कर रहा है?'' परी बोली- ''लो, तुम ही देख लो और सुन भी लो ।'' परी ने आँख जैसा कोई यंत्र मेरी आँखों पर लगा दिया । यह क्या ! मैं तो उछल ही पड़ी थी । परी के पेट में पूरा का

पूरा जंगल दिख रहा था । पेड़ हिल रहे थे । जानवर घूम रहे थे । पक्षी बोल रहे थे । नदी बह रही थी । मैंने पूछा- ''परी, यह जंगल अब क्या तुम्हारे पेट में ही रहेगा ?''

परी बोली-''नहीं-नहीं, मैंने तो बस तुम्हें चकित करने के लिए जंगल निगला था । जंगल तो मेरा दोस्त है, बल्कि सभी का दोस्त है । क्या-क्या नहीं देता जंगल आदमी को । अगर जंगल खत्म हो जाए तो सभी का जीना ही दूभर हो जाए ।'' ''नानी, परी तो अपनी आँखों में पूरा समुद्र भी भर सकती है, मछलियों और जीव-जंतुओं समेत । बिलकुल मत्स्य जैसी लगती हैं तब परी की आँखें । एक बार तो सारे बादल ही पकड़कर अपने बालों में भर लिए थे । पर थोड़ी ही देर में परी ने उन्हें छोड़ भी दिया । अगर उन्हें पकड़े रखती तो बारिश कैसे होती ? बारिश न होती तो पूरी धरती को कितना दुख पहुँचता ? परी कहती है कि हमेशा हमें पूरी धरती के हित के लिए प्रयत्न करना चाहिए । नानी कहीं आप झूठ तो नहीं समझ रहीं?''

❑ कहानी में आए मुहावरों के अर्थ पूछकर वाक्य में प्रयोग करने के लिए कहें । (चौंक पड़ना, सिर सहलाना आदि की कृतियाँ कराएँ ।)

जरा सोचो तो ... बताओ

यदि आपको परियों जैसे पंख आ जाएँ तो .....

नानी जरा सँभली । आँखें मसलीं । सिर को भी सहलाया । बोलीं, ''नहीं-नहीं, डोलू । जब ऐसे विस्मित करने वाले कारनामे अपनी आँखों से देखूँगी तो कितना मजा आएगा । सच, मैं तो अविश्वास की बात मन में लाऊँगी तक नहीं ।''

''हाँ-हाँ, मैं परी से आपको मिला दूँगी !'' डोलू की आवाज में गजब का विश्वास था । ''पर पहले यह तो बताओ कि मैं पहाड़ लाकर दिखाऊँ?''

''अच्छा, दिखा । सँभालकर, चोट न लगे तुझे ।'' नानी ने बच्चों की तरह कहा ।

''तो फिर आँखें मूँदो । मैं अभी आई पहाड़ लेकर।''

नानी ने आँखें मूँद लीं । बच्ची जो बन गई थीं। डोलू थोड़ी ही देर में पहाड़ लेकर आ गई, बोली, ''नानी आँखें खोलो और देखो यह पहाड़ ।'' नानी ने आँखें खोल दीं । पूछा, ''कहाँ?''

''यहाँ । यह क्या है ?''

''पहाड़ !''

अब क्या था, दोनों खूब हँसीं, खूब हँसीं । नानी ने डोलू को खींचकर उसका माथा चूम लिया । प्यार से बोलीं, ''तुम सचमुच बहुत नटखट हो डोलू !''

नानी ने अब डोलू से मुसकराते हुए पूछा, ''भई डोलू, अपनी परी दोस्त से भला कब मिलवाओगी ?''

''कहो तो अभी ।''

''ठीक है । मिलाओ ।''

''तो करो आँखें बंद । ''

नानी ने आँखें मूँद लीं । थोड़ी ही देर में डोलू ने कहा, ''नानी आँखें खोलो । '' नानी ने आँखें खोल दीं । पूछा, ''कहाँ है परी?''

''यह कौन है ?''

''परी ।'' नानी ने कहा ।

क्योंकि डोलू परी जैसे पंख लगाकर सामने खड़ी थी ।

दोनों फिर खूब हँसीं, खूब हँसीं । उसने अपनी ही फ्रॉक पर कागज लगा रखा था जिसपर लिखा था-परी ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

नीयत = भाव, उद्देश्य
बौना = छोटे कद का, नाटा
कारनामा = कोई बड़ा कार्य
गजब = विलक्षण, कमाल

अध्ययन कौशल

किसी अन्य कहानी-लेखन के मुद्दे तैयार करो ।

विचार मंथन

।। साइकिल चलाओ, पर्यावरण बचाओ ।।

सदैव ध्यान में रखो

सजीव सृष्टि की रक्षा करना आवश्यक है ।

सुनो तो जरा

अपनी मनपसंद कारटून कथा सुनकर हाव-भाव सहित सुनाओ ।

बताओ तो सही

अपनी दादी/नानी के साथ घटी कोई मजेदार घटना बताओ ।

वाचन जगत से

ध्रुवतारा से संबंधित बालक ध्रुव की कहानी पढ़ो एवं सुनाओ ।

मेरी कलम से

'बाँस' किस-किस जगह उपयोग में लाया जाता है, लिखो ।

❊ एक वाक्य में उत्तर लिखो ।

१. डोलू की कौन-सी बात सुनकर नानी चौंकी ?
२. डोलू ने परी दोस्त से एक बार क्या कहा ?
३. तारे पर कैसे बच्चे थे ?
४. परी कब थक जाती है ?
५. डोलू अचरज से क्यों भर गई ?
६. नानी को किस बात में मजा आएगा ?

भाषा की ओर

'खो-खो' इस खेल के चित्र में दी गई मात्राओं के आधार पर बारहखड़ी का उपयोग कर नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में अपने मित्रों के नाम लिखो :

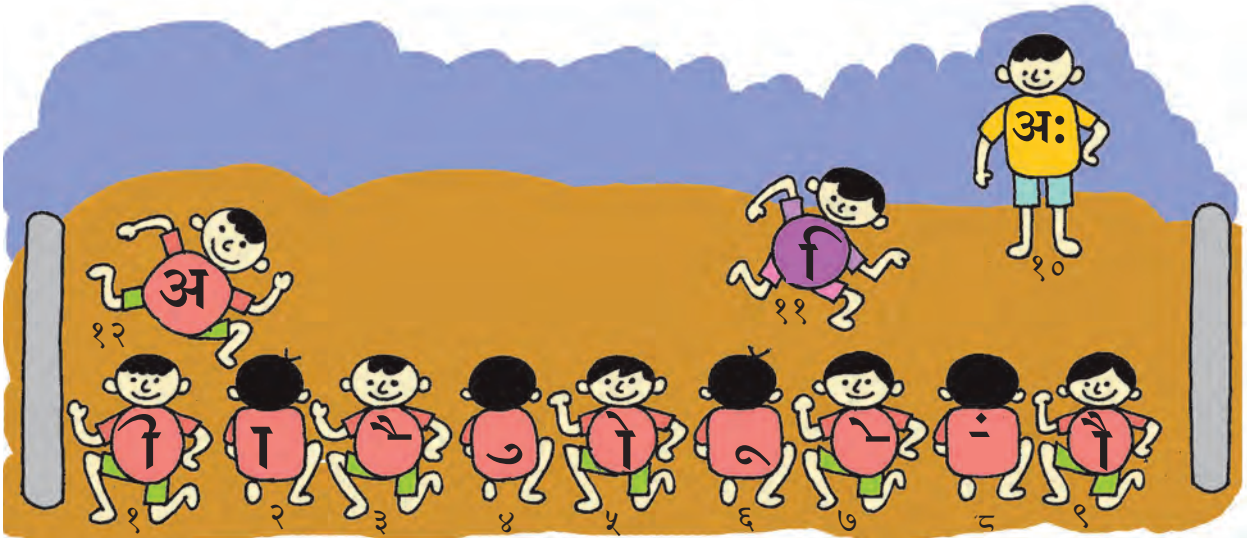

१) सातवें क्रमांक पर कौन बैठा है ?
२) सातवें क्रमांक की बाईं ओर ..... है ।
३) सातवें क्रमांक के सामने ..... भाग रहा है ।
४) प्रथम क्रमांक पर ..... है ।
५) तीसरे क्रमांक के दाईं ओर के पाँचवें क्रमांक पर ..... है ।
६) दसवें क्रमांक पर ..... खड़ा है ।
७) चौथे क्रमांक के दाईं ओर ..... है ।
८) पाँचवें क्रमांक के बाईं ओर ..... है ।
९) दूसरे क्रमांक के दाईं ओर ..... है ।
१०) छठे क्रमांक के बाईं ओर के चौथे क्रमांक पर ..... है ।
११) सातवें क्रमांक के दाईं ओर के दूसरे क्रमांक पर ..... है ।
१२) ग्यारहवें क्रमांक के पीछे ..... भाग रहा है ।

● सुनो, समझो और बताओ :

४ नई रीत

-प्रताप सहगल

इस एकांकी में मित्र के जन्म दिन पर एक अलग तरह के उपहार द्‌वारा वृक्षारोपण को बढ़ावा देने की बात की गई है ।

*** चित्र में दिए गए विराम चिह्नों को समझो और प्रयोग करो ।**

पात्र : (१) देवांश
(२) पापा (देवेंद्र) : देवांश के पापा
(३) मम्मी (देवयानी) : देवांश की माँ
(४) मिताली : देवांश की बहन
(५) नीलेश, अनमोल, मानस, सनी सरदार और चार-छह लड़के, सभी देवांश के दोस्त
(६) बिमला : घर में काम करनेवाली

[मंच पर प्रकाश फैलता है । एक कमरे का दृश्य। गुब्बारों और सजावट के सामान से सजा हुआ। खाली मेज लगी हुई है । दूसरी ओर संगीत के वाद्‌ययंत्र पड़े हुए हैं । देवांश का जन्मदिन है । देवांश के पापा और मम्मी का कमरे में प्रवेश । दोनों एक निगाह कमरे की सजावट पर डालते हैं । मिताली ने देवांश की आँखों को अपने हाथों से ढँका हुआ है।]

मिताली : (मंच पर प्रवेश करते हुए) यह रहा तुम्हारा कमरा !

देवांश : हाथ तो हटाओ । (मिताली देवांश की आँखों से हाथ हटा लेती है । देवांश कमरे की सजावट देखकर अपनी खुशी कूद-कूदकर प्रकट करता है ।)

पापा : आज तुम बारह साल के हो रहे हो... आज खूब मजे करो !

मम्मी : तुम्हारे सब दोस्त कहाँ रह गए?

मिताली : (कमरे के दरवाजे की ओर देखते हुए) हाय ! नीलेश, आओ ।

देवांश : बड़ी देर कर दी, बाकी सब कहाँ हैं? (तभी एक के बाद एक दोस्तों का प्रवेश । सभी के हाथ में कोई-न-कोई उपहार है । देवांश उन सबका परिचय अपने मम्मी, पापा और मिताली से करवाता है ।)

नीलेश : यह अनमोल, यह रहा सनी सरदार ! (तीनों थोड़ा-सा झूमते हुए गाते हैं और एक-दूसरे के गले मिलते

❑ ''चलो, मत रुको । चलो मत, रुको'' इसी प्रकार के अन्य वाक्य श्यामपट्ट पर लिखें । उनमें विराम चिह्नों का उपयोग करें । नए विराम चिह्नों (बड़ा कोष्ठक '[]', छोटा कोष्ठक '()', '- ' योजक चिह्न,' –' निर्देशक चिह्न) का प्रयोग समझाएँ ।

जरा सोचो तो ... बताओ

यदि तुम अपने गाँव का मुखिया बन जाओ तो .....

हैं । इतने में चार-पाँच दोस्त और आ जाते हैं । यानी एक उत्सव का-सा माहौल बन जाता है ।)

देवांश : मानस नहीं आया ?

नीलेश : लगता है, अभी भी तुमसे नाराज है ।

पापा : नाराज क्यों ?

मम्मी : की होगी कोई शरारत, उसे आना चाहिए, बड़ा प्यारा बच्चा है !

(तभी मानस का प्रवेश । उसके हाथ में एक छोटा-सा गमला है, जिसमें गुलमोहर का पौधा लगा हुआ है । 'देवांश' कहते हुए गमला उसके हाथ में दे देता है ।)

मानस : तुम्हारे जन्मदिन का गिफ्ट है, इसे आज ही घर में या घर के पास कहीं भी रोप देना । बड़ी जल्दी बढ़ता है गुलमोहर । (देवांश सहित सभी दोस्त हैरान-से हैं कि मानस जन्मदिन पर यह कैसा उपहार लाया है ।)

नीलेश : मैं कह रहा था न, मानस तुझसे नाराज है । अरे, जन्मदिन पर कोई गमला लाता है ?

मानस : (रुआँसा-सा) देवांश तुझे अच्छा नहीं लगा तो मैं चला जाता हूँ । (गमला उठाकर जाने लगता है ।)

पापा : मानस ! रुको, तुम वापस नहीं जाओगे ! (मानस रुक जाता है ।) अच्छा यह बताओ कि यह कल्पना तुम्हें किसने दी ?

मानस : अंकल, मेरी मम्मी ने, मेरी मम्मी कॉलेज में पढ़ाती हैं, मेरी मम्मी कहती हैं, जैसे हमें ऑक्सीजन, पानी की आवश्यकता होती है वैसे ही आज हमें सबसे ज्यादा जरूरत पेड़ों की है... पेड़ लगाओ ।

पापा : मैं भी यही कहता हूँ, क्यों देवयानी ?

मम्मी : हाँ, मैं भी यही कहती हूँ !

पापा : मिताली, वो हारमोनियम इधर लाना तो । (मिताली हारमोनियम लाकर पापा को देती है ।)

(घर का काम करने वाली बिमला का प्रवेश)

मम्मी : कहाँ रह गई थी ? मैंने कहा था, जल्दी आना शाम को ।

बिमला : क्या करती बीबी जी, वो है न बाबा, उसने फिर वही चीज छोड़ दी... घर में आ गई चीज । (पापा और बच्चे बड़े ध्यान से बिमला की बात सुन रहे हैं ।)

❑ एकांकी का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । उनके घर आनेवाले मेहमानों के संदर्भ में उनसे उनके अनुभव पूछें । प्रश्नोत्तर के माध्यम से शिष्टाचार संबंधी चर्चा करें । पात्रानुसार विद्यार्थी खड़े करके एकांकी का वाचन करवाएँ ।

खोजबीन

ओजोन परत के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करो ।

पापा : चीज, क्या चीज ?

बिमला : बीबी जी सब जानती हैं । (पापा मम्मी की ओर देखते हैं ।)

मम्मी : इसकी अपनी भाषा है बात समझाने की, कोई आत्मा-वात्मा, भूत-प्रेत का चक्कर है !

पापा : अरे, किन चक्करों में पड़ी हो ! यह सब अपने मन का डर होता है, जिसका फायदा ये ढोंगी लोग उठाते हैं... हम तो यहाँ नई रीत की बात कर रहे हैं और तुम लोग पड़े हो पुराने जमाने में ! तुम्हें कैसे नजर आ गई वह चीज ? (बिमला मुँह बिचकाकर रसोई में जाने लगती है ।)

पापा : रुको ।

मम्मी : काम करने दो उसे ।

पापा : नहीं, इसे भी सुनने दो, बैठो ! (बिमला एक ओर बैठ जाती है ।)

पापा : हाँ, मैं कह रहा था, नई रीत, चीज-वीज छोड़ो, बैठो और सुनो । हाँ, उपहार देने की यह 'नई रीत' हो गई । तुम सभी अभी खूब-खूब नाचना, खूब-खूब मजे करना, लेकिन पहले सब मिलकर नई रीत बनाते हैं... मिताली, देवयानी, देवांश और सब बच्चो, ध्यान से सुनना और मेरा साथ देना । (हारमोनियम पर धुन छेड़ते हैं । आलाप लेते हैं और फिर गाने लगते हैं ।)

सभी बच्चे : चलो, नई रीत चलाएँ ।

पापा : आऽऽऽऽ आऽऽऽऽ चलो नई कोई रीत चलाएँ, जन्मदिन जब-जब हो जिसका । बोलो बच्चो

बच्चे : जन्मदिन जब-जब हो जिसका

पापा : आस-पास कुछ पेड़ लगाएँ । आऽऽऽऽ आस-पास कुछ पेड़ लगाएँ ।

सभी मिलकर : चलो नई कोई रीत चलाएँ ।

पापा : बस-बस... बस, बहुत हो गया... (बिमला से) बात कुछ आई समझ में ? चलो अब केक काटेंगे ।

मम्मी : अभी केक नहीं । पहले अंत्याक्षरी खेलते हैं... खेलोगे ?

एक बच्चा : मुझे बहुत गाने याद हैं ।

पापा : नो गाने... यहाँ भी नई रीत ।

मम्मी : हाँ, आधे बच्चे इधर और आधे बच्चे उधर । (बच्चे उठकर बँट जाते हैं ।) हाँ, हम खेलेंगे देशों के नाम ।

सब बच्चे : तैयार ।

पापा : भारत ।

नीलेश : तंजानिआ ।

पापा : अनमोल आ से ।

अनमोल : आस्ट्रेलिया ।

मानस : य से या 'या' से ?

मिताली : दोनों में से किसी एक से चलेगा ।

मानस : यूरोप ।

देवांश : पेरिस ।

बिमला : (प्रवेश करते हुए) बीबी जी, हो गया और कुछ... ?

पापा : जल्दी क्या है, तुम्हारी उस चीज को मैंने पकड़ लिया है। (हँसने लगता है) चलो, अब केक काटते हैं।(केक पर मोमबत्तियाँ लगाकर जलाई जाती हैं। देवांश सभी के साथ मिलकर केक काटता है, सभी को खिलाता है फिर बज उठता है डेक। बच्चों के साथ देवयानी और देवेंद्र भी नाचते हैं।)

मम्मी : चलो बच्चो, अब कुछ पेटपूजा (एक ओर रखे डिब्बे एक-एक करके सभी बच्चों को पकड़ाती जाती हैं। बच्चे खाने और गप्पे लगाने में मस्त हो जाते हैं।)

(प्रकाश कुछ देर के लिए धीमा होता है। हलका-सा मधुर संगीत बजता रहता है। कुछ क्षणों बाद ही प्रकाश तेज होता है।)

पापा : आज मानस ने एक पौधा गिफ्ट करके नई रीत चलाई है। हमने भी सोच रखा था कि कुछ अलग करेंगे। आज उपहार में सभी को एक-एक किताब... देवांश।

(देवांश जल्दी से किताबें उठाकर लाता है। मिताली भी साथ देती है। देवांश एक-एक करके सभी बच्चों को उपहार के पैकेट पकड़ाना शुरू करता है। इसी के साथ प्रकाश धीरे-धीरे मंद होता है और 'चलो नई कोई रीत चलाएँ' गीत बजने लगता है।) (पटाक्षेप)

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

रीत = रीति, प्रथा

माहौल = वातावरण

हैरान = परेशान

मुहावरे

मुँह बिचकाना = मुँह टेढ़ा करना

गप्पे लगाना = बातें करना

स्वयं अध्ययन

आए हुए मेहमान के स्वागत हेतु किए जाने वाले अंग्रेजी संबोधनों की जानकारी एकत्रित करो।

अध्ययन कौशल

इस एकांकी को कक्षा में साभिनय प्रस्तुत करो।

सुनो तो जरा

अपरिचित व्यक्ति से मिलने पर किए जाने वाले संवादों को सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

तुम अतिथि बनकर किसके घर जाना चाहते हो ?

वाचन जगत से

स्वागत गीतों को पढ़ो और उनका संकलन करो ...

मेरी कलम से

अपने घर आए अतिथि सत्कार का कोई एक प्रसंग लिखो ।

❊ किसने किससे कहा ।

१. ''बड़ी जल्दी बढ़ता है गुलमोहर ।''
२. ''आज हमें सबसे ज्यादा जरुरत पेड़ों की है ..... पेड़ लगाओ ।''
३. ''यह सब अपने मन का डर होता है ।''
४. ''कोई आत्मा-वात्मा, भूत-प्रेत का चक्कर है ।''

विचार मंथन

।। अतिथि देवो भव ।।

सदैव ध्यान में रखो

किसी के घर जाने से पहले उसे सूचित किया जाना चाहिए ।

भाषा की ओर

संज्ञा के प्रकार पहचानकर तालिका पूर्ण करो ।

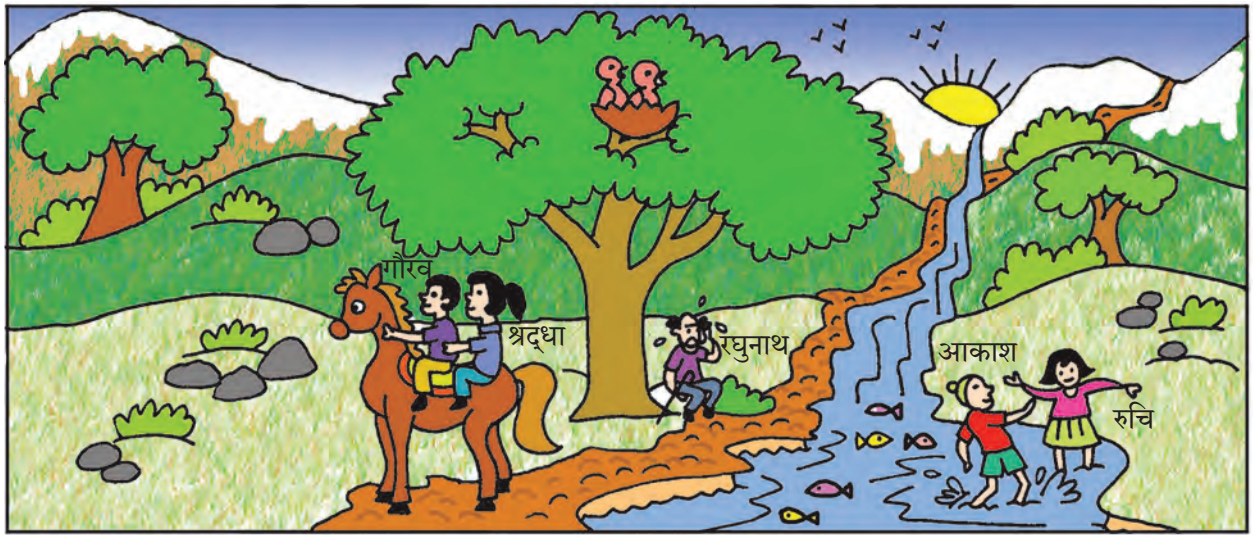

जातिवाचक	व्यक्तिवाचक	भाववाचक	समूहवाचक	द्रव्यवाचक
१.	१.	१.	१.	१.
२.	२.	२.	२.	२.
३.	३.	३.	३.	३.

● **अंतर बताओ :**

५. राजस्थानी

❑ विद्यार्थियों से ऊपर दिए दोनों चित्रों का सूक्ष्म निरीक्षण कराएँ । दोनों चित्रों में उन्हें ज्यादा-से ज्यादा अंतर ढूँढ़कर बताने के लिए कहें । विद्यार्थियों को भारत के अलग-अलग राज्यों की विशेष वेशभूषा और आभूषणों की जानकारी जुटाने के लिए प्रेरित करें ।

● **पढ़ो, समझो और बताओ :**

६. चचा छक्कन ने चित्र टाँगा

- इम्तियाज अली ताज

रचनाएँ : प्रस्तुत कहानी में लेखक ने हास्य के माध्यम से ऐसे व्यक्ति का चित्रण किया है, जो खुद ठीक से काम नहीं करते । 'वे ही सारा काम करते हैं', इसका केवल दिखावा करते हैं ।

*** किसान के दैनिक जीवनचक्र द्वारा कारक चिह्न पहचानकर वाक्य पूर्ण करो : (को, की, से, ने, हे!, पर , को, से)**

चचा छक्कन कभी-कभार कोई काम अपने जिम्मे क्या ले लेते हैं, घर भर को तिनगी का नाच नचा देते हैं । ये कीजो, वो कीजो । घर-बाजार एक हो जाता है । दूर क्यों जाओ, परसों की ही बात है । दुकान से चित्र का अभी चौखटा लगकर आया, उस वक्त तो वह दीवानखाने में रख दिया गया । शाम कहीं चची की नजर उसपर पड़ी तो बोलीं, "छुट्टन के अब्बा, चित्र कबसे रखा हुआ है, देखो बच्चों का घर ठहरा, कहीं टूट-फूट गया तो बैठे-बिठाए रुपये-दो-रुपये का धक्का लग जाएगा । कौन टाँगेगा इसको ?" "टाँगता और कौन ? मैं खुद टाँगूँगा। कौन-सी बड़ी बात है ! मैं अभी सब कुछ खुद ही किए लेता हूँ ।"

कहने के साथ ही शेरवानी उतार, चचा चित्र टाँगने को तैयार हो गए । ईमामी से कहा, "बीवी से दो आने पैसे लेकर कीलें ले आ ।" इधर वो दरवाजे से निकला, उधर मौदे से कहा-"मौदे, मौदे, जाना ईमानी के पीछे, कहो तीन-तीन इंच की हो कीलें । भागकर जा । जा पकड़ लो उसे रास्ते में ही ।" लीजिए, चित्र टाँगने का काम शुरू हो गया । अब आई घर भर की शामत ।

नन्हे को पुकारा-"ओ नन्हे ! जाना जरा हथौड़ा ले आना । सीढ़ी की जरूरत भी तो होगी हमको ।" "अरे भाई, लल्लू ! जरा तुम जाकर किसी से कह देते । सीढ़ी यहाँ लाकर लगा दें । और हाँ ! देखना वो लकड़ी के तख्तेवाली कुर्सी भी लेते आते तो खूब होता ।" "छुट्टन बेटे !

❑ कहानी में आए कारक शब्दों को (को, की, से, ने, हे!, पर, से, में, के) शामपट्ट पर लिखें । कारक को सरल प्रयोग द्वारा समझाएँ । उपरोक्त कृति करवाने के पश्चात विद्यार्थियों से इस प्रकार के अन्य वाक्य पाठ में से लिखवाएँ । दृढ़ीकरण होने तक अभ्यास करवाएँ ।

खोजबीन

प्रतिबंधित दवाइयों के नाम खोजकर लिखो ।

चाय पी ली तुमने? जरा जाना तो अपने उन हम साए मीरबाकर अली के घर कहना अब्बा ने सलाम कहा है और पूछा है आपकी टाँग अब कैसी है? और कहियो वो जो है ना आपके पास, क्या नाम है उसका? ऐ लो भूल गया । पलूल था कि टलूल, न जाने क्या था? खैर वो कुछ भी था, तो यूँ कह दीजौ कि वो जो आपके पास आला है ना जिससे सीध मालूम होती है वो जरा दे दीजिए, चित्र टाँगना है । जाइयो मेरे बेटे, पर देखना सलाम जरूर करना और टाँग का पूछना न भूल जाना । अच्छा ..... ।''

''हे! ठहरे रहो । सीढ़ी पर रोशनी कौन दिखाएगा हमको? आ गया ईमामी? ले आया कीलें? मौदा मिल गया था? तीन-तीन इंच ही की है ना? बस बहुत ठीक है । ये लो सुतली मँगवाने का तो ध्यान ही नहीं रहा? अब क्या करूँ? जाना मेरे भाई जल्दी से हवा की तरह जा और देखो बस गज सवा गज हो सुतली, न बहुत मोटी हो न पतली । कह देना चित्र टाँगने के लिए चाहिए । ले आ! दद्दू मियाँ इसी वक्त सबको अपने-अपने काम की सूझी है, यूँ नहीं कि आकर जरा हाथ बँटाएँ ।''

लीजिए साहब, जैसे-तैसे चित्र टाँगने का समय आया । मगर जो होना था वही हुआ । चचा उस चित्र को उठाकर जरा वजन कर ही रहे थे कि हाथ से छूट गया । गिरकर शीशा चूर-चूर हो गया । हाय-हाय कहकर सब एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे । चचा ने अब किरंचों को उठाना चाहा कि शीशा उँगली में चुभ गया, खून की धार बहने लगी, सब चित्र को भूल अपना रूमाल ढूँढ़ने लगे। रूमाल कहाँ से मिलेगा? रूमाल था शेरवानी की जेब में, शेरवानी उतारकर न जाने कहाँ रखी थी? अब जनाब घर भर ने चित्र टाँगने का सामान ताक पर रखा और शेरवानी की ढुँढ़ाई होने लगी । चचा कमरे में नाचते फिर रहे हैं । कभी इससे टकराते कभी उससे । ''सारे घर में से किसी को इतना खयाल नहीं कि मेरी तो शेरवानी ढूँढ़ निकाले और क्या, झूठ कहता हूँ कुछ? छह-छह आदमी हैं और एक शेरवानी नहीं ढूँढ़ सकते । अभी पाँच मिनट भी तो नहीं हुए, मैंने उतारकर रखी है भई?''

❑ इस हास्य कहानी का उचित आरोह-अवरोह एवं विराम चिह्नों सहित विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । विद्यार्थियों को कथाकथन पद्धति से व्यंग्य रचना सुनाएँ। पाठ का व्यंग्य विद्यार्थियों से प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहलवाएँ ।

स्वयं अध्ययन

स्वावलंबन का निर्वाह करते हुए किसी काम को करने से पूर्व कौन-कौन-सी तैयारियाँ करनी चाहिए , बताओ ।

छक्कन मियाँ बड़बड़ा उठे ।

इतने में चचा किसी जगह से बैठे-बैठे उठते हैं और देखते हैं कि शेरवानी पर ही बैठे हुए थे । अब पुकार-पुकार कर कह रहे हैं, ''अरे भाई! रहने देना, शेरवानी ढूँढ़ ली हमने, तुमको तो आँखों के सामने बैल भी खड़ा हो तो नजर नहीं आता ।'' आधे घंटे तक उँगली बँधती-बँधाती रही । नया शीशा मँगवाकर चौखटे में जड़ा और दो घंटे बाद फिर चित्र टाँगने का सिलसिला शुरू हुआ । औजार आए । सीढ़ी आई । चौकी आई । मोमबत्ती लाई गई । चचाजान सीढ़ी पर चढ़ रहे हैं और सारा घर अर्धवृत्ताकार की सूरत में सहायता करने को कील-काँटे से लैस खड़ा है । दो आदमियों ने सीढ़ी पकड़ी तो चचाजान ने उस पर कदम रखा । ऊपर पहुँचे, एक ने कुर्सी पर चढ़कर कीलें बढ़ाई, एक कील ले ली, दूसरे ने हथौड़ा ऊपर पहुँचाया कि कील हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ी । खिसियानी आवाज में बोले-''ऐ लो ! अब ये कील हाथ से छूटकर गिर पड़ी । देखना कहाँ गई?''

अब जनाब सबके सब घुटनों के बल टटोल-टटोल कर कील तलाश कर रहे हैं और चचा मियाँ सीढ़ी पर खड़े लगातार बड़बड़ा रहे हैं । ''मिली? अरे ढूँढ़ा? अब तक तो मैं सौ बार तलाश कर लेता । अब मैं रात भर सीढ़ी पर खड़ा-खड़ा सूख जाऊँगा । नहीं मिलती तो दूसरी ही दे दो । अंधों !'' यह सुनकर सबकी जान में जान आती है । तभी पहली कील मिल जाती है ।

अब कील चचाजान के हाथ में पहुँचाते हैं, तो मालूम पड़ा कि हथौड़ा गायब हो चुका है। ''यह हथौड़ा कहाँ चला गया?'' कहाँ रखा था मैंने? उल्लू की तरह आँखें फाड़े मेरा मुँह क्या ताक रहे हो ? छह आदमी और किसी को मालूम नहीं कि हथौड़ा मैंने कहाँ रख दिया?'' अब हथौड़ा मिला तो चचा ये भूल बैठे कि नापने के बाद कील गाड़ने को दीवार पर निशान किस जगह लगाया था । सब बारी-बारी कुर्सी पर चढ़कर कोशिश कर रहे हैं कि शायद निशान नजर आ जाए । हर एक को अलग-अलग जगह निशान दिखाई देता है । आखिर फिर पटरी ली और कोने से चित्र टाँगने की जगह को दुबारा नापना शुरू किया । चित्र कोने से पैंतीस इंच के फासले पर लगा हुआ था । ''बारह और बारह और कितने इंच और?'' बच्चों को जबानी हिसाब का सवाल मिला । ऊँची आवाज में सभी ने सवाल हल करना शुरू किया और जवाब निकला तो किसी का कुछ था और किसी का कुछ । एक ने दूसरे को गलत बताया । इसी तू-तू, मैं-मैं में सब भूल बैठे कि असल सवाल क्या था? नए सिरे से नाप लेने की जरूरत पड़ गई । चचा ने अब सुतली से नापने का इरादा बनाया और इस चक्कर में सुतली हाथ से छूट गई और चचा आ गिरे जमीन पर । कोने में सितार रखा था, उसके सारे तार चचाजान के बोझ से एकदम झनझना कर टुकड़े-टुकड़े हो गए ।

बहुत मुश्किलों के बाद चचाजान फिर से कील गाड़ने की जगह तय करते हैं । बाएँ हाथ से उस जगह कील रखते हैं और दाएँ हाथ से हथौड़ा संभालते हैं, पहली ही चोट जो पड़ती है तो सीधी हाथ के अँगूठे पर । चचा सीऽऽ सीऽऽ ... करके हथौड़ा छोड़ देते हैं, वह नीचे आ कर गिरता है किसी के पाँव पर । 'हाय-हाय ! उफ ओऽऽ' और 'मार डाला' शुरू हो जाती है ।

अब नए सिरे से कोशिश शुरू हुई । कील और आधा हथौड़ा दीवार में और चचा अचानक कील गड़ जाने से इतनी जोर से दीवार से टकराए कि नाक ही पिचक कर रह गई । कोई आधी रात का वक्त होगा, जैसे तैसे चित्र टँगा । वो भी कैसा? टेढ़ा-मेढ़ा और इतना झुका हुआ कि अब गिरा कि

जरा सोचो तो ... बताओ

यदि डॉक्टर न होते तो ....

तब गिरा । चचा के सिवा बाकी सब थकान से चूर नींद में झूम रहे हैं । चचा धम्म से उतरते हैं तो कहारी गरीब के पाँव पर पाँव । वो तड़प कर चीख उठी । उसकी चीख से चचा परेशान तो हुए मगर दाढ़ी पर हाथ फेर कर बोले ''इतनी सी बात थी, लो चित्र भी लग गया, इस काम के लिए लोग मिस्तरी बुलवाया करते हैं ।''

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

दीवानखाना = बैठक का कमरा

आला = सीध नापने का यंत्र

किरच = काँच का नुकीला टुकड़ा

मुहावरे

नाच नचाना = अपने ढंग से काम कराना

शामत आना = बुरा समय आना

हाथ बँटाना = सहायता करना

तू-तू, मैं-मैं करना = बहस करना

सदैव ध्यान में रखो

समय के पालन से जीवन में अनुशासन आता है ।

अध्ययन कौशल

चचा ने किस-किस-से क्या सहायता ली, सूची बनाओ ।

विचार मंथन

।। हास्य उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक ।।

सुनो तो जरा

रेडियो/दूरदर्शन से हास्य कवि सम्मेलन सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

कुछ घरेलू औजारों के नाम बताओ ।

वाचन जगत से

हास्य की अन्य कहानी पढ़ो ।

मेरी कलम से

आला, कील और हथौड़ा का उपयोग किस-किस के लिए किया जाता है, लिखो ।

❊ दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो ।

१. घरभर की शामत क्यों आई ?
२. घर के सभी लोग चचा की शेरवानी कब ढूँढ़ने लगे ?
३. दीवार पर निशान ढूँढ़ने का प्रयास किस प्रकार किया गया ?
४. चित्र टँगने के बाद का दृश्य कैसा था ?
५. चचा छक्कन के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखो ।

भाषा की ओर

चित्र देखो और लिंग तथा वचन बदलकर उचित स्थान पर लिखो ।

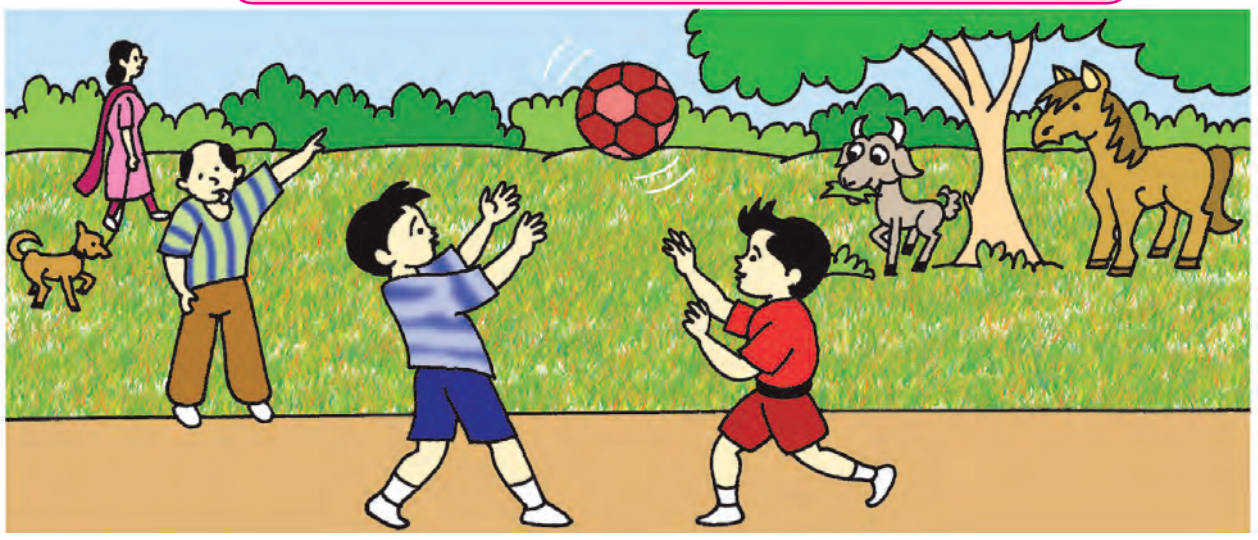

जैसे–

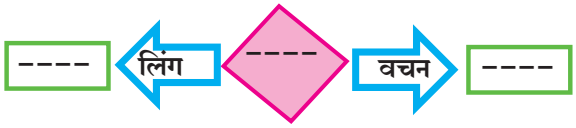

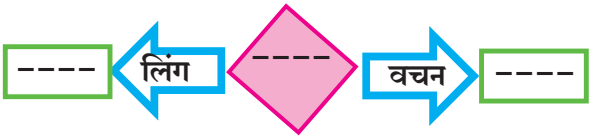

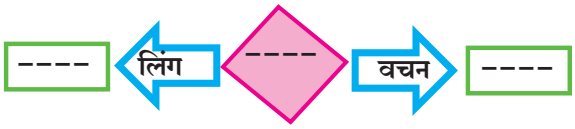

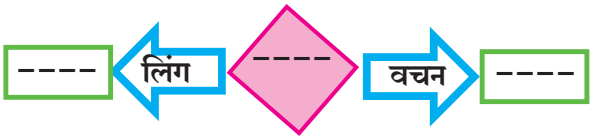

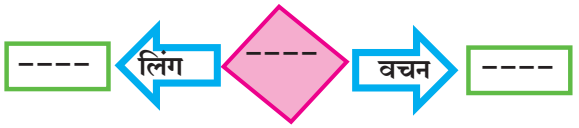

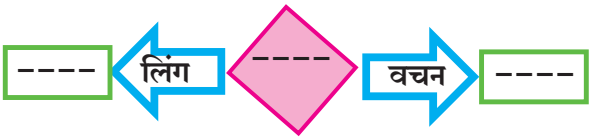

● देखो,पढ़ो और समझो :

७. आए कहाँ से अक्षर?

❑ विद्यार्थियों से इस चित्रकथा का वाचन कराएँ । संवाद के आशय से संबंधित कथा प्रश्नोत्तर द्वारा समझाएँ । विद्यार्थियों में कथा के पात्रों का विभाजन कर संवाद की प्रस्तुति कराएँ ।

(सभी बच्चों ने-खुश होकर तालियाँ बजाईं और संगणक कक्ष की ओर दौड़ पड़े।)

● सुनो, समझो और दोहराओ :

८. इनसे सीखो

–श्रीनाथ सिंह

जन्म : १९०१ **मृत्यु :** १९९६ **रचनाएँ :** नानी की संदूक, मक्खी की निगाह, शिशु, बालसखा आदि... **परिचय:** आपने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन किया है । दीदी और बालबोध जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन किया है ।

इस कविता में यह बताया है कि प्रकृति में पाई जाने वाली प्रत्येक वस्तु से कुछ-न-कुछ सीख मिलती है, जिसे ग्रहण करना आवश्यक है।

अध्ययन कौशल

मधुमक्खी, कुत्ता, चींटी, गौरैया के चित्र बनाओ, इनमें से किसी एक पर चार काव्य पंक्तियाँ तैयार करो।

फूलों से नित हँसना सीखो, भौंरों से नित गाना ।

फल से लदी डालियों से, नित सीखो शीश झुकाना ।

सीख हवा के झोंकों से लो, कोमल भाव बहाना ।

दूध तथा पानी से सीखो, मिलना और मिलाना ।

सूरज की किरणों से सीखो, जगना और जगाना ।

लता और पेड़ों से सीखो, सबको गले लगाना ।

❑ कविता का लय-ताल हाव भाव सहित सस्वर पाठ कराएँ एवं दोहरवाएँ । कविता एकल, गुट में तथा सामूहिक गवाएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता का आशय समझाएँ । प्रकृति के प्रत्येक घटक से कुछ-न-कुछ सीखने के भाव जागृत कराएँ ।

जरा सोचो तो ... लिखो

यदि रात ही न होती तो .....

वर्षा की बूँदों से सीखो, सबका हृदय जुड़ाना ।

मेहँदी से सीखो पिसकर भी, अपना रंग चढ़ाना ।

दीपक से सीखो, जितना हो सके अँधेरा हरना ।

पृथ्वी से सीखो, प्राणी की सच्ची सेवा करना ।

जलधारा से सीखो, आगे जीवन पथ में बढ़ना ।

और धुएँ से सीखो बच्चो, ऊँचे ही पर चढ़ना ।

सत्पुरुष के जीवन से, सीखो चरित्र निज गढ़ना ।

अपने गुरु से सीखो बच्चो, उत्तम विद्या पढ़ना ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

नित = नित्य, सदा
शीश = सिर
सत्पुरुष = सज्जन
निज = अपना
गढ़ना = बनाना

मुहावरे

शीश झुकाना = विनम्र होना

स्वयं अध्ययन

हवा, पानी, सूर्य की ऊर्जा से चलने वाले उपकरणों की जानकारी इकट्ठा करो और लिखो ।

विचार मंथन

।। करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान ।।

सुनो तो जरा

चुटकुले, पहेलियाँ सुनो और किसी कार्यक्रम में सुनाओ ।

बताओ तो सही

अगर सारी दुनिया का कार्य सिर्फ दस मिनट के लिए थम जाए तो क्या होगा ?

वाचन जगत से

सूरदास का कोई एक पद पढ़ो और गाओ ।

मेरी कलम से

'दीपक' से संबंधित कविता लिखो ।

❊ कविता की निम्न पंक्तियों का सरल अर्थ लिखो ।

१. फल से लदी डालियों से, नित सीखो शीश झुकाना ।

२. पृथ्वी से सीखो, प्राणी की सच्ची सेवा करना ।

३. लता और पेड़ों से सीखो, सबको गले लगाना ।

४. अपने गुरु से सीखो बच्चो, उत्तम विद्या पढ़ना ।

खोजबीन

इंद्रधनुष कैसे बनता है? जानो और चित्र बनाओ ।

सदैव ध्यान में रखो

दूसरों के काम आना ही सच्ची मानवता है ।

भाषा की ओर

चित्रों को देखकर नीचे दिए गए संवाद में उचित विराम चिह्न लगाओ ।

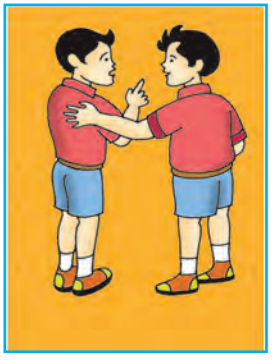

१) राजेश ☐ क्या तुम मेरी सहायता करोगे ☐

२) क्यों नहीं ☐ अरे ☐ तुम मेरे मित्र हो ☐

३) हाँ ☐ मुझे पता है ☐ परंतु तुम्हारा प्रकल्प कार्य भी तो तुम्हें पूरा करना है ☐

४) ☐ जहाँ चाह वहाँ राह ☐ आज ही तो हमने पढ़ा ☐

५) माँ भी कहती हैं ☐ नियमित अभ्यास से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है ☐

६) गुरुजी ☐ हमें परीक्षा के परिणाम कब मिलने वाले हैं ☐

● पढ़ो, समझो और चर्चा करो:

१. अस्तित्व अपना-अपना

प्रस्तुत कहानी में यह दर्शाया है कि प्रत्येक के अस्तित्व की महत्ता होती है । अत: अपनी तुलना दूसरों से करने की अपेक्षा अपनी योग्यता पर विश्वास रखें ।

⁎ चित्र के आधार पर वाक्य बनाओ :

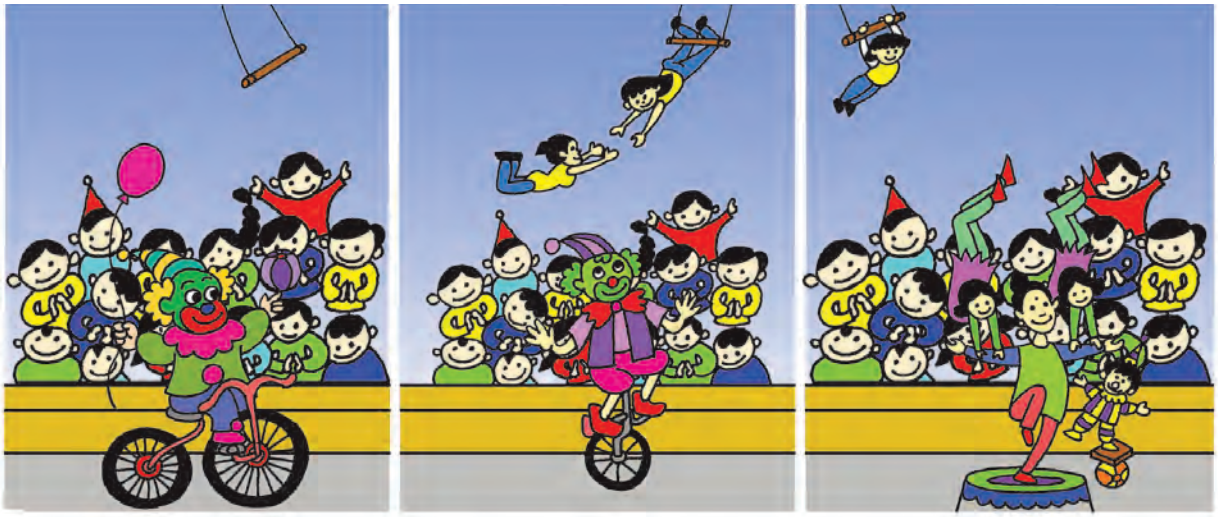

अपनी चोंच को देखकर आज सुबह से ही पट्टू तोता बड़ा उदास बैठा था । उदासी का कारण पूछने पर पट्टू तोते ने माँ से अपनी अटपटी चोंच के बारे में बताया ।

माँ कुछ देर के लिए शांति से बैठ गईं, उन्हें भी लगा कि शायद पट्टू सही कह रहा है । पट्टू को समझाएँ तो कैसे? तभी उन्हें सूझा कि क्यों न पट्टू को ज्ञानी काका के पास भेजा जाए जो पूरे जंगल में सबसे समझदार तोते के रूप में जाने जाते हैं । माँ ने तुरंत ही पट्टू को ज्ञानी काका के पास भेज दिया ।

ज्ञानी काका जंगल के बीचोंबीच एक बहुत पुराने पेड़ की शाखा पर रहते थे । वहाँ पहुँचकर पट्टू तोते ने देखा कि सारे पेड़-पौधे मुरझाए हुए हैं । पट्टू बहुत चिंतित हुआ । उसने इसकी वजह जानने के लिए सभी पेड़-पौधों से पूछा । ओक वृक्ष ने कहा, ''मैं परेशान हूँ क्योंकि मैं देवदार जितना लंबा नहीं हूँ ।'' पट्टू ने देवदार

❑ विद्यार्थियों से चित्रों के आधार पर प्रश्न पूछें । रचना के आधार पर वाक्य बनाने की प्रक्रिया और वाक्यों के प्रकार (सरल, संयुक्त, मिश्रवाक्य) उदाहरण सहित समझाएँ । कहानी से इस प्रकार के वाक्य ढूँढ़कर लिखवाएँ तथा दृढ़ीकरण होने तक अभ्यास कराएँ ।

सदैव ध्यान में रखो

हर-एक को अपने कार्य स्वयं करने चाहिए ।

की ओर देखा तो उसके कंधे भी झुके हुए थे । पूछने पर उसने कहा, ''मैं अंगूर लता की भाँति फल नहीं दे सकता हूँ ।'' अंगूर लता इसलिए चिंतित थी कि वह गुलाब की तरह खिल नहीं सकती है ।

यह सब देखकर पट्टू तोता परेशान हुआ और ज्ञानी काका के समक्ष जाकर बैठ गया । अपनी परेशानी व्यक्त करते हुए बोला,''काका, मेरी भी एक समस्या है।'' ''प्यारे बच्चे, तुम्हें क्या दिक्कत है, बताओ

मुझे'' काका बोले । पट्टू बताने लगा, ''मुझे मेरी चोंच पसंद नहीं है, यह कितनी अटपटी-सी लगती है । बिलकुल भी अच्छी नहीं लगती । मेरे दोस्त बिरजू बाज, कालू कौआ, कल्कि कोयल सभी की चोंच कितनी सुंदर है !'' काका बोले, ''सो तो है, उनकी चोंचें तो अच्छी हैं । तुम यह बताओ कि क्या तुम्हें खाने में केंचुएँ और कीड़े-मकौड़े पसंद हैं?'' ''छी ! ऐसी बेकार चीजें तो मैं कभी न खाऊँ ।'' पट्टू ने झट से जवाब दिया । ''अच्छा छोड़ो, क्या तुम्हें मछलियाँ खिलाईं जाएँ?'' काका ने पूछा ''या फिर तुम्हें खरगोश और चूहे परोसे जाएँ ?''

''काका, कैसी बातें कर रहे हैं आप? मैं एक तोता हूँ । मैं ये सब खाने के लिए नहीं बना हूँ ।'' पट्टू नाराज होते हुए बोला ।

''बिलकुल सही'' काका बोले, ''यही तो मैं तुम्हें समझाना चाहता हूँ । ईश्वर ने तुम्हें कुछ अलग तरीके से बनाया है । जो तुम पसंद करते हो, वह तुम्हारे दोस्तों को पसंद नहीं आएगा और जो तुम्हारे दोस्त पसंद करते हैं वह तुम्हें नहीं भाएगा । सोचो, अगर तुम्हारी चोंच जैसी है वैसी नहीं होती तो क्या तुम अपने सबसे प्रिय ब्राजीलियन अखरोट खा पाते? अपना जीवन यह सोचने में मत लगाओ कि दूसरों के पास क्या है-क्या नहीं । बस ये जानो कि तुम जिन गुणों के साथ पैदा हुए हो उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग कैसे किया जा सकता है ? उसे अधिक-से-अधिक कैसे विकसित किया जा सकता है ?''

कुछ देर बाद ज्ञानी काका पट्टू तोते को लेकर

एक पेड़ के पास गए जो निश्चिंत था, खिला हुआ था और ताजगी से नहाया हुआ था । पट्टू ने विस्मित होकर उससे पूछा ''बड़ी अजीब बात है । मैंने पूरे बाग में घूम

❑ कहानी का आदर्श वाचन करें । इस कहानी को संवाद रूप में प्रस्तुत करने के लिए कहें । कहानी के पात्रों के संदर्भ में चर्चा करें । विद्यार्थियों को कहानी का कौन-सा पात्र अच्छा लगता है और क्यों, पूछें । कहानी से कौन-सी सीख मिली उनके शब्दों में कहलवाएँ ।

कर देखा कि एक से बढ़कर एक ताकतवर और बड़े पेड़ दुखी हैं लेकिन तुम इतने प्रसन्न नजर आ रहे हो, यह कैसे संभव हुआ ?''

पेड़ मुस्कुराते हुए बोला, ''मित्र, बाकी पेड़ अपनी विशेषता देखने की बजाय स्वयं की दूसरों से तुलना कर दुखी हैं। मैं यह मानता हूँ कि मुझे यहाँ इस बाग में रोपित कराया गया तब यही अपेक्षित होगा कि मैं अपने गुणों से इस बगीचे को सुंदर बनाऊँ। मैं किसी और की तरह बनने की बजाय अपनी क्षमता के अनुसार श्रेष्ठतम बनने का प्रयास करता हूँ। हमेशा प्रसन्न रहता हूँ।'' अंत में ज्ञानी काका ने पट्टू तोते को प्रेम से समझाया, ''हम सभी में कुछ ऐसे गुण हैं, जो अन्य लोगों में नहीं है। जरूरत है तो सिर्फ उन्हें पहचानने की और उन गुणों को और विकसित कर अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने की। यदि हम विश्वास कर लें कि हम सफल हो सकते हैं, तो इससे दूसरे भी हम पर विश्वास करने लगते हैं। इन्सान की सबसे बड़ी कमजोरी खुद को दूसरों से कम आँकने की होती है। हमें अपनी कमियाँ पता होना अच्छी बात है। इनसे हमें पता चलता है कि हमें किस क्षेत्र में सुधार करना है।

हमेशा अपने गुणों, अपनी योग्यताओं पर ध्यान केंद्रित करें। यह जान लो तुम जितना अपने आपको जानते हो तुम उससे कहीं बेहतर हो। बड़ी सफलता उन्हीं लोगों का दरवाजा खटखटाती है जो लगातार खुद के सामने ऊँचे लक्ष्य रखते हैं। अपनी कार्यक्षमता सुधारना चाहते हैं।'' यह सुनकर पट्टू तोता आत्मविश्वास से झूम उठा और उसने गर्व से अपनी चोंच को देखा। तभी सुंदर हवा बहने लगी और उसने सभी को प्यार से सहलाया। सभी की आँखों में आत्मविश्वास की चमक दिखाई दी।

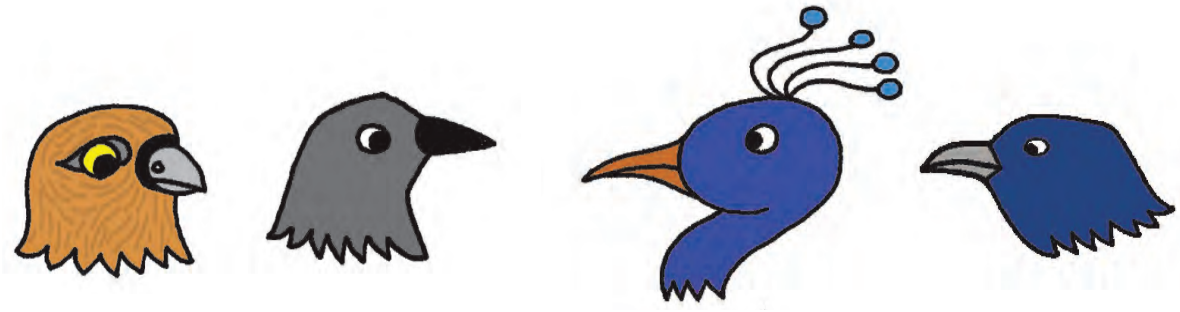

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

अटपटी = विचित्र

दिक्कत = कठिनाई, परेशानी

सहलाना = हाथ फेरना

स्वयं अध्ययन

औषधीय वनस्पतियों की जानकारी प्राप्त कर उनके उपयोग लिखो।

अध्ययन कौशल

'पर्यावरण बचाओ' संबंधी घोषवाक्य बनाओ और उसे चार्ट पर लिखकर प्रदर्शित करो।

खोजबीन

बया चिड़िया अपना घोंसला कैसे बनाती है, खोजो और चित्र कॉपी में बनाओ ।

सुनो तो जरा

किसी व्यंजन को बनाने की विधि सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

संतुलित आहार का महत्त्व बताओ ।

वाचन जगत से

प्रेमचंद की कोई एक कहानी पढ़ो और उसके प्रमुख मुद्दों पर मित्रों से चर्चा करो ।

मेरी कलम से

अपने किसी प्रिय व्यक्ति से संबंधित चार वाक्य लिखो ।

❊ सही पर्याय चुनकर वाक्य फिरसे लिखो ।

१. पट्टू तोते ने माँ से अपनी ..... चोंच के बारे में बताया ।
[रंगीन, टेढ़ी-मेढ़ी, अटपटी, छोटी]

२. यह सब देखकर पट्टू तोता बड़ा ..... हुआ ।
[आनंदित, खुश, चिंतित, परेशान]

३. अच्छा छोड़ो, क्या तुम्हें ..... खिलाईं जाएँ ?
[रोटियाँ, फलियाँ, मछलियाँ, मक्खियाँ]

४. हमें अपनी ..... पता होनी चाहिए ।
[विशेषताएँ, मान्यताएँ, कमियाँ, अच्छाइयाँ]

जरा सोचो तो ... बताओ

भारत की सभी नदियों को जोड़ दें तो .....

विचार मंथन

।। रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून ।।

भाषा की ओर

कोष्ठक में दिए गए सर्वनामों को बुलबुलों में लिखो, उसके आधार पर सर्वनाम के भेदों को दी गई रेखाओं पर लिखो ।
(मैं,तू, आप, यह, वह, सो, जो, कौन, क्या, कोई, कुछ, अपने-आप)

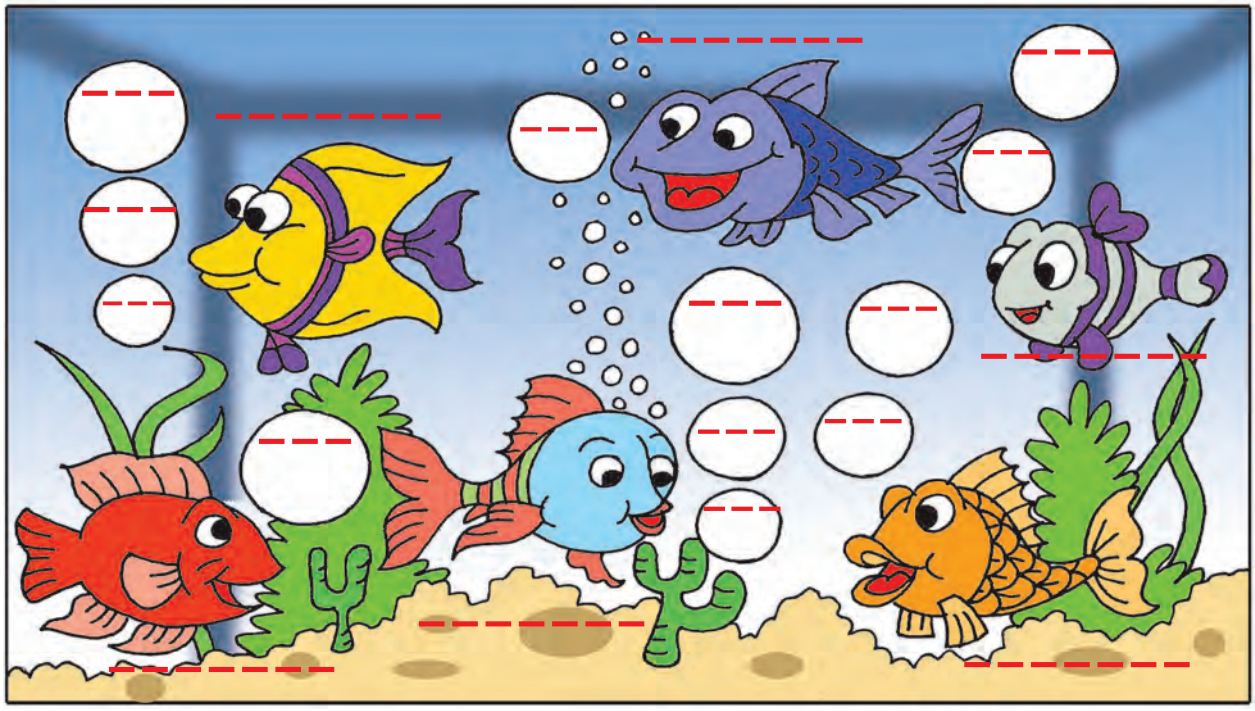

● **पढ़ो समझो और कृति करो :**

१०. आसन

हमारे घरों में अलग-अलग अवसरों में जमीन पर बैठने के लिए विविध प्रकार के आसन उपयोग में लाए जाते हैं ।

आओ, आज हम अपने हाथों से ही सुंदर, आकर्षक आसन बनाते हैं । घर की पुरानी वस्तुओं से आसन बनाना सीखेंगे ।

सामग्री – पुराना जाजम, चादर अथवा दरी का टुकड़ा, रंगीन कपड़े की चौड़ी कतरनें, फुँदनोंवाली लेस, कैंची, मोटी सुई और मोटा रंगीन धागा ।

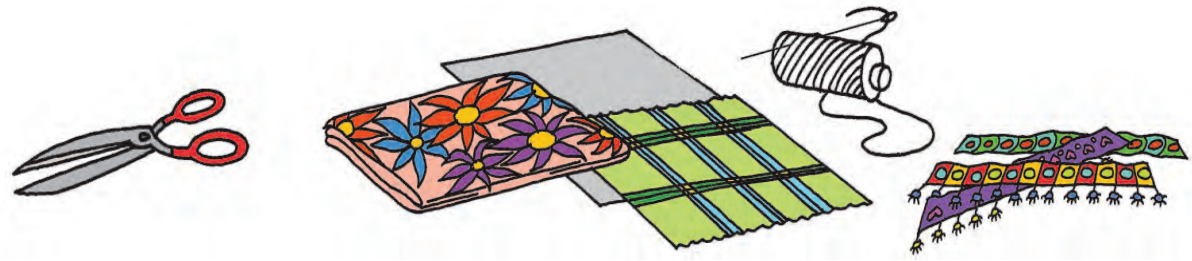

कृति – पुरानी दरी/जाजम, चादर का ६० सेंमी × ६० सेंमी का वर्गाकार टुकड़ा काटो ।

रंगीन कपड़े की ६२ सेंमी लंबी और ४ सेंमी चौड़ी ४ कतरनें काटो । सुई में धागा पिरो लो । आसन के चारों ओर कतरनें सिलो । एक ओर २ सेंमी ही कतरन सिलो ।

अब चारों कतरनों को आसन की दूसरी ओर मोड़कर फिर से सिलो । (इससे दरी के धागे अलग नहीं हो पाएँगे ।) आसन की एक तरफ चारों ओर से फुँदनोंवाली आकर्षक लेस सिलो ।

देखो ! बन गया हमारा आसन । पुरानी वस्तुओं से नई वस्तुएँ बनाना भी कितना आनंददायी और उपयुक्त होता है ।

❑ इस कृति का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । आसन बनाने की विधि पर चर्चा करें । यह कृति कराने से दो दिन पहले ही विद्यार्थियों को सामग्री लाने की सूचना दें । कक्षा में अपने समक्ष विद्यार्थियों से आसन बनाने की कृति कराएँ ।

● सुनो, समझो और लिखो :

११ सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा

प्रस्तुत निबंध में सार्वजनिक एवं राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा में नागरिकों की भूमिका के प्रति उनमें चेतना जागृत की गई है ।

* चित्रों को देखकर दर्पण में दिए गए मुहावरों/कहावतों को पढ़ो तथा नीचे दी गई चौखट में लिखो ।

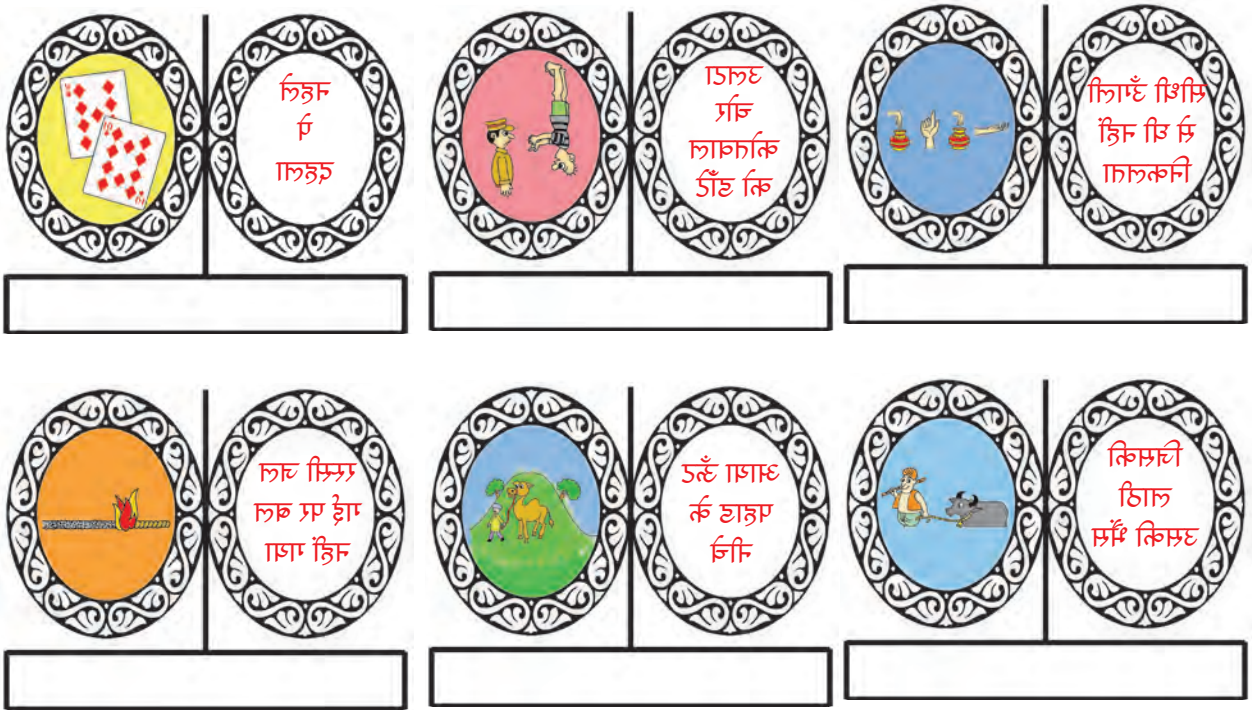

संपत्ति चाहे व्यक्तिगत हो या सार्वजनिक, वह मूल्यवान ही होती है । एक गरीब की घासफूस की कुटिया उसके लिए उतनी ही मूल्यवान होती है जितनी किसी धनी व्यक्ति के लिए उसकी हवेली । रही बात सार्वजनिक संपत्ति की तो, वह तो सार्वजनिक है, सभी की है, समूचे राष्ट्र की है । उसकी देखभाल की जिम्मेदारी मेरी, तुम्हारी या किसी एक व्यक्ति की नहीं अपितु सभी नागरिकों की है । वास्तव में वह हम सभी नागरिकों की इसलिए है क्योंकि हम सभी उसका उपयोग और उपभोग करते हैं । उस संपत्ति का निर्माण ही सारे नागरिकों की सुविधा के लिए किया गया है । ऐसी सार्वजनिक राष्ट्रीय संपत्ति के रख-रखाव के लिए जितने धन की आवश्यकता होती है, वह विविध करों के रूप में सरकार देश के नागरिकों से ही वसूल करती है ।

यह कितनी खेदजनक स्थिति है कि हमारे अधिकांश नागरिक आज भी इस वास्तविकता को गंभीरता से नहीं समझ पाए हैं कि सार्वजनिक संपत्ति भी उतनी ही अनमोल होती है जितनी हमारी व्यक्तिगत संपत्ति । जिस तरह हम अपनी व्यक्तिगत संपत्ति की हानि नहीं सह पाते उसी तरह हमें सार्वजनिक संपत्ति की हानि भी सहन नहीं करनी चाहिए किंतु वास्तविकता इसके बिलकुल विपरीत है । प्राय: देखा यह गया है कि अनुशासनहीनता के कारण अनेक बार कुछ नागरिक प्रशासन या सरकार से अपनी माँगों को मनवाने की जिद में सार्वजनिक संपत्ति का नुकसान कर बैठते हैं । उनकी

❑ ऊपर आए मुहावरों एवं कहावतों पर विद्यार्थियों से चर्चा करें । इनके अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कराएँ । इसी तरह के अन्य कहावतें और मुहावरे पाठ्यपुस्तक के अन्य पाठों से निकालकर संग्रहीत करें ।

आँखों पर स्वार्थ की पट्टी बँधी होती है । अपने लाभ को देख पाने की जबरदस्त लालसा के आगे उन्हें यह दिखाई ही नहीं देता कि वे स्वयं ही अपने हाथों अपनी संपत्ति को हानि पहुँचा रहे हैं । इस हानि का खामियाजा न केवल उन्हें बल्कि अन्य नागरिकों को भी भुगतना पड़ेगा ।

किसी भी राष्ट्र में सार्वजनिक संपत्ति देश के नागरिकों को अधिक-से-अधिक सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से ही निर्मित की जाती हैं । जैसे- देश में रेल सुविधा, बस सुविधा, हवाई सुविधा, नगरों में खुली जगहों पर बनाए गए उद्यान, खेल के मैदान, स्टेडियम इत्यादि सभी सार्वजनिक संपत्ति के ही उदाहरण हैं । अब यदि स्वार्थ और क्रोध के अंधेपन में कुछ नागरिकों ने रेल- यातायात को खंडित किया, बसों के आवागमन पर रोक लगाई अथवा उद्यानों को उजाड़ा तो इन सारी गैरजिम्मेदाराना हरकतों से कितने लोगों की सुविधाएँ प्रभावित होंगी, इसपर ऐसे लोगों को विचार करना चाहिए । आश्चर्यजनक बात तो यह है कि जो लोग इस तरह की विघातक कृतियों में सहभागी होते हैं, वे स्वयं अपने परिवार में अपने बच्चों को शिक्षा देते हैं कि अपनी माँग पूरी करवाने के लिए इस तरह गुस्सा प्रकट करते हुए जिद नहीं करनी चाहिए ।

समय-समय पर देश के साहित्यकारों, संतों, प्रवचनकारों और नेताओं ने सार्वजनिक राष्ट्रीय संपत्ति की महत्ता का बखान नागरिकों के समक्ष किया है और नागरिकों पर उसका प्रभाव पड़ा भी है । यदि पुराने समय से वर्तमान समय तक हम दृष्टि डालें तो पाएँगे कि निश्चित ही इस तरह की विघातक कृतियों के प्रमाण में पहले की तुलना में जबरदस्त कमी आई है । फिर भी इस स्थिति में और अधिक सुधार की आवश्यकता है । कुछ समय अवश्य लगेगा पर यह हो जाएगा । इसके लिए हमें देश की सरकार पर निर्भर न रहते हुए स्वयं ही इस जिम्मेदारी का वहन करना पड़ेगा । हम स्वयं सार्वजनिक और राष्ट्रीय संपत्ति के महत्त्व को समझें व

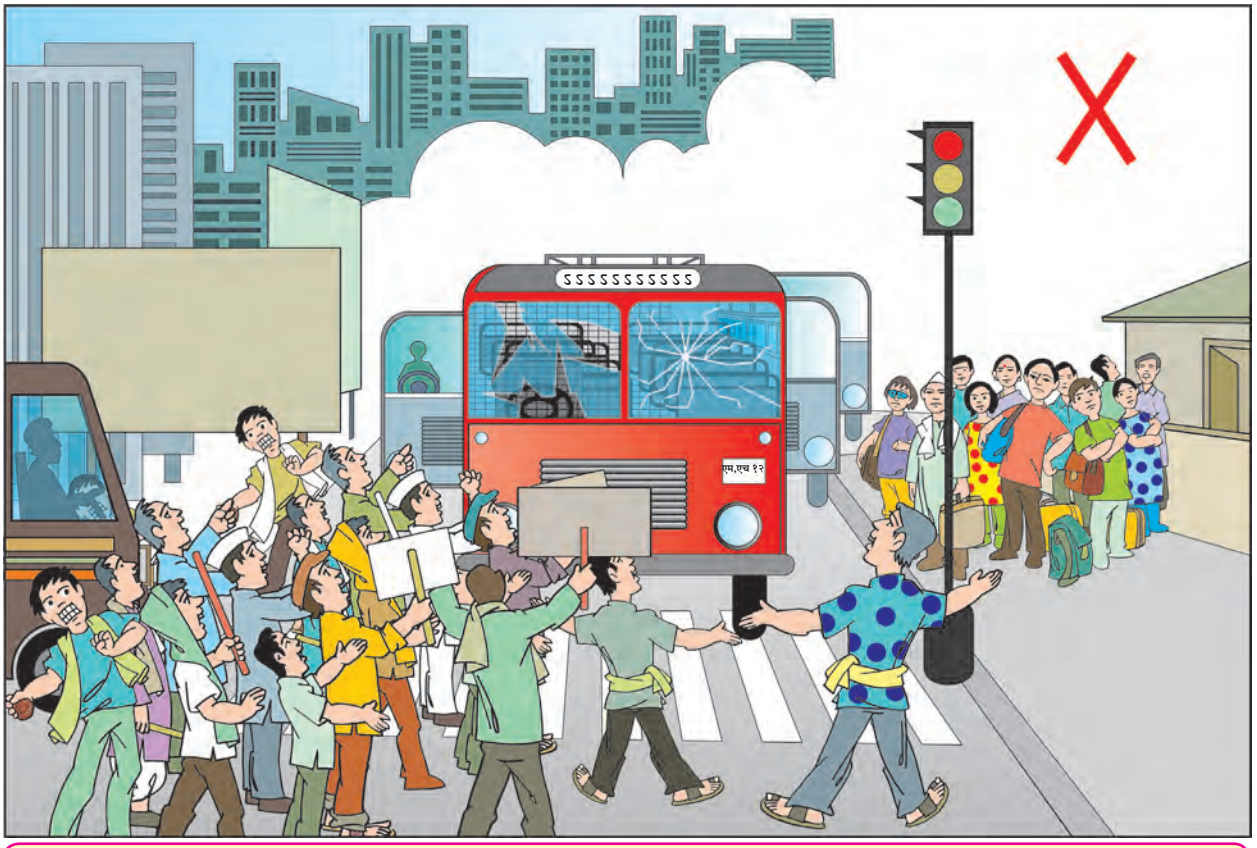

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ के परिच्छेदों का मुखर वाचन करें । किसी जानकारी को अंतरजाल से कैसे प्राप्त किया जा सकता है, मार्गदर्शन करें । अंतरजाल (इंटरनेट) द्वारा कौन-कौन-सी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं; इसपर चर्चा करें ।

खोजबीन

पनडुब्बी क्या और कैसे कार्य करती है? अंतरजाल की सहायता से बताओ।

अन्य नागरिकों को भी समझाएँ तथा राष्ट्रीय संपत्ति को हानि पहुँचाने के बजाय उसका भरपूर उपयोग करें। इस सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा की जिम्मेदारी सरकार से अधिक हमारी है, इस बात को स्वयं भी समझें औरों को भी समझाएँ।

इसी तरह देश भर की पाठशालाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को यह शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए कि राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा कैसे की जाए। प्रत्येक परिवार में माता-पिता अपने इस नैतिक कर्तव्य को समझें कि उन्हें अपने बच्चे में संस्कार के रूप में राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा की जिम्मेदारी पिरोनी है। इस प्रकार से जब पाठशालाओं और परिवारों के माध्यम से यह शिक्षा देश की भावी पीढ़ी को दी जाएगी तो हमारे देश का भविष्य अपने आप सुरक्षित हो जाएगा। देश का बच्चा-बच्चा जान जाएगा कि सार्वजनिक राष्ट्रीय संपत्ति का महत्त्व क्या हैं? वास्तव में यह बात हर एक को समझनी चाहिए कि देश के ये सार्वजनिक स्थल, ऐतिहासिक स्थल, पौराणिक स्थल आदि राष्ट्र की शान हैं। इन्हें देखने के लिए दूर-दराज देशों के लोग भी हमारे देश में आते हैं। राजस्थान के गुलाबी महल, दिल्ली का लालकिला, आगरा का ताजमहल, महाराष्ट्र के किले और गढ़ ये सारे के सारे ऐतिहासिक धरोहर हैं। इनसे देश का इतिहास जुड़ा है। ठीक इसी प्रकार ये सभी देश के विविध शहरों और गाँवों की सभ्यता के परिचायक हैं। सार्वजनिक स्थलों की वास्तु, वहाँ की अत्याधुनिक सुविधाएँ, शहर के सौंदर्य और समृद्धि की जान हैं। अब इन समृद्ध स्थानों की सुरक्षा का जिम्मा नागरिकों का भी उतना ही बनता है जितना प्रशासन का। आखिर उन सुविधाओं का पूरा-पूरा लाभ नागरिकों को ही तो मिलता है। यदि सारे नागरिक और उनके बच्चे सब इस महत्त्वपूर्ण बात को समझ जाएँ तो फिर समस्या ही समाप्त हो जाएगी। तो आओ सारे मिलकर कहें-

राष्ट्र संपदा देश की, नागरिकों की शान।
सदा सुरक्षित यह रहे, रखना इसका ध्यान।।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

लालसा = उत्कट इच्छा
खामियाजा = दुष्परिणाम
विघातक = नुकसानदायक
बखान = गौरवपूर्ण वर्णन
धरोहर = थाती, अमानत

जरा सोचो तो ... लिखो।

यदि सार्वजनिक अस्पताल न होता तो ... लिखो।

स्वयं अध्ययन

देश की सार्वजनिक संपत्ति कौन-कौन-सी है? लिखो।

सुनो तो जरा

मोगली की कहानी सुनो और कक्षा में सुनाओ ।

बताओ तो सही

ऋतुओं पर चर्चा करते हुए प्रत्येक ऋतु की विशेषताएँ बताओ ।

वाचन जगत से

अपने मनपसंद खिलाड़ी के बारे में पढ़ो । उनके बारे में कक्षा में वर्णन करो ।

मेरी कलम से

मोबाईल अभिशाप या वरदान लिखो ।

❊ कारण बताओ

१. अनुशासन सबसे बड़ी समस्या बनी है ।
२. सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा की ओर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए ।

सदैव ध्यान में रखो

अंतरजाल का उपयोग सही अध्ययन के लिए करो ।

अध्ययन कौशल

ऐतिहासिक धरोहर की जानकारी प्राप्त करो और लिखो ।

विचार मंथन

।। न करो उपयोग मनमाना, सार्वजनिक संपत्ति है बड़ा खजाना ।।

भाषा की ओर

चित्र में दिए गए यातायात के संकेत देखो तथा इन सांकेतिक चिह्नों का अर्थ क्या है, लिखो ।

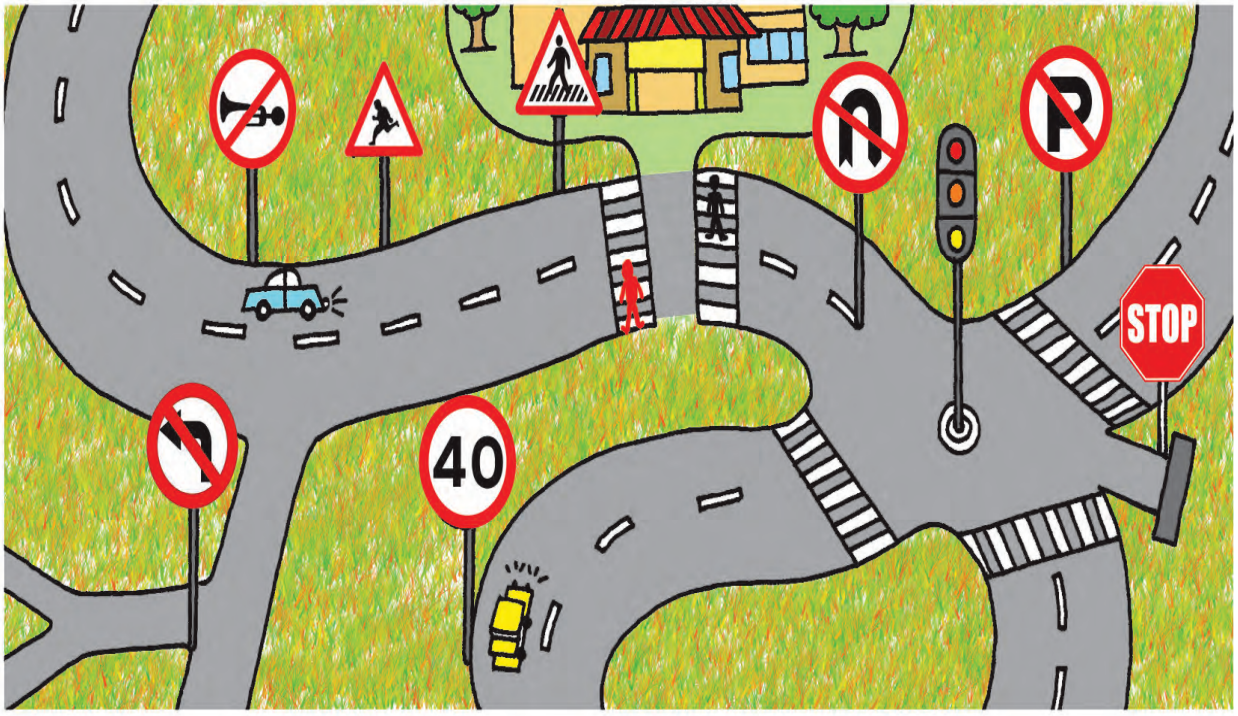

१. ----------

२. ----------

३. ----------

४. ----------

५. ----------

६. ----------

७. ----------

८. ----------

● **पढ़ो, समझो और लिखो :**

१२. पढ़क्कू की सूझ

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

जन्म : १९०८ **मृत्यु :** १९७४ **रचनाएँ :** रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र, रेणुका, हुँकार, आदि आपकी काव्यकृतियाँ हैं । **परिचय :** आप अध्यात्म एवं राष्ट्रीय विचारधारा के महान कवि हैं । उच्च कोटि के चिंतक होने के साथ-साथ महान गद्यलेखक भी हैं ।

इस कथा गीत में यह बताया गया है कि व्यक्ति को पढ़ा लिखा होने के साथ-साथ उसमें व्यावहारिक समझ भी होनी चाहिए ।

विचार मंथन

।। ढाई आखर प्रेम के, पढ़े सो पंडित होय ।।

एक पढ़क्कू बड़े तेज थे, तर्कशास्त्र पढ़ते थे,
जहाँ न कोई बात, वहाँ भी नई बात गढ़ते थे ।
एक रोज वे पड़े फिक्र में समझ नहीं कुछ पाए,
''बैल घूमता है कोल्हू में कैसे बिना चलाए ?''

कई दिनों तक रहे सोचते, मालिक बड़ा गजब है !
सिखा बैल को रखा इसने, निश्चय कोई ढब है ।
आखिर एक रोज मालिक से पूछा उसने ऐसे,
''अजी, बिना देखे, लेते तू जान भेद यह कैसे ?

कोल्हू का यह बैल तुम्हारा चलता या अड़ता है ?
रहता है घूमता, खड़ा हो या पागुर करता है ?''
मालिक ने यह कहा, ''अजी, इसमें क्या बात बड़ी है ?''
नहीं देखते क्या, गरदन में घंटी एक पड़ी है ।''

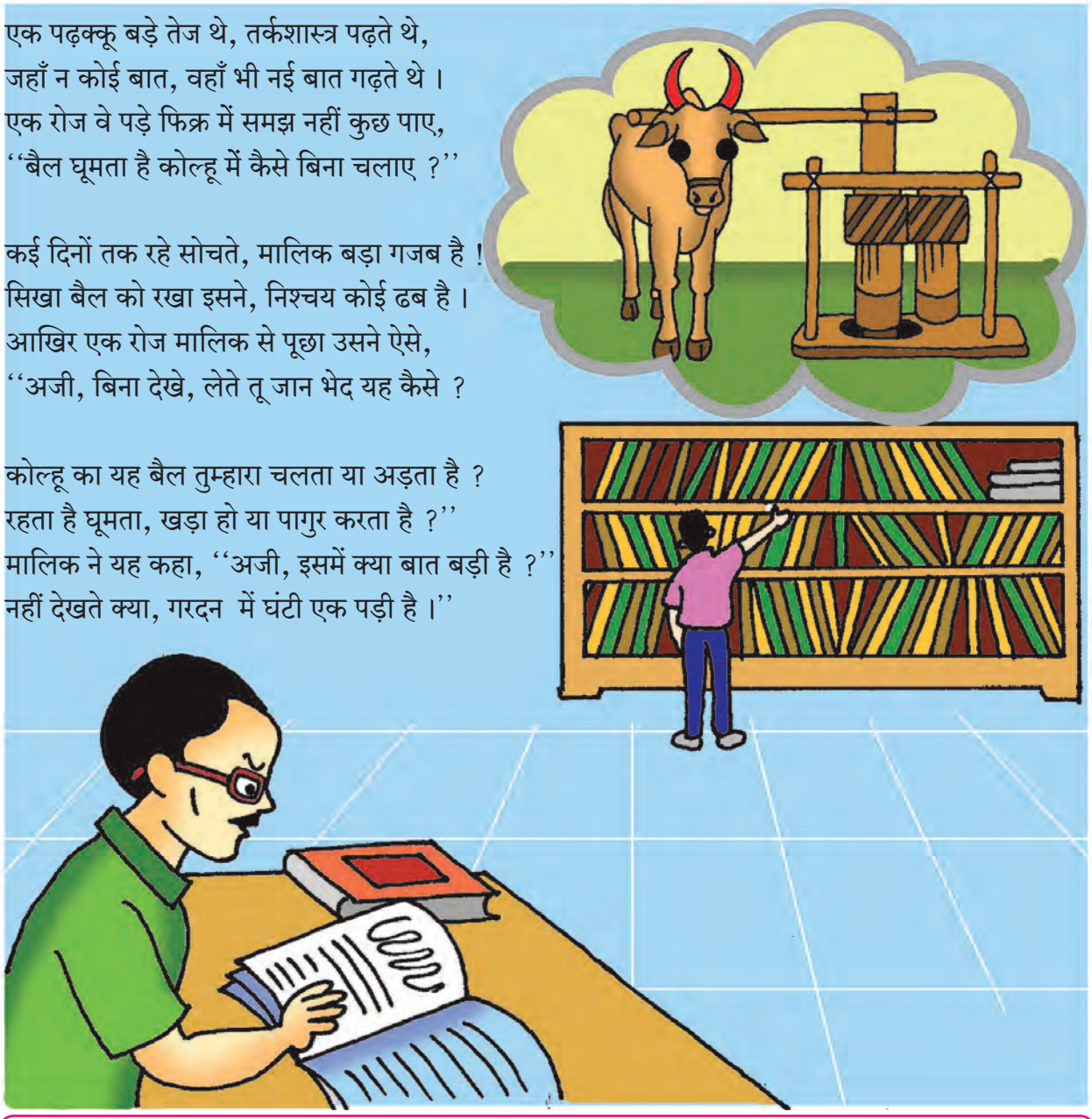

❑ विद्यार्थियों से कथागीत का मुखर वाचन हाव-भाव, लय-ताल के साथ कराएँ, सही उच्चारण की ओर ध्यान दें । कविता के आशय पर आधारित नाट्यीकरण प्रस्तुत करने के लिए कहें ।

खोजबीन

खादी का कपड़ा कैसे बनाया जाता है, इसकी जानकारी प्राप्त करो और लिखो ।

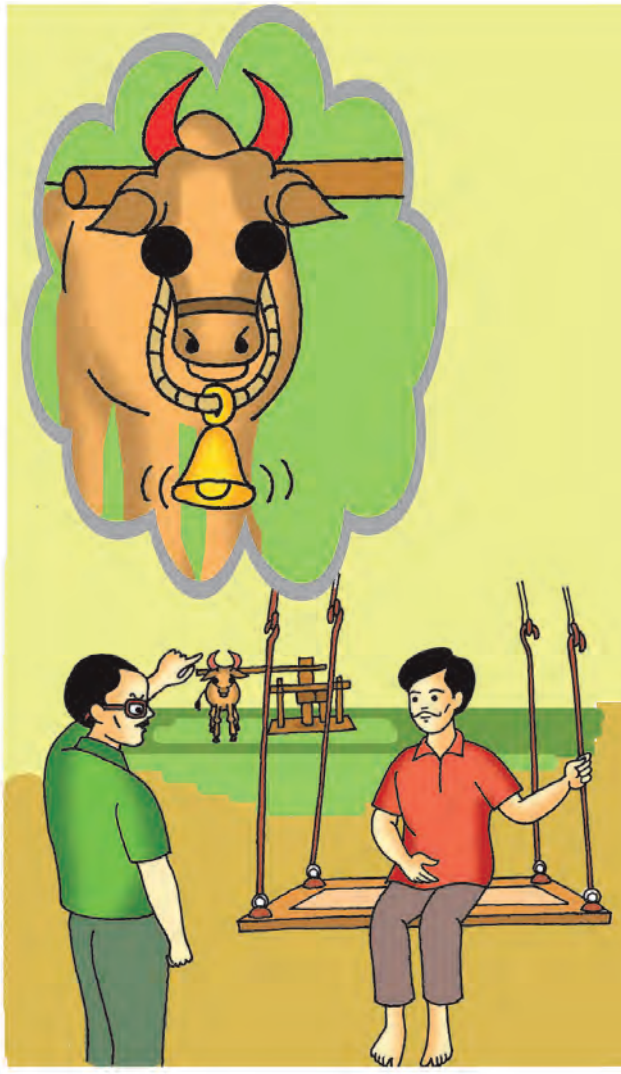

जब तक यह बजती रहती है मैं न फिक्र करता हूँ,
हाँ, जब बजती नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ ''
कहा पढ़क्कू ने सुनकर, तू रहे सदा के कोरे !
बेवकूफ ! मंतिख की बातें समझ सकोगे थोड़ी !

अगर किसी दिन बैल तुम्हारा सोच-समझ अड़ जाए,
चले नहीं, बस, खड़ा-खड़ा गरदन को खूब हिलाए ।
घंटी टुन-टुन खूब बजेगी, तुम न पास आओगे,
चार बूँद भर तेल साँझ तक भी क्या तुम पाओगे ?''

मालिक थोड़ा हँसा और बोला, पढ़क्कू जाओ,
सीखा है यह ज्ञान जहाँ पर वहीं इसे फैलाओ ।
यहाँ सभी कुछ ठीक-ठीक है, यह केवल माया है,
बैल हमारा नहीं अभी तक मंतिख पढ़ पाया है ।''

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

पढ़क्कू = पढ़ा लिखा
फिक्र = चिंता
कोल्हू = बीजों से तेल निकालने वाला लकड़ी का यंत्र
पागुर = जुगाली करना
मंतिख = समझदारी, बुद्धिमानी
साँझ = शाम, संध्या

स्वयं अध्ययन

' पंचतंत्र' की कोई कहानी पढ़कर सुनाओ ।

सदैव ध्यान में रखो

पढ़ाई के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान की भी आवश्यकता होती है ।

सुनो तो जरा

खेल के मैदान पर दी जाने वाली सूचनाएँ सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

अपने साथ घटित कोई हास्य घटना बताओ ।

वाचन जगत से

हिंदी डायरी के प्रारंभिक पृष्ठ जिनपर विविध प्रकार की जानकारी होती है, पढ़ो ।

मेरी कलम से

समाचार पत्र में रोज आने वाले चुटकुलों को लिखो और उनका संग्रह करो ।

*** कविता से प्राप्त सीख अपने शब्दों में लिखो ।**

जरा सोचो तो ..... बताओ

यदि तिलहन बीजों से तेल न निकलता तो .....

अध्ययन कौशल

पसंदीदा कहानी पर आधारित चित्रकथा तैयार करो ।

भाषा की ओर

निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तित कर रिक्त स्थान में लिखो ।

सरल वाक्य	संयुक्त वाक्य	मिश्र वाक्य
१. गरीब होने पर भी वह ईमानदार है ।	१. ---------- ----------	
२. सागर के कहने पर मैंने भोजन कर लिया ।		२. ---------- ----------
	३. वह रुपया चाहता था और वह उसे मिल गया ।	३. ---------- ----------
४. ---------- ----------	४. स्कूल बंद हो गया और लड़के घर जाने लगे ।	
	५.---------- ----------	५. ज्यों ही मैं घर पहुँचा, त्यों ही दरवाजा खुला ।
६. ---------- ----------		६. जब मैं छोटा था तब साइकिल खूब चलाता था ।

● सुनो, समझो और लिखो :

१३. घड़ी ने खोला राज

–नीलम राकेश

जन्म : १९६२ बदायूँ(उ.प्र.) **रचनाएँ :** खुला आकाश, सुनो कहानी बचपन की, अनोखी छुट्टियाँ । **परिचय :** आप सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं । आपके लेखन में मानवीय संबंधों की अनूठी समझ दिखाई देती है ।

इस कहानी में एक मेहनती, ईमानदार एवं बहादुर लड़की की बहादुरी का वर्णन किया गया है ।

*** चित्र देखकर उचित अव्यय रिक्त स्थान पर लिखो तथा समझो । (की भाँति, और, की ओर, धीरे–धीरे, क्योंकि, बाप रे, शाबाश, अकस्मात)**

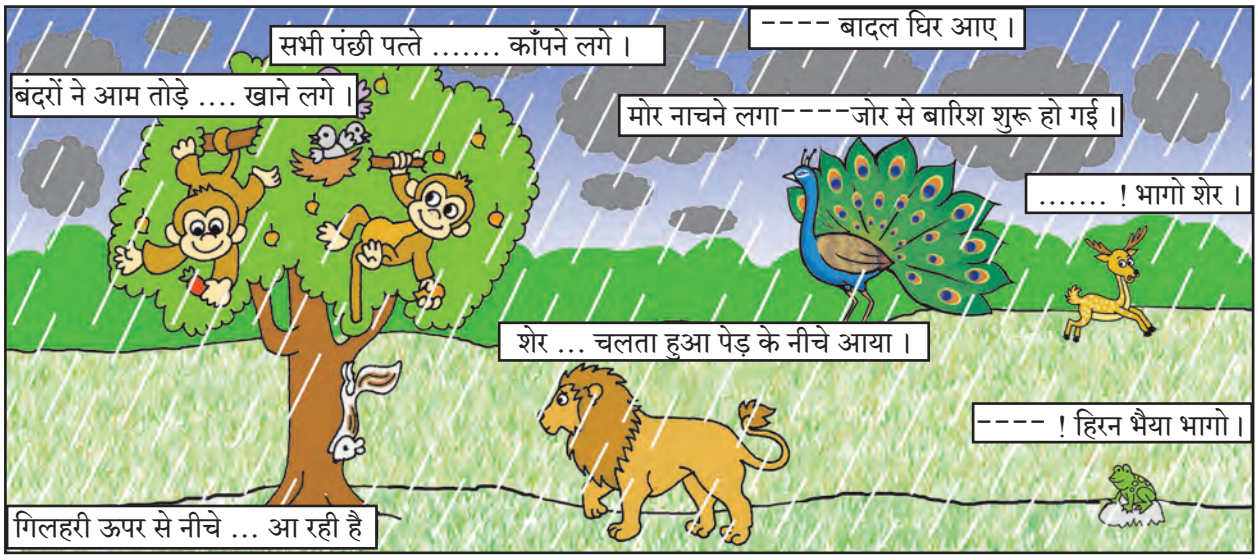

मीनल गोरखपुर जिले के एक गाँव में रहती थी । वह बहुत मेहनती लड़की थी । पढ़ने में उसका खूब मन लगता था । माँ के कामों में हाथ बँटाने के बाद वह नियम से विद्यालय जाती थी ।

रोज की तरह मीनल विद्यालय जाने के लिए घर से निकली । वह तेज चल रही थी क्योंकि आज उसे निकलने में देर हो गई थी । माँ की तबीयत खराब होने के कारण आज सारा काम उसे ही निपटाना पड़ा था । तिराहे पर आकर वह कुछ पल ठिठकी, उसके विद्यालय पहुँचने के दो रास्ते थे । एक पक्की सड़क वाला जिससे वह रोज जाती थी परंतु यह लंबा रास्ता था । दूसरा रास्ता छोटा था । उससे विद्यालय समय पर पहुँचा जा सकता था । यह एक पगडंडी थी जो जंगल से होकर जाती थी।

मीनल बहादुर लड़की थी । उसने जंगल से जाने का फैसला किया । वह आगे बढ़ गई । थोड़ी दूर जाने के बाद जंगल घना होने लगा । रह–रहकर जंगली जानवरों की आवाजें सुनाई देतीं । निडर मीनल सतर्कता से चारों ओर देखती हुई आगे बढ़ती जा रही थी। अचानक उसकी नजर किसी चमकती हुई चीज पर पड़ी । वह धीरे–धीरे उस ओर बढ़ी । पास पहुँचने पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, वह एक सुंदर, सुनहरी घड़ी थी ।

एक पल को मीनल के मन में यह विचार आया कि शायद यह घड़ी सोने की है । यदि यह उसे मिल जाए तो उसकी गरीबी दूर हो जाएगी । तुरंत ही उसे बड़ों की कही बात याद आ आई 'लालच बुरी बला है ।' जल्दी से मीनल चारों ओर देखने लगी कि शायद इस घड़ी का

❑ विद्यार्थियों से चित्र के आधार पर प्रश्न पूछें । वाक्यों की रचना के आधार पर अव्ययों के प्रकार (क्रियाविशेषण, संबंध सूचक, समुच्चय बोधक, विस्मयादि बोधक) उदाहरण सहित समझाएँ । कहानी से इस प्रकार के वाक्य ढूँढ़कर लिखवाएँ तथा दृढ़ीकरण होने तक अभ्यास करवाएँ ।

विचार मंथन

।। संकटों से बचाती है सतर्कता ।।

मालिक कहीं आस-पास दिख जाए। उस घने जंगल में उसे दूर-दूर तक कोई इनसान दिखाई नहीं दिया।

मीनल ने घड़ी को अपने प्रधानाचार्य को देने का निर्णय लिया। वे शायद घड़ी को उसके असली मालिक तक पहुँचाने का कोई रास्ता ढूँढ़ लें। जिसकी इतनी महँगी घड़ी खोई होगी वह बेचारा कितना परेशान हो गया होगा। सोच कर ही मीनल दुखी हो गई।

विद्यालय पहुँचते ही मीनल सीधे प्रधानाचार्य के पास गई और उन्हें पूरी बात बता कर घड़ी दे दी। प्रधानाचार्य उसकी ईमानदारी से प्रसन्न हुए और उसे लेकर पुलिस थाने चले गए। वह घड़ी देखते ही इंस्पेक्टर चौंक पड़ा।

''अरे ! ..... यह घड़ी आपको कहाँ मिली ?''

''मुझे नहीं, इस बच्ची मीनल को यह घड़ी जंगल में मिली है। यह उसे उसके मालिक तक पहुँचाना चाहती है।'' प्रधानाचार्य ने स्नेह से मीनल के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

''बेटा, क्या आप हमें उस जगह पहुँचा सकती हैं, जहाँ से आपको यह घड़ी मिली है ?''

''हाँ अंकल।''

''क्या बात है इंस्पेक्टर साहब, आप कुछ परेशान लग रहे हैं ?'' प्रधानाचार्य अपनी जिज्ञासा दबा नहीं पाए।

''मुझे लगता है यह घड़ी जानकीदास की है।''

''वही सर्राफावाले जानकीदास ? उन्हें मैं जानता हूँ।''

''हाँ वही। कल रात उनका अपहरण हो गया है।''

''क्या ..... ?'' प्रधानाचार्य की आँखें खुली रह गईं।

''मुझे लगता है, इस घड़ी से हमें कुछ सुराग मिल जाएगा। मीनल बेटा, आप मेरे साथ चलिए। मैं जंगल में उस स्थान को देखना चाहता हूँ, जहाँ यह घड़ी मिली थी।''

''इंस्पेक्टर साहब मैं भी आपके साथ चलूँगा। अपने विद्यालय की बच्ची को मैं अकेले खतरे में नहीं भेज सकता।'' प्रधानाचार्य जल्दी से बोले।

''वैसे हम मीनल का पूरा ख्याल रखेंगे फिर भी आप चल सकते हैं।''

पुलिस के सिपाहियों के साथ गाड़ी में बैठकर तीनों

❑ प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहानी समझाते हुए आदर्श वाचन प्रस्तुत करें। विद्यार्थियों से क्रमशः वाचन कराएँ। विद्यार्थियों को उनका अपना साहसभरा कोई कार्य बताने के लिए कहें। उन्हें कहानी अपने शब्दों में बताने के लिए प्रेरित करें।

जंगल पहुँच गए । पगडंडी के पास पहुँचकर जीप छोड़ दी । इंस्पेक्टर के निर्देश के अनुसार पगडंडी पर आगे-आगे मीनल, प्रिंसिपल साहब और सादे वस्त्र में इंस्पेक्टर चलने लगे । उनसे एक निश्चित दूरी बनाकर पेड़ों की ओट में पुलिस का दस्ता आगे बढ़ने लगा ।

''मीनल बेटा, तुम्हें जगह याद है? हम काफी घने जंगल में आ गए हैं ।'' इंस्पेक्टर ने पूछा ।

''हाँ अंकल, वहाँ दूर देखिए, उस बरगद के नीचे मुझे वह घड़ी मिली थी । वहीं से पगडंडी दाहिने मुड़ती है ।''

मीनल की बताई दिशा में सब सतर्क निगाहों से देखने लगे । धीरे-धीरे वे बरगद के नीचे पहुँच गए ।

''यहाँ तो कुछ भी नहीं है ।'' प्रिंसिपल साहब बोले।

इशारे से उन्हें चुप कराते हुए इंस्पेक्टर ने पैरों के निशानों की ओर इशारा किया । अभी इंस्पेक्टर इधर-उधर देख ही रहे थे कि अचानक बरगद के ऊपर से दो व्यक्ति नीचे कूद पड़े ।

''कौन हो तुम लोग ? यहाँ जंगल में क्या कर रहे हो ?'' उनमें से एक कड़ककर बोला ।

''क.....क.....कुछ..... नहीं..... ह..... हम गाँव जा रहे हैं ।'' इंस्पेक्टर ने डरने का अभिनय किया ।

''यह बच्ची कौन है ?'' वह फिर गरजा ।

''य.....यह.....म.....मेरी भतीजी है ।'' कहते हुए इंस्पेक्टर ने मीनल को अपने पास कर लिया । ऐसा करते हुए उसे अपनी सीटी पकड़ा दी ।

''इन्हें भी वहीं ले चलो'' काले आदमी ने आदेश दिया ।

इंस्पेक्टर ने प्रिंसिपल एवं मीनल को विरोध न करने का इशारा किया । प्रिंसिपल व इंस्पेक्टर रूमाल से बाँध दिए गए थे । इनके पीछे-पीछे पास आकर वे बोले, ''यहीं रुक जाओ ।''

दोनों ने मिलकर उस घनी झाड़ी को हटा दिया । देखते-ही-देखते वहाँ एक बडी-सी गुफा दिखाई देने लगी । गुफा के अंदर एक व्यक्ति को हाथ-पैर बाँध कर एक कोने में बिठा रखा था । बाहर की ओर उसकी पीठ थी । उसके पास दो अन्य व्यक्ति बैठ हुए थे । उन लोगों को देखते ही उनका मुखिया गरजा ।

''इन लोगों को यहाँ क्यों लाए हो ?''

''बॉस, ये लोग बरगद के नीचे कुछ ढूँढ़ रहे थे ।''

बॉस की त्योरियाँ चढ़ गईं । इसी समय इंस्पेक्टर ने

मीनल को इशारा कर दिया । वह जोर-जोर से सीटी बजाने लगी । बॉस ने चील की तरह झपट कर उससे सीटी छीन ली और जोर से चीखा ।

''यह क्या हरकत है ? सीटी क्यों बजा रही हो ?''

मीनल बुरी तरह डर गई । इंस्पेक्टर ने बात सँभाली, ''बच्ची है साहब, डर गई । उसके मुँह में सीटी थी घबराहट में बजने लगी । अब नहीं बजाएगी ।''

बॉस ने घूरकर इंस्पेक्टर को देखा फिर अपने आदमियों से बोला, ''बाँध दो इन्हें भी यहीं ।''

छीने जाने से पहले सीटी अपना काम कर चुकी थी। सीटी का संकेत पाते ही पुलिस के दस्ते ने चारों ओर से गुफा को घेर कर धावा बोला । अचानक हुए आक्रमण से अपहरणकर्ता घबरा गए । उन्हें भागने का मार्ग भी नहीं मिला । वे चारों रंगे हाथों पकड़े गए । सेठ जानकीदास को मुक्त करा लिया गया । इस सफलता का सेहरा मीनल के सिर बँधा ।

अगले दिन हर तरफ मीनल की ईमानदारी और हिम्मत की चर्चा हो रही थी। विद्यालय की ओर से उसे एक साइकिल पुरस्कार स्वरूप दी गई । पुलिस अधीक्षक द्वारा भी वह सम्मानित की गई । सेठ जानकीदास तो इतने अभिभूत थे कि उनके मुँह से शब्द ही नहीं फूट रहे थे । अब मीनल उनके लिए अपनी बेटी के समान थी । इन सबसे अलग मीनल प्रसन्न थी कि वह समाज के लिए कुछ कर सकी ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

तिराहा = जहाँ तीन रास्ते मिलते हैं ।
पगडंडी = पैदल चलने का कच्चा रास्ता
सतर्कता = सजगता
दस्ता = दल
मुखिया = गाँव का प्रमुख
अभिभूत = प्रभावित

मुहावरे

हाथ बँटाना = सहायता करना
धावा बोलना = हमला करना
सफलता का सेहरा बँधना = श्रेय मिलना

स्वयं अध्ययन

अपनी पढ़ाई का नियोजन करते हुए दिनचर्या लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

हमें सदैव जागरूक रहना चाहिए ।

खोजबीन

आकाशवाणी केंद्र से उद्घोषक की घोषणा हम कैसे सुन सकते हैं, लिखो ।

सुनो तो जरा .....

जल चेतना से संबंधित विज्ञापन सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

'पानी' को अन्य प्रादेशिक भाषाओं में किन-किन नामों से जाना जाता है ?

वाचन जगत से

धर्मवीर भारती की जीवनी पढ़ो ।

मेरी कलम से

'ईमानदारी' से संबंधित कोई एक घटना लिखो, जो तुमने देखी है ।

❊ प्रस्तुत कहानी का घटनाक्रम लिखो । (मुद्दों में)

जरा सोचो तो .... लिखो ।

यदि देश के सभी पुलिस एक दिन छुट्टी पर चले जाएँ तो...

अध्ययन कौशल

राष्ट्रीय एकात्मता सूचित करने वाला एक 'भित्ति चित्र' बनाओ ।

भाषा की ओर

उचित मुहावरे/कहावतों को चुनकर वाक्य के रिक्त स्थान पूर्ण करो ।

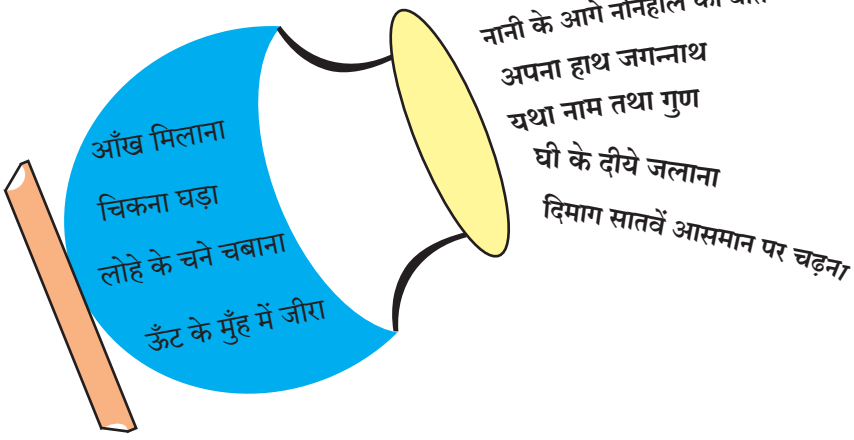

१) अपनी कलई खुल जाने के बाद रमेश मुझसे .....का साहस नहीं रखता ।
२) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते ही रमेश का ..... ।
३) अपने से अधिक विद्वान को जानकारी देना अर्थात ..... ।
४) वह ..... है उसपर आपकी बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा ।
५) आदर्श जैसा नाम वैसा ही आचरण अर्थात ..... ।
६) दो रोटियाँ तो श्याम के लिए ..... के समान है ।
७) किसी भी कार्य के लिए दूसरों पर आश्रित मत रहो, अपना काम स्वयं करो अर्थात ..... ।
८) सुबह उठकर व्यायाम करना सुरेश के लिए अंत्यत कठिन कार्य है जैसे ..... ।
९) अपने पोते का व्यापार अच्छा चलने पर दादी ने ..... ।

● सुनो, समझो और बोलो :

१४. बिना टिकट

–मेहंद्र सांघी

इस संवाद में राष्ट्रीय संपत्ति का उपयोग ईमानदारी, सच्चाई एवं नियमानुसार करने का संदेश दिया गया है । बिना टिकट यात्रा के परिणामस्वरूप शारीरिक एवं चारित्रिक हानि उठानी पड़ सकती है, यह बताया गया है ।

अध्ययन कौशल

अपने मित्र द्वारा की गई लेखन की गलतियाँ दिखाओ और शब्दकोश की सहायता से सुधार करवाओ ।

(कोई एक रेलवे स्टेशन । प्लेटफार्म पर रेलगाड़ी खड़ी है । गाड़ी निकलने ही वाली है । इतने में फर्नांडिस हाँफता हुआ प्लेटफार्म पर आता है। सामनेवाले डिब्बे की ओर दौड़ता है । गाड़ी निकल चुकी है । जैसे-तैसे वह डिब्बे की पायदान पर खड़ा रहता है ।)

फर्नांडिस : आखिर गाड़ी मिल ही गई ।

रमण : इसमें नया क्या है ? रोज तुम ऐसा ही करते हो ।

श्याम : और नहीं तो क्या ? फर्नांडिस, कभी तो वक्त पर आया करो ।

फर्नांडिस : (दूसरे दरवाजे से टिकट चेकर को आते देख) बाप रे !

श्याम : क्यों ? क्या हुआ ?

फर्नांडिस : ये टिकट चेकर खन्ना कहाँ से आ टपका ?

रमण : यह तो वही बता सकता है!

फर्नांडिस : दोस्तों, अब बाहर झाँकने से कोई फायदा नहीं । गाड़ी की गति तेज हो गई है । इनसे बचने के लिए चलती गाड़ी से कूद भी नहीं सकते ।

श्याम : इसने जरूर हमें चढ़ते हुए देख लिया होगा ।

फर्नांडिस : रमण, लगता है अब तो सुबह का बचाया हुआ किराया भी जुर्माने के साथ भरना पड़ेगा ।

❑ इस संवाद का उचित आरोह-अवरोह के साथ आदर्श वाचन प्रस्तुत करें । प्रश्नोतर के माध्यम से पाठ का आशय समझाएँ । विद्यार्थियों से क्रमश: वाचन कराएँ । संवाद का नाट्यीकरण प्रस्तुत करने के लिए मार्गदर्शन करें । प्राप्त सीख अपनाने के लिए प्रेरित करें ।

जरा सोचो तो ... बताओ

अगर तुमको रेलगाड़ी चलाने के लिए मिल जाए तो ....

रमण : (फुसफुसाते हुए) फर्नांडिस, देखो वह तो तुम्हारी ही तरफ आ रहा है!

फर्नांडिस : एक काम करते हैं। अपना चेहरा उदास बनाकर सिर झुकाकर बैठते हैं ताकि कुछ सहानुभूति मिल सके ! (तीनों मुँह लटकाकर बैठते हैं।)

खन्ना : बच्चो, चलो अपने-अपने टिकट दिखाओ।

फर्नांडिस : (मरी-सी आवाज में) सर, माफ करें, लगता है कि गाड़ी में चढ़ते समय टिकट जेब से नीचे गिर गए।

श्याम/रमण : जी हाँ, जी हाँ, मेरा टिकट भी इसके पास था !

खन्ना : बच्चो, सच-सच बताओ, क्या सचमुच तुमने टिकट खरीदे थे और खो दिए हैं ?

फर्नांडिस : जी हाँ! बिलकुल सच है। हम भला झूठ क्यों बोले? वैसे भी हम कभी भी झूठ नहीं बोलते।

खन्ना : हाँ हाँ! केवल टिकट चेकर को छोड़कर तुम और लोगों से सच ही बोलते होंगे। मगर मेरा अनुभव तो कुछ और ही बताता है!

फर्नांडिस : जी, नहीं सर! हमारे टिकट सचमुच गिर गए हैं।

खन्ना : ऐसी बात है? तो फिर मैं आज तुम्हें ऐसा सबक सिखाऊँगा कि तुम्हारे टिकट फिर कभी नहीं गिरेंगे। चलो उठो। तीनों उस कोने में बैठ जाओ। उठो!
(तीनों कोने में बैठते हैं। खन्ना जी अन्य यात्रियों के टिकट चेक करने लगते हैं। इतने में राजापुर स्टेशन आता है।)

फर्नांडिस : दोस्तों, यह हमेशा की तरह इसी स्टेशन पर हमें डाँटकर छोड़ देगा।

रमण : कहेगा कि अब की बार छोड़ रहा हूँ। अगली बार सख्त सजा दूँगा !
(तीनों मुँह चुराकर हँसते हैं। तीनों उठने लगते हैं।)

खन्ना : चुपचाप बैठे रहो। हिलो मत। हाँ, अपने पिता का नाम और पता बताओ।

रमण : सर, प्लीज सर, हमें इस बार माफ कीजिए। कसम से फिर कभी भी ऐसा नहीं करेंगे।

खन्ना : बिलकुल नहीं। (अन्य यात्रियों से) आप लोग इनपर ध्यान रखिएगा। मैं जरा स्टेशन मास्टर से मिलकर आता हूँ। (खन्ना नीचे उतरते हैं। स्टेशन मास्टर से बात करके वे लौट आते हैं।)

खन्ना : चलो, उतरो नीचे।

फर्नांडिस : (आखिरी कोशिश करते हुए) सर, सर प्लीज इस बार...

खन्ना : चुप! चुपचाप मेरे पीछे चलो।
(तीनों नीचे उतरकर खन्ना के पीछे-पीछे चलने लगते हैं। कुछ दूर जाने के बाद खन्ना जी एक घर के सामने खड़े होते हैं। दरवाजा खटखटाते हैं। दरवाजा खुलता है।

खन्ना : बेटे राज, जरा उठोगे?
(राज उठने की कोशिश करता है। उठ नहीं पाता। क्योंकि उसकी दोनों टाँगें हैं हीं नहीं।)

खन्ना : देखा तुमने कि उसे खड़े होने में कितनी परेशानी हो रही है?

फर्नांडिस : जी हाँ।

खन्ना : तो क्या तुम भी इसकी तरह अपनी टाँगें तुड़वाना चाहते हो?

तीनो : (एक साथ, घबराहट भरी आवाज में) नहीं! नहीं!!

सदैव ध्यान में रखो

अनुशासन ही जीवन को सफल बनाता है ।

खन्ना : देखो फर्नांडिस, राज की यह ऐसी हालत क्यों हुई कुछ पता है तुम्हें ?
(इतने में अंदर से राज की माँ आती है ।)

माँ : बस बस! बहुत हो चुका खन्ना जी! अब मुझे बोलने दो । बच्चो, मैं राज की माँ । राज जब छोटा था, तब यह भी तुम्हारी ही तरह शैतान था, बिना टिकट सफर करके बहुत खुश होता था । कितनी बार मैंने समझाया! पर इसने माना नहीं । एक बार....एक बार.....

राज : रुको माँ । मैं बताता हूँ । बिना टिकट यात्रा करने में मुझे बड़ा मजा आता था । इससे जो पैसे बचते, उनसे मैं मिठाइयाँ खाता था । एक दिन चेकर जब अचानक डिब्बे में चढ़ा, तो मैं चलती गाड़ी से नीचे कूद पड़ा । सिग्नल और डिब्बे के बीच में फँसकर मैं अपनी दोनों टाँगें खो बैठा !

माँ : अच्छा बच्चो; छोड़ दो ये गंदी आदतें । बैठो आराम से । मैं खाना लगाती हूँ । (अंदर जाती है ।)

खन्ना : देखा तुमने बिना टिकट का परिणाम ?

फर्नांडिस : जी बिलकुल ! अब हम कभी भी ऐसा दुस्साहस नहीं करेंगे ।

खन्ना : शाबाश बच्चो ! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

पायदान = पैर रखने की जगह जुर्माना = आर्थिक दंड/सजा

दुस्साहस = ऐसा साहस जिससे हानि हो

मुहावरे

मुँह लटकाना = निराश होना

सबक सिखाना = पाठ पढ़ाना

स्वयं अध्ययन

सद्गुणों को आत्मसात करने के लिए क्या करोगे, इसपर आपस में चर्चा करो ।

विचार मंथन

।। ईमानदारी चरित्र निर्माण की नींव है ।।

खोजबीन

रेल इंजन का विकास किस प्रकार हुआ, अंतरजाल की सहायता से लिखो ।

सुनो तो जरा

रेलवे स्थानक पर उद्घोषक द्वारा दी जाने वाली सूचनाओं को सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

अगर आपका टिकट खो जाए तो आप क्या करोगे, बताओ ।

वाचन जगत से

हरिवंशराय बच्चन की कोई कविता पढ़ो और सुनाओ ।

मेरी कलम से

मित्र को अपनी किसी यात्रा का वर्णन करने वाला पत्र लिखो।

❊ कारण बताओ/लिखो ।

१. टिकट चेकर ने बच्चों को सबक सिखाना तय किया था।
२. तीनों लड़कों को लेकर टिकट चेकर एक घर के सामने खड़े रहे ।
३. बच्चों ने निश्चय किया कि वे अब कभी ऐसा दुस्साहस नहीं करेंगे ।
४. राज अपनी दोनों टाँगें खो बैठा था ।

भाषा की ओर

नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द शब्दकोश की सहायता से ढूँढ़कर लिखो ।

सूरज – भास्कर	आँख – ------	अतिथि – ------	फूल – ------
पृथ्वी – ------	कपड़ा – ------	आनन – ------	घर – ------
सागर – ------	चंदा – ------		

● **सुनो, समझो और गाओ :**

१५. नीला अंबर

–डॉ. हनुमंत नायडू

जन्म : १९३३ **मृत्यु :** २६ फरवरी १९९८ **रचनाएँ :** 'नीला अंबर साथी मेरा' और 'बंबई की कहानी' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं ।
परिचय : डॉ. हनुमंत नायडू तेलुगु भाषी हिंदी साहित्यकार हैं ।
इस कविता में प्रकृति की विशेषताएँ एवं प्रकृति से मानव का सहसंबंध बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

अध्ययन कौशल

वायुमंडलीय स्तर की आकृति बनाओ और नामांकित करो ।

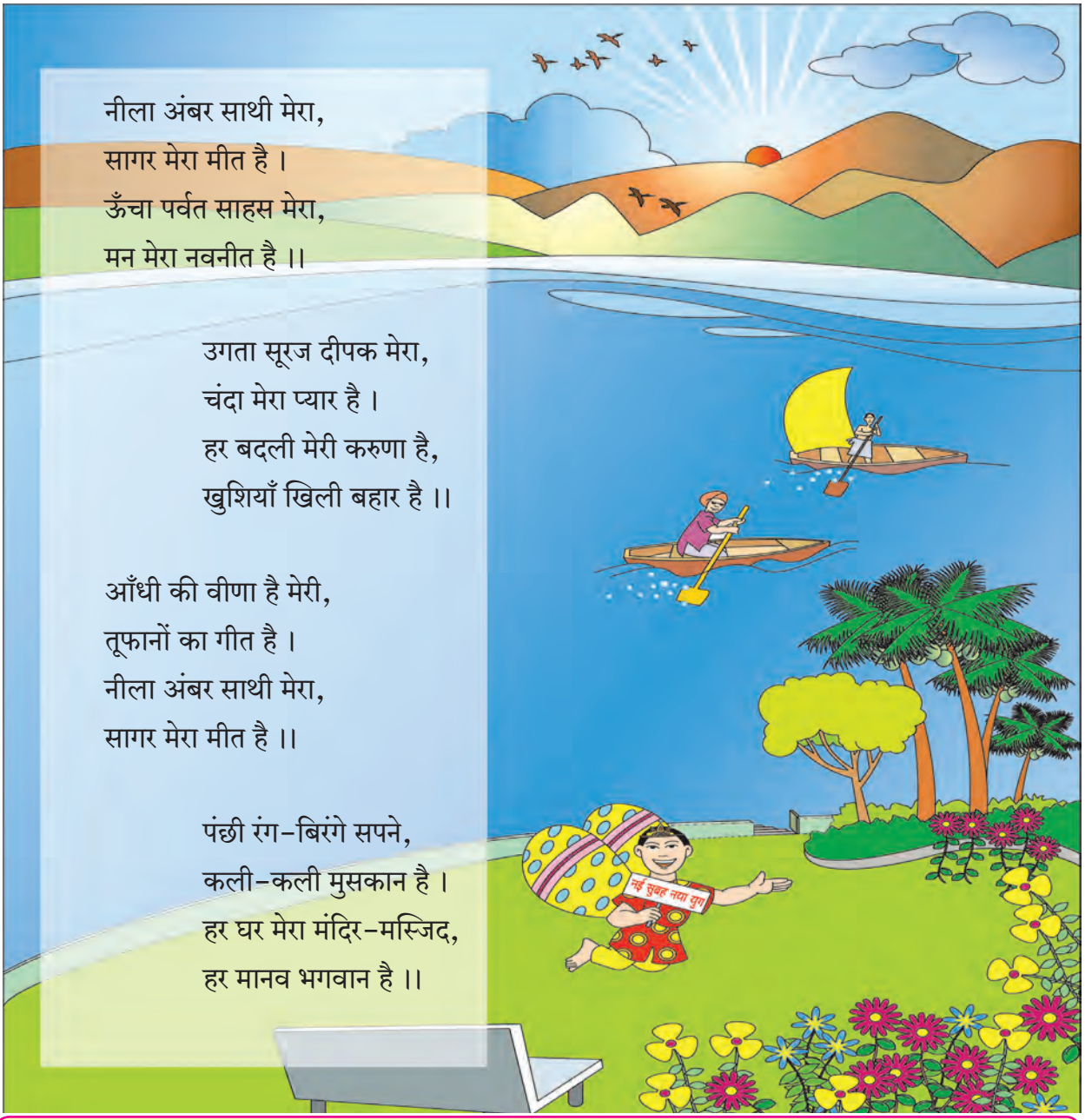

❑ कविता का सस्वर पाठ करें । प्रकृति तथा मानव के सहसंबंध को स्पष्ट करें । दो-दो पंक्तियों का वाचन कराएँ । पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट करें । प्रश्नोत्तर के माध्यम से विद्यार्थियों को पूरी कविता का आशय समझाएँ ।

खोजबीन

पुस्तक की यात्रा शुरू से अब तक कैसे हुई, अंतरजाल की सहायता से खोजो ।

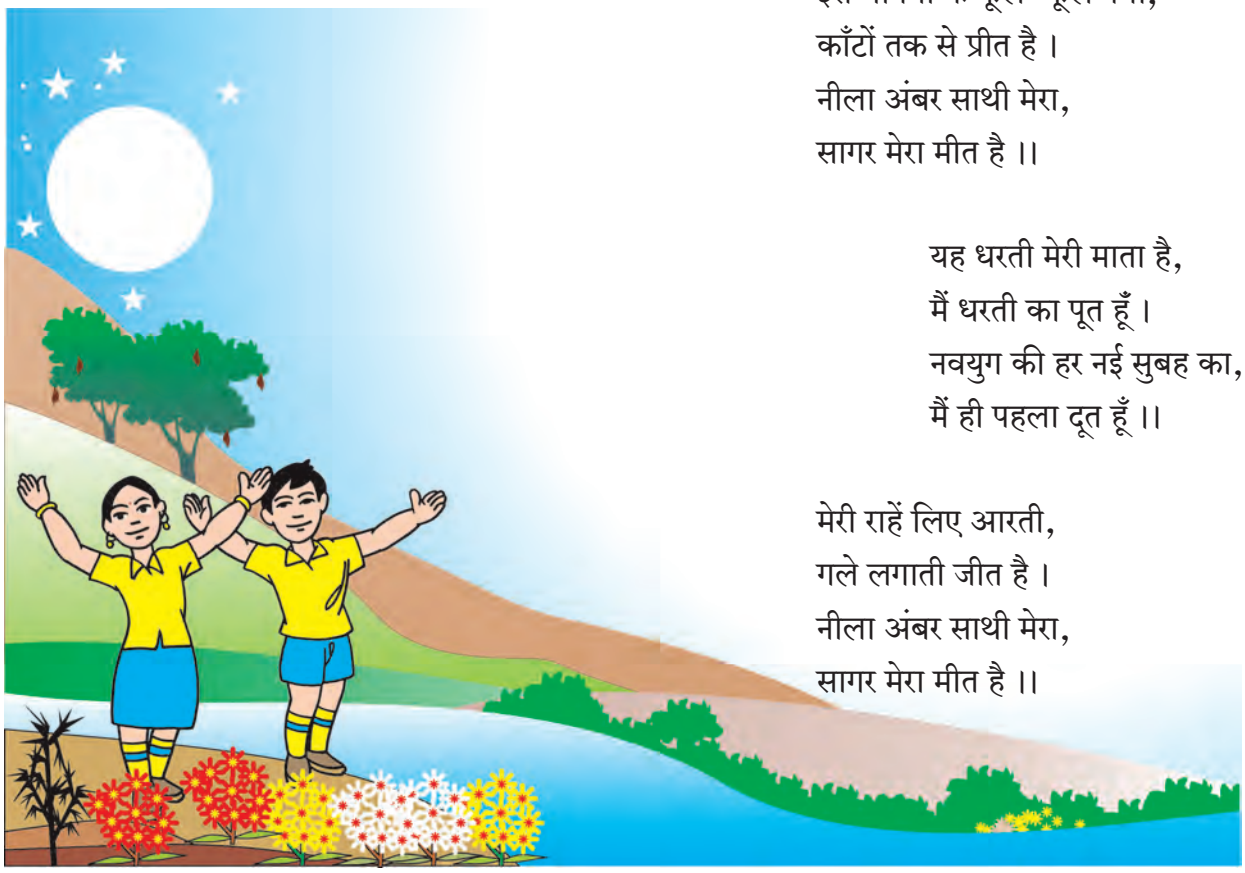

इस बगिया के फूल-फूल क्या,
काँटों तक से प्रीत है ।
नीला अंबर साथी मेरा,
सागर मेरा मीत है ।।

यह धरती मेरी माता है,
मैं धरती का पूत हूँ ।
नवयुग की हर नई सुबह का,
मैं ही पहला दूत हूँ ।।

मेरी राहें लिए आरती,
गले लगाती जीत है ।
नीला अंबर साथी मेरा,
सागर मेरा मीत है ।।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

अंबर = आकाश
मीत = मित्र
नवनीत = मक्खन
बदली = छोटा-सा बादल
पूत = बेटा

मुहावरे

गले लगाना = प्यार से मिलना

स्वयं अध्ययन

पक्षीमित्र डॉ. सलीम अली के बारे में जानकारी इकट्ठा करो ।

विचार मंथन

।। जीवदया ही भूतदया है ।।

सुनो तो जरा

कोई हास्य कविता सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

अपने देखे हुए किसी मजेदार सपने के बारे में बताओ ।

वाचन जगत से

कविवर सुमित्रानंदन पंत की कोई कविता पढ़ो और किन्हीं चार पंक्तियों का सुलेखन करो ।

मेरी कलम से

विद्यालय के पर्यटन संबंधी एक सूचना पत्र बनाओ ।

❊ कविता की पंक्तियाँ पूरी करो ।

१. उगता सूरज .....
.....
.....
..... बहार है ।

२. यह धरती .....
.....
.....
..... दूत है ।

जरा सोचो तो ... बताओ

यदि संगीत न हो तो .....

सदैव ध्यान में रखो

प्राकृतिक संपदाओं की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है ।

भाषा की ओर

दिए गए उपसर्ग लगाकर नए शब्द रेल की खिड़की में तथा नीचे दिए गए शब्दों से उपसर्ग अलग कर पहियों में लिखो ।

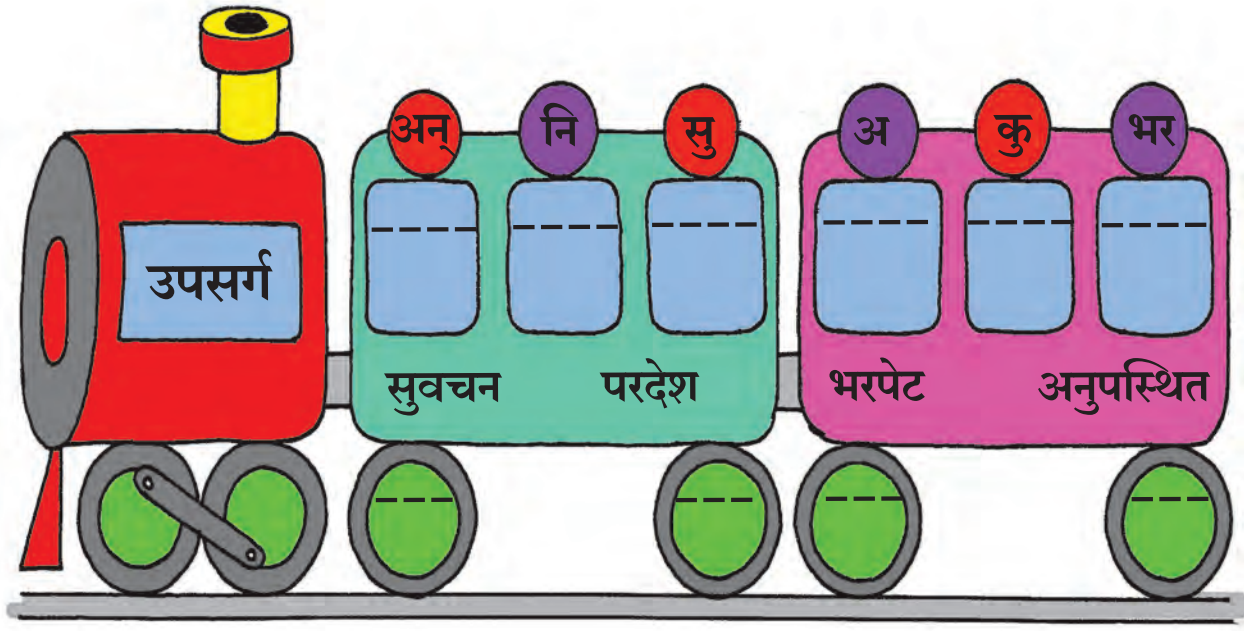

* पुनरावर्तन * १

१. रेडियो पर प्राणी/पक्षी संबंधी गीत सुनो ।

२. प्रथमोपचार पेटी में क्या–क्या होता है बताओ ।

३. 'संतुलित आहार' संबंधी पत्रिका पढ़ो ।

४. अपने विद्यालय में मनाए गए राष्ट्रीय पर्व का कोई प्रसंग लिखो ।

५. अक्षर समूहों में से कवियों के नाम ढूँढ़ो और लिखो :

स	र	न	खा	----------
ने	र	श्व	ज्ञा	----------
दा	र	सू	स	----------
री	बि	हा		----------
व	म	दे	ना	----------

उपक्रम/प्रकल्प

विद्यालय में पहले दिन के अपने अनुभव सुनाओ ।	अब तक प्रकृति से क्या–क्या सीखा बताओ ।	प्रति सप्ताह हिंदी के सुवचनों को पढ़ो ।	अपने राज्य के प्रमुख स्थलों के नाम लिखो ।

* पुनरावर्तन *२

१. मित्रों के साथ की गई किसी वन की सैर का वर्णन सुनाओ ।

२. अपने विद्यालय के खेल विभाग से संबंधित जानकारी बताओ ।

३. रविवारीय समाचार पत्र से बाल कविताएँ पढ़ो ।

४. 'मैंने सबक सीखा' इस शीर्षक से अपने जीवन का कोई रोचक प्रसंग लिखो ।

५. अक्षर समूह में से खिलाड़ियों के नाम बताओ और लिखो ।

इ	ह	ना	सा	ल	वा	ने	
पा	वा	था	शि				
ह	को	ट	वि	ली	रा		
भि	व	अ	बिं	न	द्रा		
बी	जॉ	जू	र्ज	अं	बॉ		
नि	मि	सा	र्जा	या			
ना	आ	न	वि	थ	द	श्व	नं

उपक्रम/प्रकल्प

भारत की दस विशेषताओं को सुनाओ ।	अपने शब्द भंडार में कितने नए शब्द जोड़े बताओ ।	प्रति सप्ताह निबंध संग्रह से वर्णनात्मक निबंध पढ़ो ।	मासांत के दिन हिमालय की शिखरों के नामों की सूची बनाओ ।

दूसरी इकाई

सदैव ध्यान में रखें :

जीवन बहुमूल्य हैं, इसे बचाएँ ।
खाई में झाँककर, न व्यर्थ गवाएँ ।।

रास्ते में गाड़ी न करें खड़ी ।
दूसरों को होगी कठिनाई बड़ी ।।

अनुशासन, नियम सब मानेंगे ।
मजा तैरने का जानेंगे ।।

तैरना है सर्वोत्तम व्यायाम ।
आलस भगाएँ, पाएँ आराम ।।

पढ़ो:

बच्चो !

''जब मैं पाँचवीं कक्षा में था तब मेरी उम्र १० साल की थी । रामेश्वरम द्वीप में मेरे शिक्षक थे सुब्रह्मण्यम अय्यर । वे एक दिन हमें बता रहे थे कि पक्षी कैसे उड़ते हैं । सिर्फ पक्षी कैसे उड़े यही नहीं । मेरा भविष्य भी कैसा होना चाहिए वह भी उन्होंने मुझे सिखाया । उसके बाद मैं रॉकेट इंजिनियर बना । अंतरिक्ष विज्ञानी बना और अंत में राष्ट्रपति भवन तक पहुँचा । कहना यह है कि आपके जीवन में निश्चित ध्येय होना चाहिए ।

दूसरी बात पसीना बहाने की है । एक बार जब आप ध्येय तय कर लें तब आपको उसके लिए पसीना बहाना ही पड़ता है ।

तीसरी बात है, उसमें कई कठिनाइयाँ भी आएँगी किंतु आपको उससे डरना नहीं है । प्रश्न के ऊपर विजय प्राप्त करो, प्रश्न आपके ऊपर सवार नहीं होना चाहिए ।''

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

● देखो, बताओ और चर्चा करो :

१. विज्ञान प्रदर्शनी

❑ विद्यार्थियों से दिए गए चित्रों का निरीक्षण कराएँ । चित्रों में विद्यार्थी क्या-क्या कर रहे हैं? पूछें । विज्ञान से संबंधित उनका अपना पूर्वानुभव कहलाएँ । दिए गए वाक्यों पर चर्चा करें । अपने विद्यालय में मनाए गए विज्ञान दिवस संबंधी प्रश्नोत्तर पूछें ।

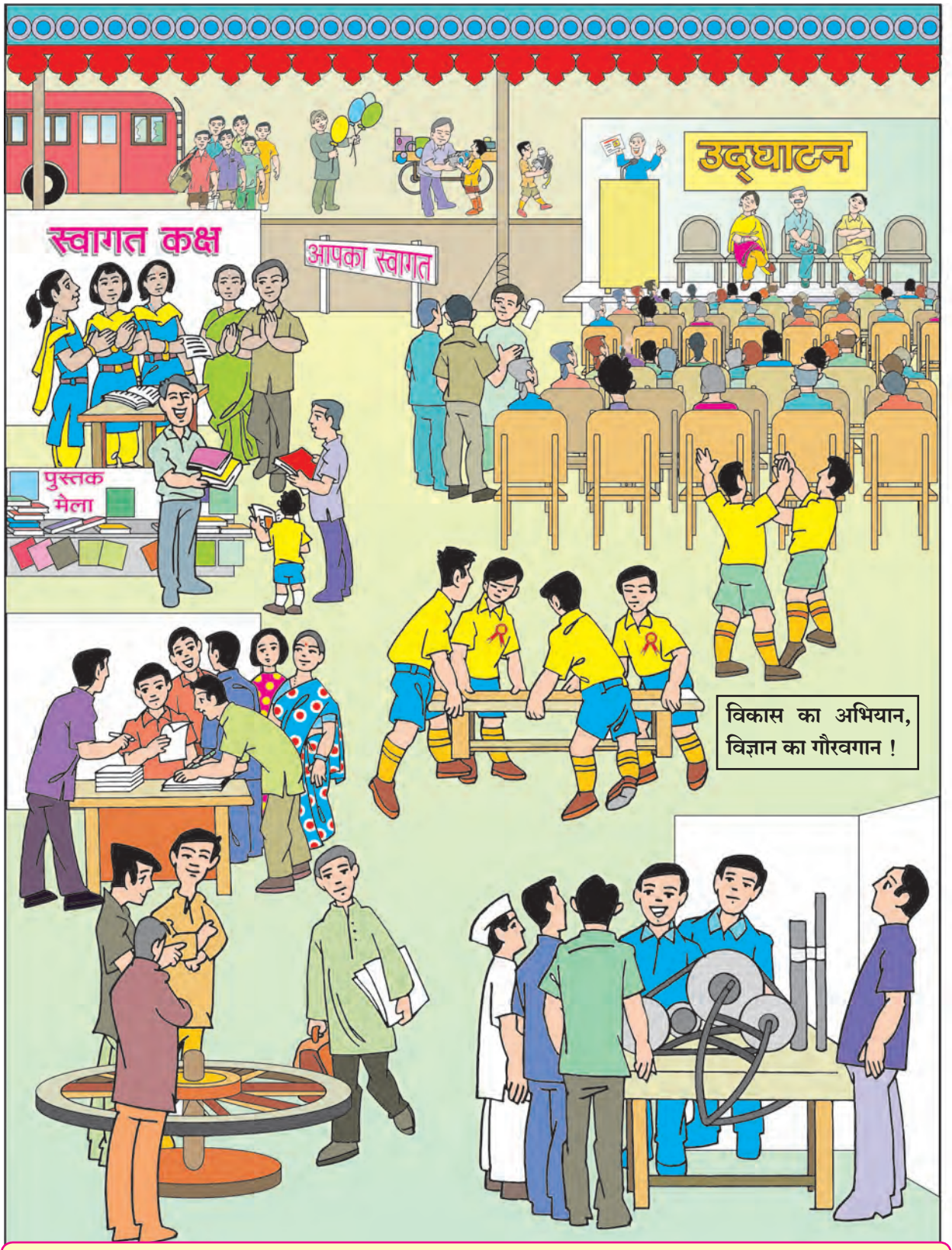

❑ विद्यालय की प्रयोगशाला संबंधी जानकारी प्राप्त करें । प्रयोगशाला में उपलब्ध विज्ञान-सामग्री के नाम पूछें । सामग्री की सूची बनवाएँ । विज्ञान से संबंधित कोई छोटा उपकरण बनाने के लिए प्रेरित करें तथा उसकी जानकारी बताने के लिए कहें ।

● सुनो, समझो और गाओ :

२. काटो खेताँ काटो रे!

–सुलेमान खतीब

जन्म : २६ दिसंबर १९२२ **मृत्यु :** २२ अक्तूबर१९७८ **रचनाएँ :** 'केवड़े का बन' **परिचय :**आपने दक्खिनी हिंदी में अनेक नाटक लिखे हैं। इस कविता में दक्खिनी हिंदी का प्रयोग किया गया है । कवि ने श्रमप्रतिष्ठा को महत्त्व देते हुए खेत से प्राप्त होने वाली संपत्ति एवं समृद्धि का गुणगान किया है ।

काटो खेताँ काटो रे,
घर–घर रोटी बाँटो रे ।

खून–पसीना पेरो रे,
अनाज के भुट्टे काटो रे ।

खेत में लछमी बोले रे,
सोना–चाँदी डोले रे ।

पाक पवन के पल्लों में,
मोती–मूँगे रोले रे ।

काटो खेताँ काटो रे,
घर–घर रोटी बाँटो रे ।

दुनिया न्हाटी न्हाटेंगे,
झाड़–झकोले छाँटेंगे ।

❑ विद्यार्थियों को हाव–भाव, लय–तालसहित कविता कक्षा में सुनाएँ । कविता में आए दक्खिनी हिंदी के शब्दों का उच्चारण एवं अर्थ समझाएँ । कविता का एकल, गुट एवं समूह में सस्वर पाठ कराएँ । कविता की साभिनय प्रस्तुति कराएँ ।

नदी-नाले पाटेंगे,
नई फसल काटेंगे ।

आँखों से आँसू पोछेंगे,
जगत में खुशियाँ बाँटेंगे ।

काटो खेताँ काटो रे,
घर-घर रोटी बाँटो रे ।

खून पसीना पेरो रे,
अनाज के भुट्टे काटो रे ।

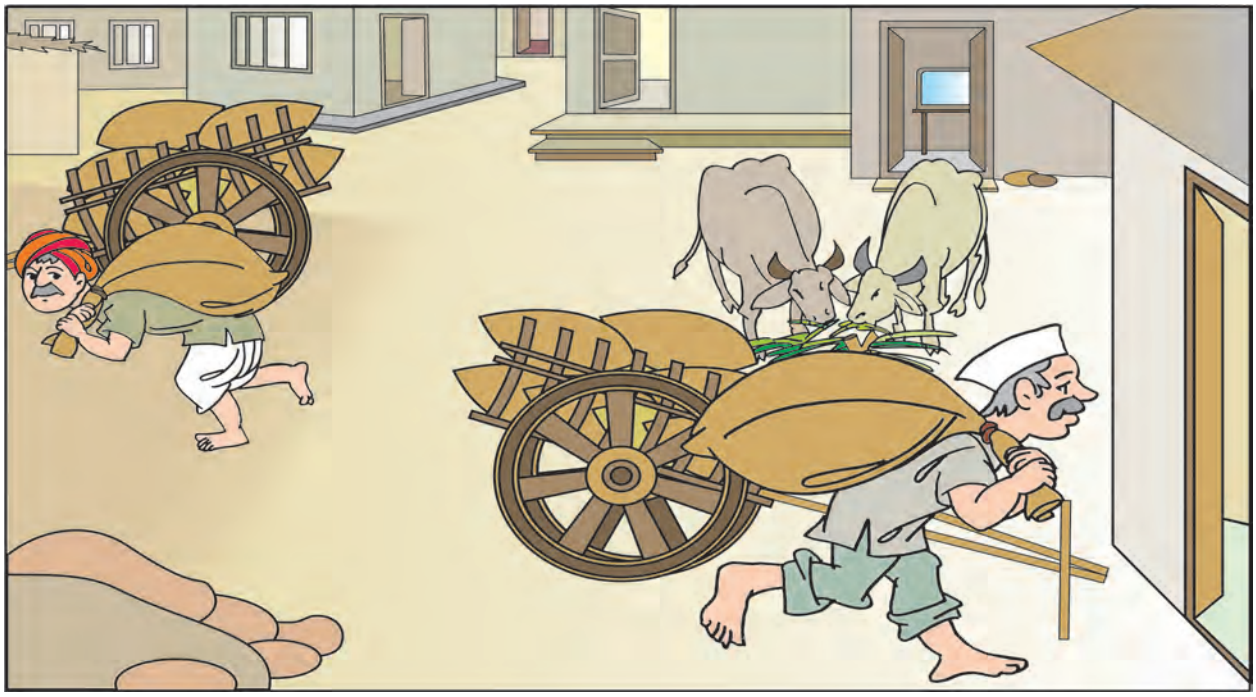

पढ़ो :

हिंदी भारत की भाषा है । भारत की गंगा-यमुनी संस्कृति की छाप हिंदी पर भी दिखाई देती है । हमारे देश में जितनी सरलता से नए विचार, सभ्यताएँ एवं संस्कृतियाँ रच-बस कर यहीं की हो गई हैं, वैसे ही हिंदी में भी देशी-विदेशी भाषाओं के अनेक शब्द घुल-मिलकर इसके अभिन्न अंग बन गए हैं । हिंदी भारत की आत्मा है ।

● सुनो, समझो और बताओ :

३. तीन लघुकथाएँ ।

–सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

जन्म : १८९९ **मृत्यु :** १९६१ **रचनाएँ :** 'जूही की कली', 'तुलसीदास', 'सरोजस्मृति', 'कुकुरमुत्ता' आदि कविताएँ । **परिचय :** आप आधुनिक हिंदी कविता के दिग्गज कवियों में से एक हैं । आप 'छायावाद' के आधारस्तंभ माने जाते हैं ।

प्रस्तुत लघुकथाओं में सजगता का महत्त्व, समय और धन का सदुपयोग तथा हर स्थिति को स्वीकार करें, यह सीख प्राप्त होती है ।

स्वयं अध्ययन

'ओरोगामी' की जानकारी प्राप्त करके उससे कोई एक वस्तु बनाओ और विधि लिखो । (जैसे: टोपी, पक्षी, प्राणी ।)

१. दो घड़े

एक घड़ा मिट्टी का बना था, दूसरा पीतल का । दोनों नदी के किनारे रखे थे । अचानक नदी में बाढ़ आ गई और बहाव में दोनों घड़े बहते चले गए । बहुत समय तक मिट्टी के घड़े ने अपने आप को पीतलवाले घड़े से काफी फासले पर रखना चाहा ।

पीतलवाले घड़े ने कहा, ''तुम डरो नहीं दोस्त, मैं तुम्हें धक्के नहीं लगाऊँगा ।''

मिट्टीवाले घड़े ने जवाब दिया, ''तुम जानबूझकर मुझे धक्के नहीं लगाओगे, सही है; मगर तेज बहाव के कारण हम दोनों जरूर टकराएँगे । अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारे लाख बचाने पर भी मैं तुम्हारे धक्कों से नहीं बच सकूँगा और मेरे टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे । इसलिए अच्छा यही है कि हम दोनों अलग-अलग रहें ।''

जिससे तुम्हारा नुकसान हो रहा हो, उससे अलग ही रहना अच्छा है । चाहे वह उस समय के लिए तुम्हारा दोस्त ही क्यों न हो ।

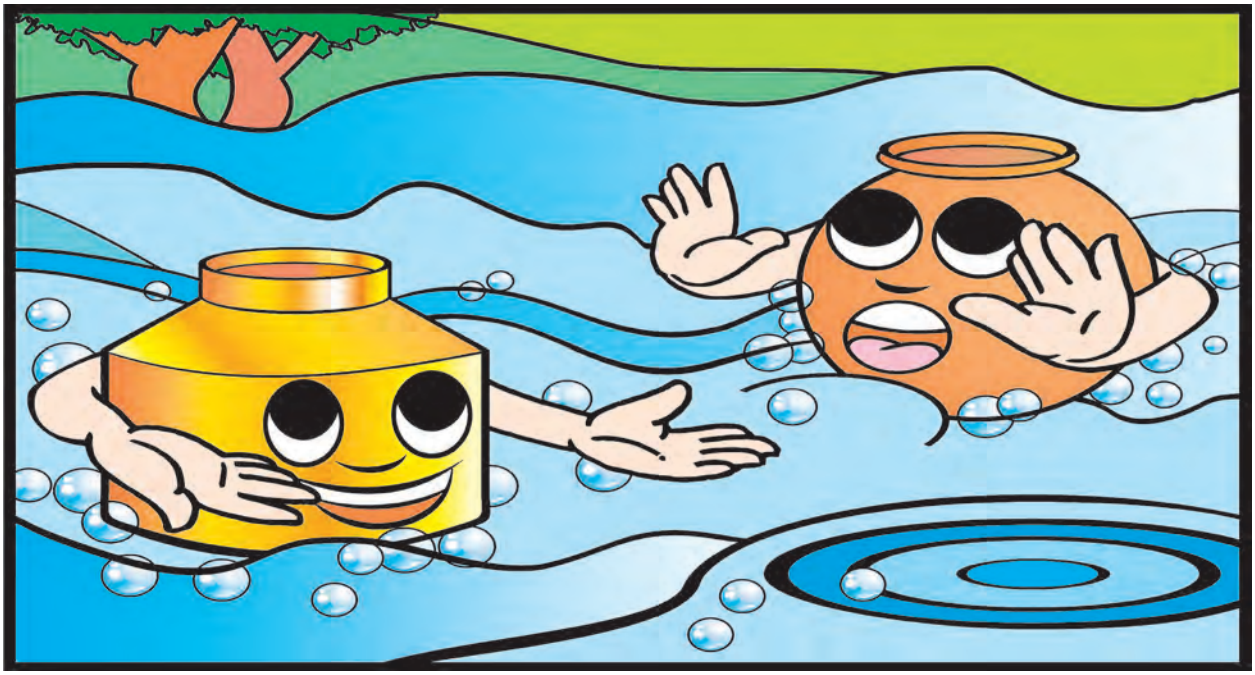

❑ तीनों लघुकथाओं को उचित आरोह-अवरोह के साथ सुनाएँ । विद्यार्थियों के गुट बनाकर एक-एक कहानी पढ़वाएँ । कहानियों को विद्यार्थियों से उनके अपने शब्दों में कहलवाएँ । 'विपरीत परिस्थितियों में सजगता' पर चर्चा करें ।

जरा सोचो तो ... बताओ

अगर पेड़-पौधे हमारी तरह चलने-फिरने लगे तो .....

२. कंजूस और सोना

एक आदमी था, जिसके पास काफी जमींदारी थी मगर दुनिया की किसी भी दूसरी चीज से सोने की उसे अधिक चाह थी इसलिए उसके पास जितनी जमीन थी, वह सारी जमीन उसने बेच डाली और उसे सोने के टुकड़ों में बदला। सोने के इन टुकड़ों को गलाकर उसने बड़ा गोला बनाया और उसे बड़ी हिफाजत से जमीन में गाड़ दिया। उस गोले की उसे जितनी परवाह थी, उतनी न बीवी की थी, न बच्चे की, न खुद अपनी जान की। हर सुबह वह उस गोले को देखने के लिए जाता और यह पता करना था कि किसी ने उसे हाथ तो नहीं लगाया; वह देर तक नजर गड़ाए उसे देखा करता था।

कंजूस की इस आदत पर एक आदमी की निगाह गई। जिस जगह वह सोना गड़ा था, धीरे-धीरे उसने वह जगह ढूँढ़ निकाली। आखिर में एक रात उसने गड़ा हुआ सोना निकाल लिया।

दूसरे रोज सुबह कंजूस अपनी आदत के अनुसार सोना देखने के लिए गया। जब उसे वह गोला दिखाई नहीं पड़ा तब उसका दिल ही बैठ गया।

उसके एक पड़ोसी ने उससे पूछा, ''इतना मन क्यों मारे हुए हो? असल में तुम्हारे पास कोई पूँजी थी ही नहीं फिर कैसे वह तुम्हारे हाथ से चली गई? तुम्हें सिर्फ एक भ्रम था कि तुम्हारे पास पूँजी थी। तुम अब भी यह सोच सकते हो कि वह पूँजी तुम्हारे पास है। सोने के उस पीले गोले की जगह उतना ही बड़ा पत्थर का एक टुकड़ा रख दो और सोचते रहो कि वह गोला अब भी मौजूद है। पत्थर का वह टुकड़ा तुम्हारे लिए सोने का गोला ही होगा, क्योंकि उस सोने से तुमने सोनेवाला काम नहीं लिया। अब तक वह गोला तुम्हारे काम नहीं आया। उससे आँखें सेंकने के सिवाय काम लेने की बात कभी तुमने सोची ही नहीं।''

यदि आदमी धन का सदुपयोग न करे तो उस धन की कोई कीमत नहीं।

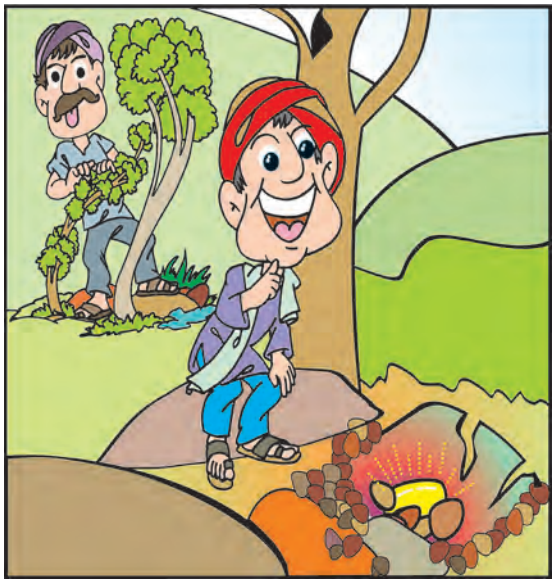

३. गधा और मेंढक

एक गधा लकड़ी का भारी बोझ लिए जा रहा था। वह एक दलदल में गिर गया। वहाँ मेंढकों के बीच से जाने लगा। रेंकता और चिल्लाता हुआ वह इस तरह साँसें भरने लगा, जैसे दूसरे ही क्षण मर जाएगा।

आखिर एक मेंढक ने कहा, ''दोस्त, जबसे तुम इस दलदल में गिरे हो, तभी से ऐसा ढोंग क्यों रच रहे हो? मैं हैरत में हूँ, जब से हम यहाँ हैं तब से ही तुम इस दलदल में होते तो न जाने क्या करते? हर बात को जहाँ तक हो, सँवारना चाहिए। हमसे भी बुरी हालतवाले दुनिया में हैं। इसे स्वीकार करो।''

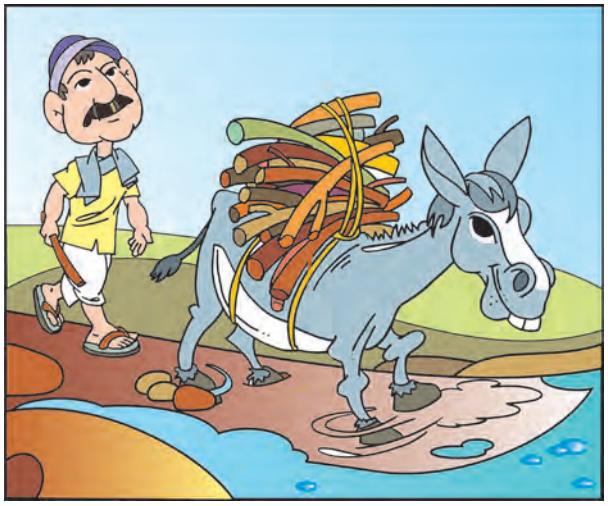

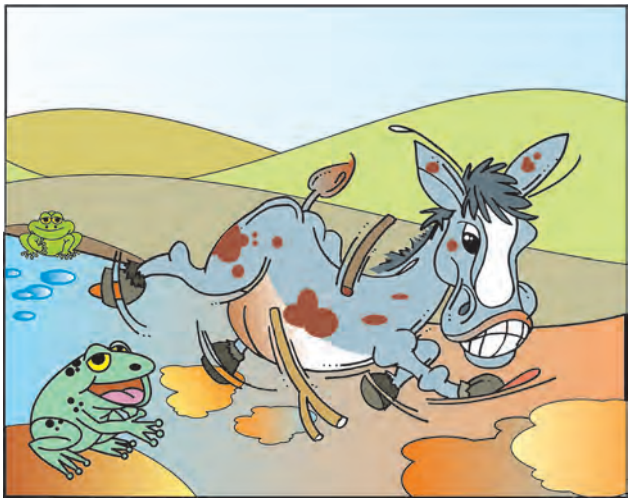

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

हिफाजत = सुरक्षा

पूँजी = धन, संपत्ति

हैरत = चकित

मुहावरे

दिल बैठना = निराश होना

मन मारना = इच्छा को दबाना

आँखें सेंकना = दर्शन सुख लेना

अध्ययन कौशल

किसी समाजसेवी महिला के जीवनी का अंश पढ़ो और महत्त्वपूर्ण घटनाएँ मुद्दों में लिखो।

सदैव ध्यान में रखो

हर एक का अपना अलग-अलग अस्तित्व होता है।

खोजबीन

कॉमिक्स का जनक कौन है ? अपने पसंदीदा कॉमिक्स के नामों की सूची बनाओ ।

सुनो तो जरा

कोई प्रेरक प्रसंग सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

तुम अपने भाई, बहन के लिए क्या करते हो ? बताओ ।

वाचन जगत से

'हैरी पॉटर' की कोई एक कहानी पढ़ो और किसी अंश का मुखर वाचन करो ।

मेरी कलम से

नैतिक मूल्यों पर आधारित सुवचनों का संकलन करो और कॉपी में लिखो ।

❊ एक शब्द में उत्तर लिखो ।

१. मिट्टी का घड़ा किस घड़े से दूर रहना चाहता था ?
२. कंजूस ने सोने के टुकड़ों से क्या बनाया ?
३. कंजूस ने सोने के गोले को कहाँ रखा था ?
४. दलदल में कौन गिर गया था ?

विचार मंथन

।। उथले जल ना मोती मिले गहरे पानी पैठ ।।

भाषा की ओर

चित्र देखकर निर्देशानुसार क्रियाओं से वाक्य बनाकर लिखो ।

सकर्मक क्रिया	अकर्मक क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया	सहायक क्रिया
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------
----------	----------	----------	----------

● **सुनो, समझो और बताओ :**

४ ऊर्जा आए कहाँ से?

इस संवाद में मानव को आवश्यक ऊर्जा संबंधी जानकारी दी गई है। जल, धन की बचत की ओर संकेत किया गया है साथ-ही-साथ सौर ऊर्जा का महत्त्व बताते हुए उसका उपयोग करने के लिए प्रेरित किया है।

स्वयं अध्ययन

दिए गए चित्रों के आधार पर उचित और आकर्षक विज्ञापन तैयार करो।

शिक्षक : बच्चो, क्या तुम जानते हो, मनुष्य को शारीरिक ऊर्जा कहाँ से प्राप्त होती है?

हर्ष : हाँ सर, ऊर्जा हमें भोजन से प्राप्त होती है।

शिक्षक : ठीक कहा। इसी ऊर्जा से मनुष्य शारीरिक और मानसिक कार्य करता है।

प्रियंका : सर, रेल गाड़ियों और मोटर गाड़ियों के इंजन के लिए कोयला और पेट्रोल से शक्ति प्राप्त होती है।

हर्ष : ये कोयला और पेट्रोल हमें कैसे प्राप्त होते हैं ?

शिक्षक : हर्ष, पेट्रोल और कोयले को जीवाश्मी ईंधन कहते हैं। यह जीवाश्मी ईंधन कोयला उन प्राणियों और पेड़ों के अवशेष हैं जो आज से करोड़ों वर्ष पहले जल या थल के किसी विनाशकारी भूकंप या समुद्री महाचक्रवात के शिकार हुए थे। पेड़-पौधे या बड़े-बड़े विशाल वृक्ष दल-दल में धँसने से और चट्टानों आदि के अत्यधिक दबाव के कारण पत्थर जैसे बन जाते हैं, इनको ही कोयला कहते हैं।

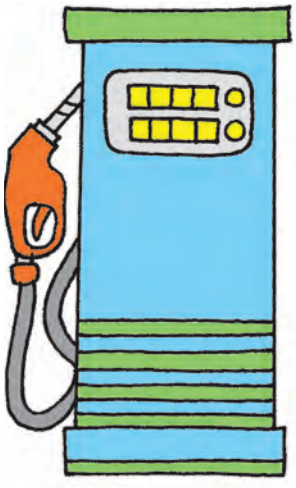

हर्ष : ये रेल गाड़ियाँ कैसे चलती हैं?

शिक्षक : आजकल कोयले की घटती मात्रा को देखते हुए अधिकांशत: बिजली से ही रेल गाड़ियाँ चलाई जा रही हैं।

❑ संवाद का आरोह-अवरोह एवं विरामचिह्नों सहित वाचन करें। प्रश्नोत्तर के माध्यम से ऊर्जा संबंधी विवरण को समझाएँ। ऊर्जा बचत संबंधी अपने अनुभव बताने के लिए प्रेरित करें। पारंपरिक एवं अपारंपरिक ऊर्जा उपकरणों की चित्रोंसहित सूची बनवाएँ।

प्रियंका : ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत कौन-कौन से हैं, ये कैसे हमें ऊर्जा प्रदान करते हैं ?

शिक्षक : ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत मुख्यत: जल, वायु और सूर्य हैं । सूर्य तो हमें उष्मीय और प्रकाशीय ऊर्जा नि:शुल्क प्रदान कर रहा है । पौधों को स्वयं का भोजन बनाने के लिए सूर्य की प्रकाशीय ऊर्जा की आवश्यकता होती है ।

हर्ष : सौर ऊर्जा और किस-किस तरह से उपयोगी है ?

शिक्षक : सोलर कुकर, पानी का हीटर आदि ऐसे उपकरण हैं जो सौर ऊर्जा पर आधारित हैं । सोलर कुकर, सौर हीटर बड़े होटलों तथा भवनों में खाना पकाने तथा गर्म पानी उपलब्ध कराने के लिए उपयोग में लाए जा रहे हैं । सौर ऊर्जा से विद्युत शक्ति उत्पादन की दिशा में कार्य तेजी से हो रहा है, जो सीधे सूर्य की ऊर्जा

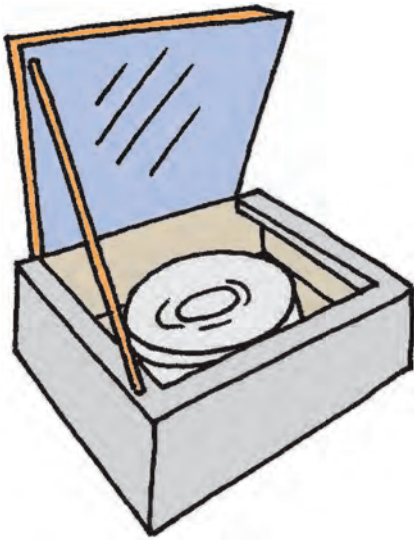

से विद्युत का निर्माण करते हैं ।

प्रियंका : सर, सवाल यह उठता है कि सोलर कुकर ऊर्जा के किस सिद्धांत पर कार्य करता है? क्या सोलर कुकर की रचना बहुत सरल होती है ?

शिक्षक : हाँ, प्रियंका, इसकी रचना अत्यंत सरल होती है । ऊपरी भाग में काला तल होता है जो आने वाली संपूर्ण सौर ऊष्मा को अवशोषित कर लेता है । उसमें साधारण काँच की पट्टी होती है जो संपूर्ण विकिरण का पारगमन करती है । कुकर के ऊपर ढक्कन वाले भाग में दर्पण लगा होता है, जिससे कुकर के काले

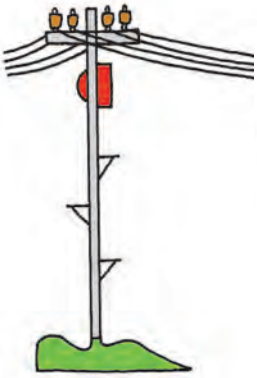

तल को अत्यधिक ऊष्मा की प्राप्ति होती है और कार्य तीव्रता से होता है ।

हर्ष : सर, पौधे सूर्य के प्रकाश में अपना भोजन कैसे निर्माण करते हैं?

शिक्षक : हर्ष, इसे प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कहते हैं, जिसके द्‌वारा ये अपना भोजन बनाते हैं । विभिन्न जीव-जंतु पौधों को भोजन के रूप में ग्रहण करके ऊर्जा प्राप्त करते हैं । इन्हीं पेड़-पौधों से सब्जियाँ और अनाज उत्पन्न होते हैं, जिन्हें ग्रहण कर मानव ऊर्जा प्राप्त करता है । अब, हम चर्चा को जारी रखते

हुए पवन ऊर्जा को ऊर्जा स्रोत के रूप में समझेंगे ।

प्रियंका : सर, पवन ऊर्जा का क्या अर्थ है?

शिक्षक : पवन भी ऊर्जा का ऐसा स्रोत है, जो नि:शुल्क ऊर्जा देता है । यह वातावरण को प्रदूषित नहीं करता। पवन चक्की, पवन ऊर्जा पर ही आधारित है । प्रियंका, पवन चक्की क्या है? इसका उपयोग बता सकती हो ?

हर्ष : क्यों नहीं सर, पवन चक्की कागज की फिरकी के समान है । देश में बहुत से स्थान ऐसे हैं, जहाँ पवन ऊर्जा का उपयोग पवन चक्कियाँ चलाने में किया जाता है । इसका उपयोग पानी निकालने और विद्‌युत पैदा करने में किया जाता है ।

शिक्षक : हर्ष, तुम इस विषय में और कुछ पूछना चाहते हो ?

हर्ष : हाँ सर, जैसा कि आपने बताया कि पवन ऊर्जा में किसी भी प्रकार की प्रदूषण की समस्या नहीं है, यह कैसे?

शिक्षक : यह कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन को कम करने की एक तकनीक है, जो ग्रीन हाऊस प्रभाव उत्पन्न करती है । कभी न समाप्त होने वाली यह पवन सुगमता से वातावरण में उपलब्ध रहती है तथा सूर्य की ऊर्जा से ये 'पवन ऊर्जा' सतत नवीकृत होती रहती है ।

प्रियंका : सर, 'जल' से किस तरह ऊर्जा प्राप्त होती है ?

शिक्षक : बहता हुआ पानी ऊर्जा का स्रोत है । यह भी वातावरण को प्रदूषित नहीं करता । जब नदियाँ बहती हैं, तब वे अपने साथ मिट्‌टी और रेत को बहा ले जाती हैं, जो ऊर्जा का स्रोत कहलाती हैं ।

हर्ष : सर, मैं यह जानना चाहता हूँ कि जल द्‌वारा विद्‌युत का निर्माण कैसे होता है ?

शिक्षक : अच्छा सवाल किया तुमने, विभिन्न बिजलीघरों में पानी, बाँध पर इकट्‌ठा कर लिया जाता है । इसके नीचे टर्बाइन पवन से नहीं चलती । जब पानी ऊँचाई से गिरता है तब वह इन टर्बाइनों को घुमाता है,

घूमती हुईं टर्बाइनें विद्युत उत्पन्न करती हैं ।

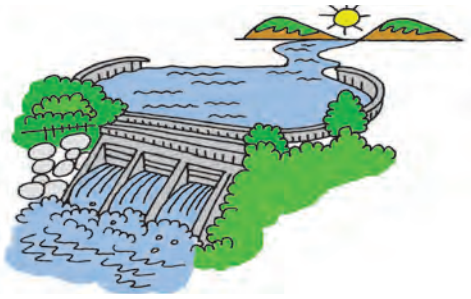

शिक्षक : सर परमाणु ऊर्जा क्या होती है? क्या हमारे देश में भी ऐसी ऊर्जा निर्मित होती है ।

शिक्षक : हाँ, हर्ष अच्छा प्रश्न पूछा तुमने । मुंबई में स्थित 'भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र' में परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में नित नई खोजों पर अनेक कार्य हो रहे हैं ।

हर्ष : वहाँ क्या-क्या होता है ?

शिक्षक : कनाडा के सहयोग से वहाँ अप्सरा, जटलीन, पूर्णिमा, ध्रुव आदि भट्ठियों का निर्माण किया गया है जिनका उपयोग कृषि, चिकित्सा, उद्योग, भू-विज्ञान, भौतिकीय अध्ययन और पर्यावरण प्रदूषण मापने आदि में होता है । परमाणु ऊर्जा विश्व में खनिज ईंधनों की आपूर्ति में कमी ही नहीं, बल्कि पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा एवं अपारंपरिक ऊर्जा स्रोतों की भविष्य में होने वाली कमी भी वर्तमान में परमाणु ऊर्जा के महत्त्व को सार्थक सिद्ध कर रही है ।

हर्ष : सर, कोयला, तेल, प्राकृतिक गैस जैसे ऊर्जा संसाधनों के समाप्त हो जाने के संकट के निवारण का कोई तरीका तो होगा ?

शिक्षक : हाँ, बिलकुल है। हमें इन ईंधनों का उपयोग तब करना चाहिए जब और कोई विकल्प न हों । हमें ऐसी तकनीकों का विकास करना चाहिए, जिनके द्वारा हम सूर्य तथा जैव द्रव्यमान जैसे ऊर्जा स्रोतों से ऊर्जा प्राप्त कर सकें। हममें से प्रत्येक का यह प्रयास होना चाहिए कि ऊर्जा का अपव्यय न हो ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

अवशोषित = सोखा हुआ

विकिरण = अनेक किरणों का एक बिंदु पर केंद्रित होना

पारगमन = पार पहुँचाना

उत्सर्जन = त्याग

सदैव ध्यान में रखो

प्राकृतिक संपत्ति का प्रयोग नियंत्रित एवं आवश्यकतानुसार करना चाहिए ।

स्वयं अध्ययन

सौर ऊर्जा पर चलने वाले उपकरणों के नाम बताओ और ऊर्जा के उपयोगों की सूची बनाओ ।

खोजबीन

देश-विदेश की मुद्राओं के नाम ढूँढ़कर लिखो ।

सुनो तो जरा

रेडियो पर दिए जाने वाले शिक्षा संबंधी विज्ञापन सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

पारंपरिक ऊर्जा के सभी साधन समाप्त हो जाएँ तो ... बताओ ।

वाचन जगत से

समाचार पत्र से खेल समाचार पढ़ो और किसी महीने के खेल समाचारों का संकलन करो ।

मेरी कलम से

दादी जी का 'जन्मदिन' मनाने के कार्यक्रम का लिखित नियोजन करो ।

❊ सही गलत चिह्न लगाओ ।

१. मनुष्य को भोजन से ऊर्जा प्राप्त होती है ।
२. रेल गाड़ी को पेट्रोल से शक्ति प्राप्त होती है ।
३. सोलर कुकर, पानी का हीटर पवन ऊर्जा के उदाहरण हैं ।
४. 'भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र' मुंबई में स्थित है ।

विचार मंथन

।। सौर ऊर्जा, अक्षय ऊर्जा ।।

भाषा की ओर

विशेषणों के भेदों के आधार पर चींटियों के संवाद को कोष्ठक में दिए गए विशेषणों की सहायता से लिखो ।
(यह, वह, पीला, मीठा, कुछ, थोड़ा, चार)

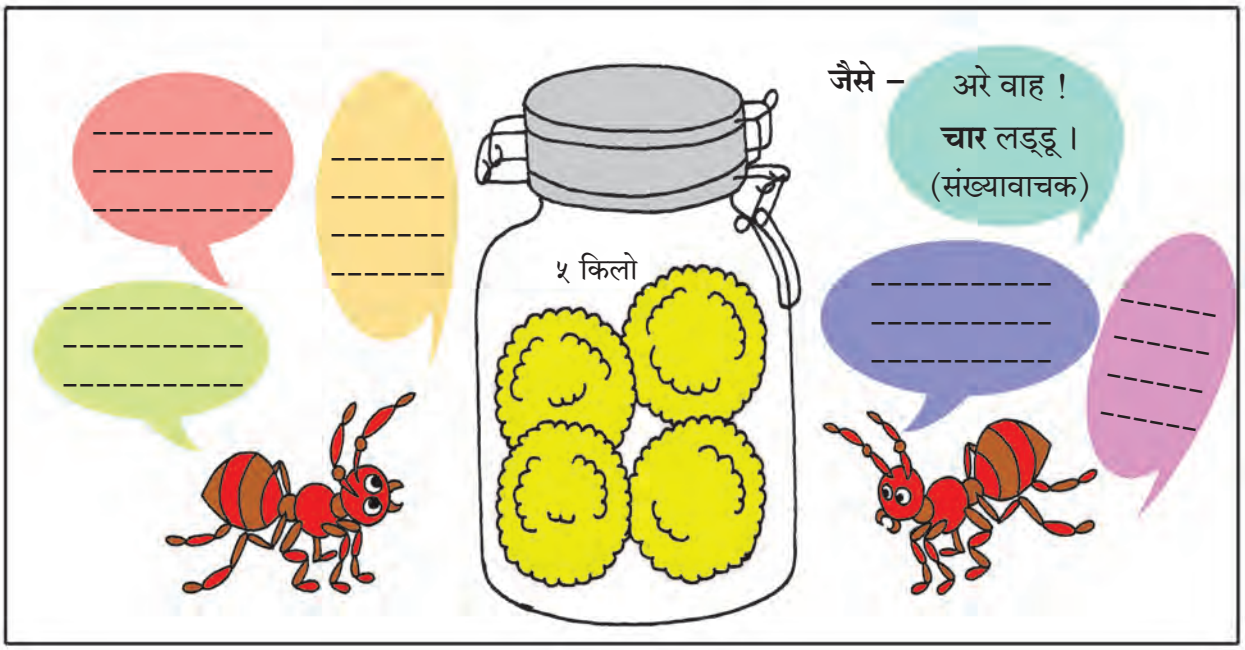

● सुनो, समझो और लिखो :

५. मेरा भाग्य देश के साथ

-डॉ. राजेंद्र प्रसाद

जन्म : ३ दिसंबर १८८४ **मृत्यु :** २८ फरवरी १९६३ **रचनाएँ :** 'आत्मकथा' परिचय : डॉ. राजेंद्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे । इस पत्र में लेखक डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने अपनी देशभक्ति एवं देशसेवा के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित करने की भावना बड़े भाई के पास व्यक्त की है ।

जरा सोचो तो ... बताओ

यदि कहानी के किसी एक पात्र से आपकी मुलाकात हो जाए तो ...

राजेंद्र प्रसाद
कलकत्ता
१.३.१९१०
मंगलवार

पूज्य भाई महेंद्र प्रसाद जी,

विनम्र अभिवादन !

आप एक ऐसे व्यक्ति के पत्र को पाकर आश्चर्य चकित होंगे, जो यहाँ आपके साथ दिन-रात बिता रहा है । मैंने अनेक बार अपने मन की बातें आपसे कहने का विचार किया । पर एक भावुक व्यक्ति होने के नाते मैं आमने-सामने आपसे बातें नहीं कर सका ।

मेरे भैया, पिछले लगातार २० दिन तक सोचते रहने के बाद मैं समझता हूँ कि मेरे लिए यही अच्छा होगा कि मैं अपने भाग्य को देश के साथ मिला दूँ । मैं जानता हूँ कि मुझसे-जिसपर परिवार की सारी आशाएँ केंद्रीभूत हैं-ऐसी बातें सुनकर आपके हृदय को एक भारी धक्का लगेगा । लेकिन मेरे भैया, मैं एक उच्चतर और महत्तर पुकार को भी अपने हृदय से महसूस करता हूँ ।

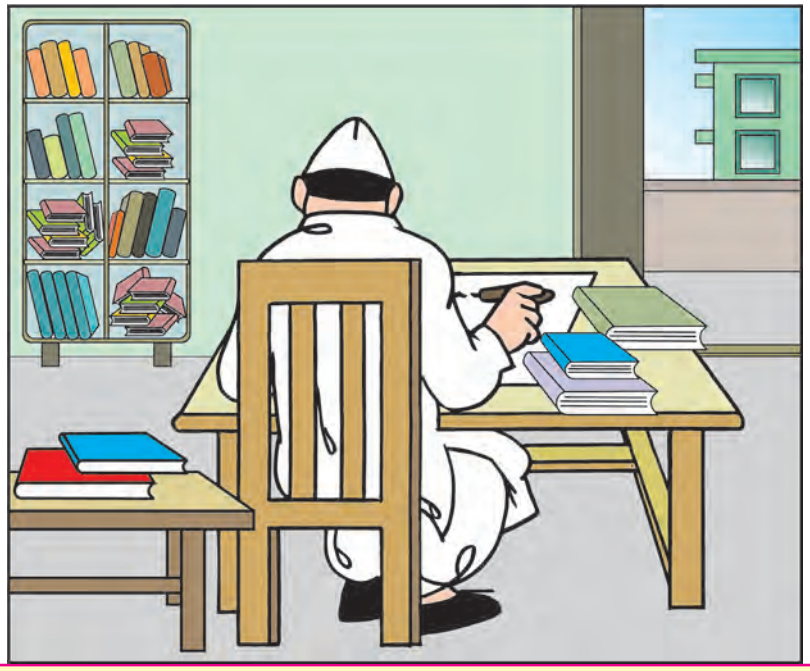

❑ विद्यार्थियों से पत्र का मुखर वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से अनौपचारिक पत्र लेखन का प्रारूप समझाएँ । पत्र के आशय पर चर्चा करें । देशसेवा संबंधी अपने विचार बताने के लिए कहें । उन्हें अपने किसी मित्र को बधाई पत्र लिखने के लिए कहें ।

हाँ, मैं यह भी जानता हूँ कि यदि मैं पैसे कमाऊँ तो कुछ रुपया हासिल कर पाऊँगा । इसके द्वारा मैं अपने परिवार का स्तर ऊँचा करने में भी समर्थ होऊँगा, जहाँ लोग अपनी लंबी थैली के कारण ही बड़े गिने जाते हैं, अपने विशाल हृदय के कारण नहीं । लोग समझते हैं कि धन पाकर हम संतुष्ट होंगे पर जिन्हें कुछ भी ज्ञान है वे अच्छी तरह जानते हैं कि सुख बाह्य कारणों से नहीं मिलता बल्कि वह तो हृदय की उपज है ।

मेरे भैया, आप विश्वास रखें कि यदि मेरे जीवन में कोई महत्त्वाकांक्षा है तो वह यही है कि मैं देशसेवा में काम आ सकूँ । मैं जानता हूँ कि मैं प्रति मास कई सौ रुपये कमाऊँगा, कई हजार रुपये महीने भी हो सकते हैं । पर क्या दुनिया में ऐसे अनगिनत व्यक्ति नहीं हैं जिनके पास हजारों, लाखों और करोड़ों की पूँजी है, पर उनकी कोई परवाह नहीं करता लेकिन दूसरी ओर दृष्टि डालें, तो कौन-सा राजकुमार है जिसे गोपाळ कृष्ण गोखले के समान प्रभाव, पद या मर्यादा प्राप्त हुई है ? और क्या वे गरीब आदमी नहीं हैं ? क्या हम गोखले जी के परिवार से भी ज्यादा गरीब हैं ? अगर लाखों व्यक्ति दो या तीन रुपये महीने से काम चला लेते हैं तो हम लोग भला सौ रुपये से क्यों नहीं चला सकते ?

मेरे भाई, इसपर विचार करें और अपनी राय बताएँ । आप दुनिया के समक्ष यह साबित कर दें कि आज भी दुनिया में ऐसे मनुष्य हैं जिनके लिए रुपये-पैसे तुच्छ वस्तु हैं और जिनके लिए देशसेवा ही सब कुछ है ।

मैं अपनी पत्नी को भी इसके संबंध में लिख रहा हूँ । मैं माता जी को नहीं लिख सकता । वृद्धावस्था में उन्हें इससे भारी कष्ट पहुँच सकता है ।

आपका प्यारा,
राजेंद्र

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

केंद्रीभूत = केंद्र में इकट्ठा
धक्का लगना = चोट लगना
महत्तर = महत्वपूर्ण
हासिल = प्राप्त

अध्ययन कौशल

अपने विद्यालय संबंधी जानकारी देने वाला स्थल दर्शक फलक गुट में बनाओ ।

स्वयं अध्ययन

'क्रांति दिन' समारोह की आकर्षक कार्यक्रम पत्रिका बनाओ ।

खोजबीन

भारत की महान विभूतियों के नाम एवं कार्यसंबंधी लिखित जानकारी प्राप्त करो ।

सुनो तो जरा

परिपाठ में सुनी हुई नीति कथा अपने घर में सुनाओ ।

बताओ तो सही

पत्र के बदलते स्वरूप कौन-से हैं ? अंतरजाल की सहायता से ढूँढ़ो और बताओ ।

वाचन जगत से

हितोपदेश की कोई कहानी पढ़ो और कहानी की सीख लिखो ।

मेरी कलम से

शालेय सूचना फलक पर लिखने के लिए दिनविशेष की जानकारी अपनी कॉपी में लिखो ।

⁂ रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

१. मैं अपने भाग्य को ..... के साथ मिला दूँ ।
२. लोग समझते हैं कि ..... पाकर हम संतुष्ट होंगे ।
३. क्या हम ..... जी के परिवार से भी ज्यादा गरीब हैं ?
४. ..... में उन्हें इससे भारी कष्ट पहुँच सकता है ।

विचार मंथन

।। स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन, योगासन है उत्तम साधन ।।

सदैव ध्यान में रखो

भाषा 'भाव और विचारों' के आदान-प्रदान का प्रभावी साधन है ।

भाषा की ओर

नीचे दिए गए चित्रों में लिखे हुए वाक्य पढ़ो, उनमें अव्ययों के प्रकार एवं शब्द पहचानकर उचित स्थान पर लिखो ।

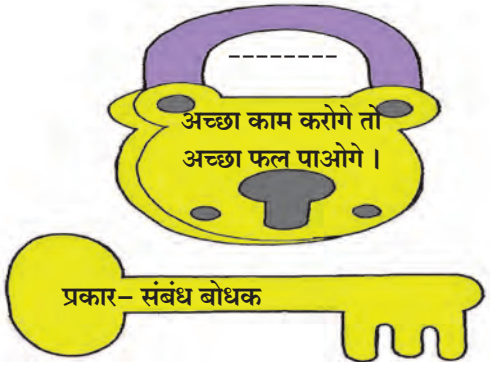

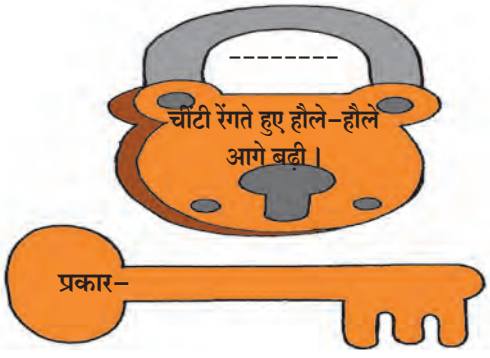

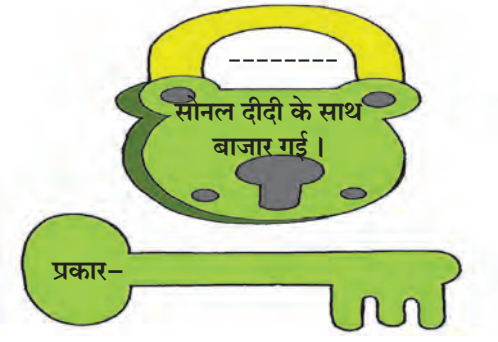

★★★★★ ६. हमारे परमवीर ★★★★★

तुमने दंतकथाओं में वीरों की शूरता के बहुत से किस्से सुने होंगे । हमारी सुरक्षा के लिए प्राणों का बलिदान करनेवाले सैनिक आज भी हमारे देश में हैं। इस वीरता के लिए उन्हें पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया जाता है । भारतीय सेना का सर्वोच्च अलंकरण 'परमवीर चक्र' है । दुश्मन के साथ जूझते हुए जो सैनिक उच्च कोटि की वीरता एवं त्याग दिखाते हैं, उन्हें 'परमवीर चक्र' प्रदान करके उनकी वीरता को नमन किया जाता है । थलसेना, जलसेना और वायुसेना इन तीनों दलों के सैनिक और अधिकारी इस अलंकरण से अलंकृत होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं । परमवीर चक्र अत्यंत दुर्लभ है जिसे आज तक केवल इक्कीस बार ही प्रदान किया गया है। उनमें से चौदह पुरस्कारार्थियों को मरणोपरांत यह पुरस्कार प्रदान किया गया है ।

साधारण दिखाई देना वाला यह मेडल ब्रांज धातु से बनाया गया है । उसे एक घुमाऊँ मढ़ाई पर बिठाया गया है। एक बैंगनी रंग का सादा फीता उसमें लगाया है। इसके अग्रभाग के मध्य में भारतीय राष्ट्रीय चिह्न है । पिछले भाग पर 'परमवीर चक्र' ये शब्द हिंदी और अंग्रेजी में अंकित किए गए हैं तथा बीचोंबीच कमल के दो फूल हैं । क्या, तुम जानते हो कि सावित्रीबाई खानोलकर जी नाम की एक विदेशी महिला ने यह परमवीर चक्र अभिकल्पित किया है? जी हाँ, वे एक युरोपियन महिला थीं ! उन्होंने विक्रम खानोलकर जी से विवाह किया था। विक्रम खानोलकर जी सेना में अफसर थे । सावित्रीबाई को भारत से इतना लगाव हो गया कि उन्होंने भारतीय नागरिकता स्वीकार कर ली थीं । मराठी, संस्कृत और हिंदी इन तीनों भाषाओं में आप धाराप्रवाह रूप में बोल सकती थीं। उन्होंने भारतीय कलाओं और परंपराओं का भी गहन अध्ययन किया था ।

ऐसा माना जाता है कि इंद्रदेवता का वज्र अपराजेय शस्त्र है । तथापि वज्र को अजेय शस्त्र बनाने के पीछे दधीचि मुनि का सर्वोच्च त्याग है ।

एक प्राचीन दंतकथा के अनुसार हजारों वर्ष पहले संसार का सारा जल किसी दैत्य ने चुरा लिया था। जल के अभाव में निरपराध जन त्रस्त होकर मरने लगे । आश्चर्य की बात यह थी कि वह दैत्य किसी भी साधारण पदार्थ से बने शस्त्र से पराजित होता ही नहीं था, चाहे वह लकड़ी से बना हुआ हो या किसी धातु से! उसे पराजित करने के लिए इन सबसे अलग एक असामान्य शक्ति की आवश्यकता थी। ऐसी स्थिति में यह ज्ञात हुआ कि दधीचि मुनि की अस्थियों में अभूतपूर्व शक्ति संचारित है । यदि इन अस्थियों से कोई शस्त्र निर्मित किया जाए तो वह शस्त्र उस असुर को पराजित कर सकता है!

भला किसी जीवित व्यक्ति से उसकी अस्थियों की माँग की जा सकती है? असंभव! पर... ।

दधीचि मुनि अत्यंत उदार मनोवृत्ति के सज्जन व्यक्ति थे । उन्होंने स्वेच्छा से, सहर्ष जीवनदान कर अपनी अस्थियाँ प्रदान कर दीं जिनसे इंद्रवज्र का निर्माण किया गया । इसी से उस दैत्य को पराजित किया गया ।

२१ परमवीर चक्र विजेता

★ मेजर सोमनाथ शर्मा

★ लांस नायक करम सिंह

★ सेकेंड लेफ्टिनेंट राम राघोबा राणे

★ नायक जदुनाथ सिंह

★ कंपनी हवलदार मेजर पीरू

★ कैप्टन गुरुबचन सिंह सलारिया

★ मेजर धन सिंह थापा

★ सूबेदार जोगिंदर सिंह

★ मेजर शैतान सिंह

★ कंपनी क्वॉर्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद

★ लेफ्टिनेंट कर्नल अरदेशीर बुरसोर जी तारापोर

★ लांस नायक अल्बर्ट एक्का

★ सेकेंड लेफ्टिनेंट अरुण क्षेत्रपाल

★ मेजर होशियार सिंह

★ नायब सूबेदार बाना सिंह

★ मेजर रामास्वामी परमेश्वरन

★ लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडे

★ ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव

★ रायफल मैन संजय कुमार

★ कैप्टन विक्रम बत्रा

★ फ्लाईंग ऑफिसर निर्मलजीत सेखाँ

फ्लाईंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह सेखाँ
१०८७७ एफ (पी) पीवीसी
स्क्वॉड्रन क्र. १८

१४ दिसंबर १९७१। फ्लाईंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह अपनी ड्यूटी पर बिलकुल तत्पर थे कि अचानक दुश्मन के छह लड़ाकू सेबरजेट वायुयान श्रीनगर पर टूट पड़े। निर्मलजीत सिंह शत्रु के उन वायुयानों की ओर उड़ान भरना चाहते थे लेकिन उसी समय किसी दूसरे वायुयान के उड़ान भरने से धूल उठी। जैसे ही रन-वे साफ हुआ दुश्मन के छह लड़ाकू वायुयान सिर पर मँडराते हुए दिखाई दिए। वे गोलाबारी और बमवर्षा कर रहे थे। देखते ही देखते लड़ाई शुरू हो गई थी, छह के विरुद्ध एक।

फिर भी निर्मलजीत सिंह ने आकाश में उड़ान भरी। कमाल की बात तो यह थी कि उन्होंने दो सेबरजेटों को तहस-नहस कर डाला। तुरंत उन्होंने दुश्मन के बाकी चार वायुयानों से लड़ाई छेड़ी। यह एक पूर्णत: विषम लड़ाई थी, चार के विरुद्ध एक! वह भी पेड़ जितनी ऊँचाई पर!! अंत में शत्रु के लड़ाकू विमान युद्ध क्षेत्र से भाग गए। श्रीनगर बच गया। लेकिन दुर्भाग्य! इस लड़ाई में फ्लाईंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह का विमान भी टूट चुका था और वे शहीद हो चुके थे!

वस्तुत: फ्लाईंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह को मौत बिलकुल सामने साक्षात दिख रही थी फिर भी उन्होंने जो दृढ़ इरादा और सर्वोत्तम उड़ान कौशल दिखाया वह सचमुच अपने-आप में बेमिसाल है। उन्होंने मात्र कर्तव्य परायणता ही नहीं दिखाई अपितु उससे भी ऊपर उठकर अतुलनीय पराक्रम कर दिखाया, जो अपने आप में एक उच्च कोटि का उदाहरण बन गया है। ऐसे शूरों के सरताज फ्लाईंग ऑफिसर शहीद निर्मलजीत सिंह को हमारा सम्मानपूर्वक अभिवादन!

तुम इंटरनेट पर (wwwparamvirchakra.com) उनके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हो, जिन्होंने अपना जीवन देश की सेवा में समर्पित कर दिया। इन बहादुरों ने अपने जीवन की परवाह किए बिना शत्रु का सामना किया। इनकी प्रेरक जानकारी जरूर खोजो; पढ़ो और ध्यान में रखो।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

अपराजेय = जिसे कोई पराजित नहीं कर पाया

वज्र = कठोर, शस्त्र

अभिकल्पित = आकार दिया

अतुलनीय = जिसकी तुलना न की जा सके

खोजबीन

भारतीय नौसेना के जहाजों की सूची बनाओ ।

स्वयं अध्ययन

माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'पुष्प की अभिलाषा' के आशय को चित्र रूप में दर्शाओ और कविता सुनाओ ।

सुनो तो जरा

किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का भाषण सी.डी. से सुनो और उसका महत्त्वपूर्ण अंश परिपाठ में सुनाओ ।

बताओ तो सही

बाढ़पीड़ितों की सहायता कैसे करोगे? इसकी रूपरेखा बनाओ ।

वाचन जगत से

किसी अंतरिक्ष यात्री का अनुभव पढ़ो और सुनाओ ।

मेरी कलम से

२६ जनवरी को दूरदर्शन पर दिखाए गए राष्ट्रीय कार्यक्रम का वर्णन लिखो ।

❊ उचित पर्याय चुनकर वाक्य पूर्ण करो ।

१. परमवीर चक्र ..... धातु से बनाया गया है ।
(सोना/चाँदी/ब्रांज/पीतल)

२. परमवीर चक्र के बीचोंबीच कमल के ..... फूल हैं ।
(एक/दो/तीन/चार)

३. दधीचि मुनि की अस्थियों से ..... बनाया गया ।
(इंद्रवज्र/वज्रइंद्र/वज्र/अस्थिवज्र)

४. बड़ी ही वीरता से निर्मलजीत सिंह ने ..... को बचाया ।
(श्रीनगर/कश्मीर/देश)

जरा सोचो तो ... बताओ

अगर तुम्हें विज्ञानलोक की सैर करने का अवसर मिले तो .....

सदैव ध्यान में रखो

देशसेवा के लिए हमें सदैव तत्पर रहना चाहिए ।

विचार मंथन

।। शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले ।।

अध्ययन कौशल

सेना में परमवीर चक्र के अतिरिक्त और कौन-कौन-से पुरस्कार दिए जाते हैं, खोजो ।

● **सुनो, समझो और बताओ :**

७. बूझो तो जानो

१. रेलगाड़ी छुक-छुक दौड़े स्टेशन से स्टेशन, सोचो बताओ किसने बनाया प्रथम भाप का इंजन ?

२. स्विच छुओ रोशन हो घर और चमके मोड़ गली का, किसकी खोज स्वरुप बना था प्रथम बल्ब बिजली का ?

३. कुछ घंटों में उड़कर दूजे देश को जाते आज, किन भ्राताओं ने मिलकर बनाया प्रथम हवाई जहाज ?

४. पागल कुत्ता काटे दौड़ो, ना फैले इन्फेक्शन, किस वैज्ञानिक ने खोजा था रैबीज का इंन्जेक्शन ?

५. खबरें देखें, क्रिकेट देखें, घर में बैठे सब जन, किस आविष्कारक ने दिया दुनिया को टेलीविजन ?

६. लेंस लगी लंबी नलिका जैसे हो कोई तोप, किसने यह ब्रह्मांड दिखाया बना के टेलिस्कोप ?

७. किसने ऐसी लिपि बनाई, जिससे नेत्रहीन करें पढ़ाई ?

* निम्न चौखट में पहेलियों के उत्तर ढूँढो । जैसे :- जेम्स वॉट

* चौखट में कुछ ऐसे भी वैज्ञानिक हैं जिनका उल्लेख पहेलियों में नहीं आया है । उनके नाम ढूँढ़ो ।

वि	ज	य	*	हो	जे	म्स	वॉ	ट
लु	दया	यं	मी	उ	भी	ख	डे	
ई	*	भा	त	र्ड	ए	धु	न	*
पा	भा		य	ना	बं	डि	ल	म
श्च	चे	बे	य	ट	र	ब्रे	स	यो
र	एल	बे	ई	छ	ई	ळी	ली	न
जे	व	रा		लु		लि	क	*
जे	क	म	दि	भा	गै	प		र

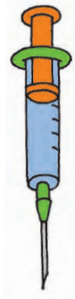

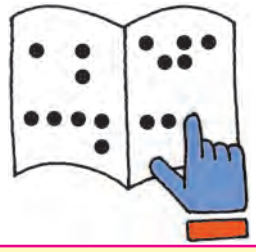
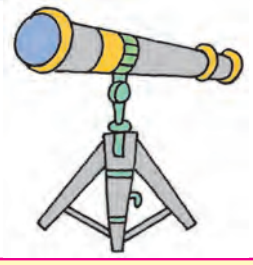

❑ कक्षा में विद्यार्थियों से पहेलियाँ बुझवाएँ । साथ में दिए चौखट में पहेलियों के उत्तर ढूँढ़ने के लिए कहें । अन्य पहेलियाँ सुनाएँ । विद्यार्थियों द्वारा पहेलियों का संग्रह तैयार करवाएँ । कक्षा में 'पहेलियाँ बूझो मंच' का आयोजन करें ।

● सुनो, समझो और गाओ :

८. आह्वान

-देवेंद्र आर्य

इस कविता में कवि ने आने वाली प्रत्येक परिस्थिति का निडर होकर सामना करने की प्रेरणा दी है ।

अध्ययन कौशल

कविता में आए कठिन शब्दों के अर्थ वर्ण क्रमानुसार शब्दकोश में ढूँढ़ो और लिखो ।

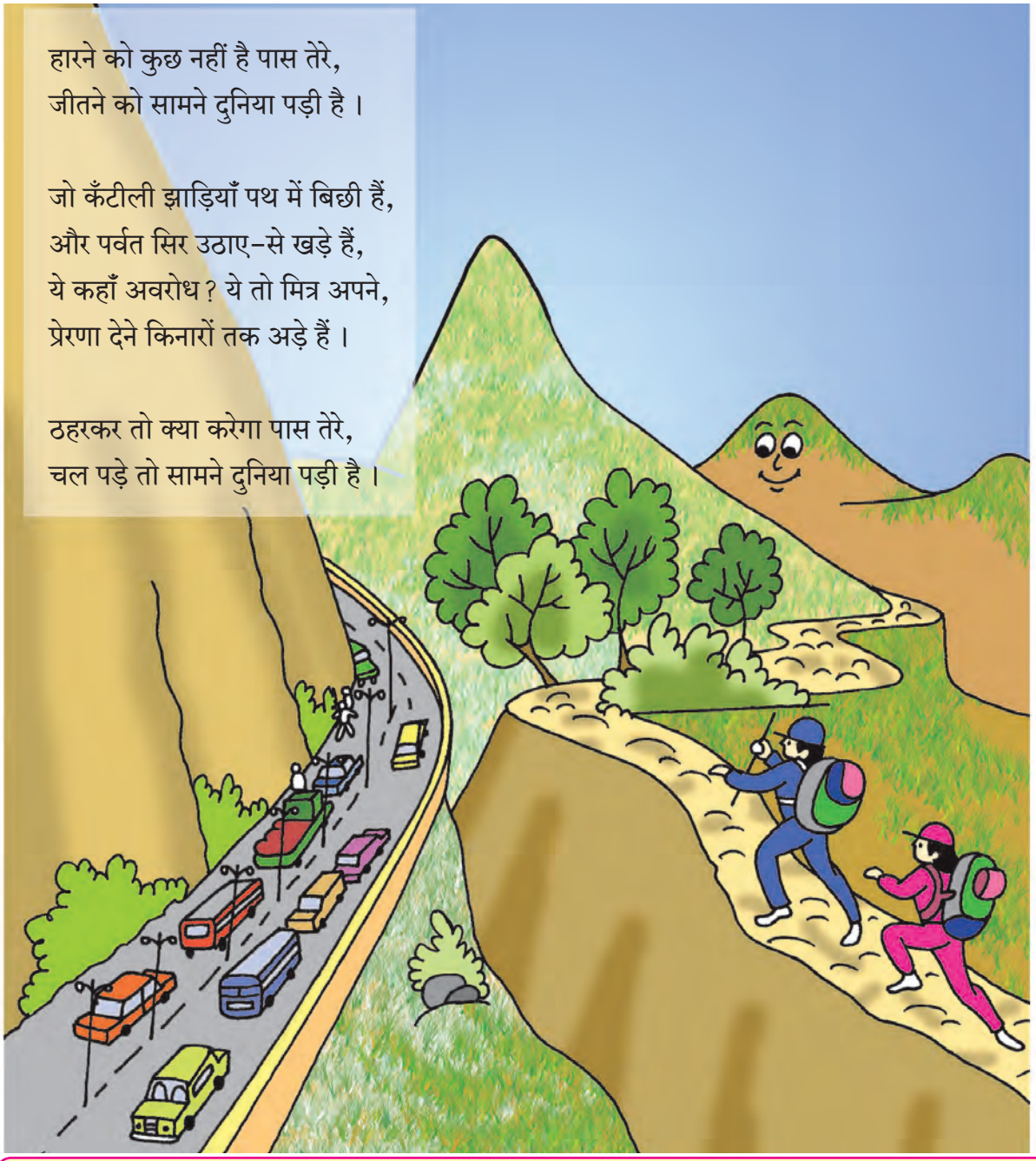

❑ उचित आरोह-अवरोह, हाव-भाव के साथ कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से एकल एवं गुट में पाठ कराएँ । कविता में आए भावों पर प्रश्नोंत्तर के माध्यम से चर्चा करें । विषम परिस्थितियों में भी अपना कार्य पूरा करने के लिए प्रेरित करें ।

सदैव ध्यान में रखो

धैर्य के साथ हौसला रखते हुए मुसीबतों का सामना करना चाहिए ।

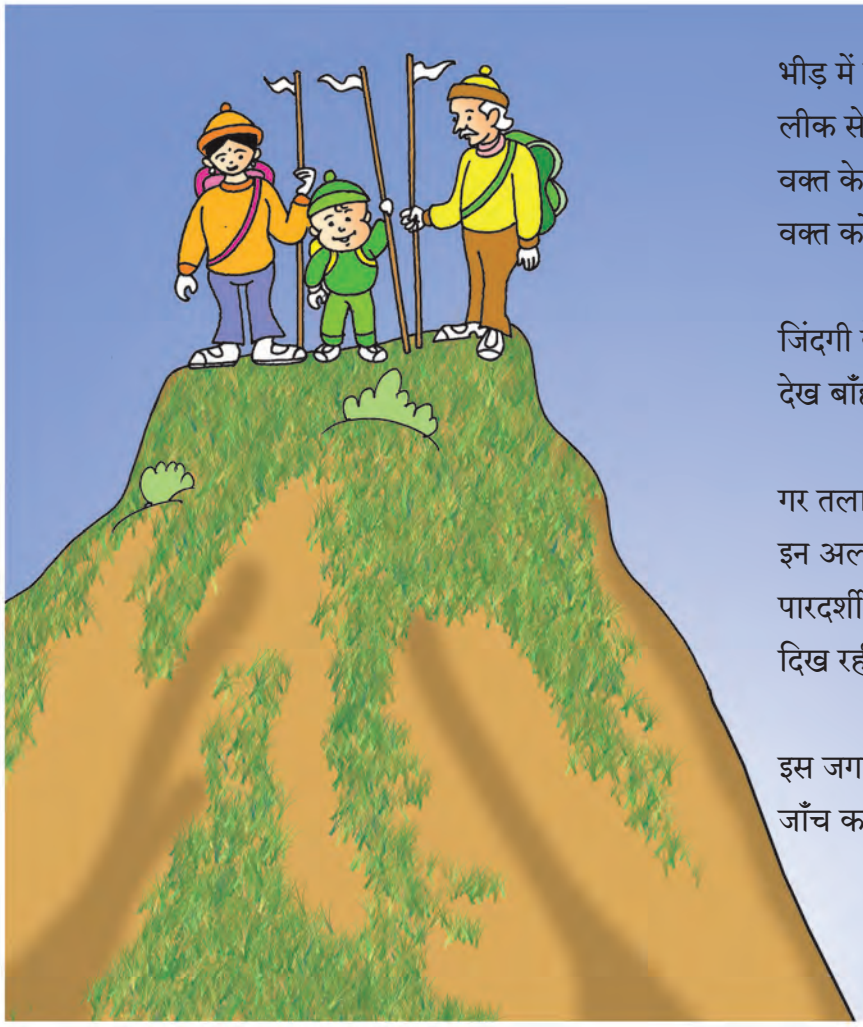

भीड़ में पहचान कब होती किसी की,
लीक से हटकर चलो तो बात है कुछ ।
वक्त के आगे सभी बेबस हुए हैं,
वक्त को बेबस करो तो बात है कुछ ।

जिंदगी के चार पल हैं पास तेरे,
देख बाँहों में लेने दुनिया खड़ी है ।

गर तलाशो तो तलाशो आग अपनी,
इन अलावों में कहाँ चिनगारियाँ हैं ।
पारदर्शी से बने जग-आईनों में,
दिख रही ये कौन-सी परछाइयाँ हैं ।

इस जगत का व्याकरण है पास तेरे,
जाँच कर पढ़ना कि ये दुनिया बड़ी है ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

कँटीली = जिसमें काँटे हो ।
अवरोध = रुकावट
लीक = लकीर, रेखा
बेबस = लाचार, पराधीन
अलाव = आग जलाने के लिए बनाया हुआ गड्ढा
व्याकरण = लेखा

स्वयं अध्ययन

कविता में आए शब्दों के माध्यम से चित्रात्मक कहानी बनाओ ।

विचार मंथन

।। सत्कर्मों की तूलिका से जीवन में रंग भरो ।।

खोजबीन

'आईने' कितने प्रकार के होते हैं और उनका उपयोग कहाँ-कहाँ किया जाता है, खोजो ।

सुनो तो जरा

कोई प्रयाणगीत सुनो और उसे सस्वर सुनाओ ।

बताओ तो सही

अगर तुम भीड़ में खो गए तो क्या करोगे, चर्चा करो ।

वाचन जगत से

कोई साहसकथा पढ़ो तथा कक्षा में सुनाओ ।

मेरी कलम से

तुमने किसी कठिन परिस्थिति का सामना कैसे किया? प्रसंग आत्मकथनात्मक रूप में लिखो ।

❊ निम्नलिखित काव्यपंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

'वक्त के आगे सभी बेबस हुए हैं ।
वक्त को बेबस करो तो बात है कुछ ।'

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि प्रकृति में सुंदर-सुंदर रंग नहीं होते तो .....

भाषा की ओर

नीचे दिए गए शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द मित्र की सहायता से ढूँढ़कर लिखो ।

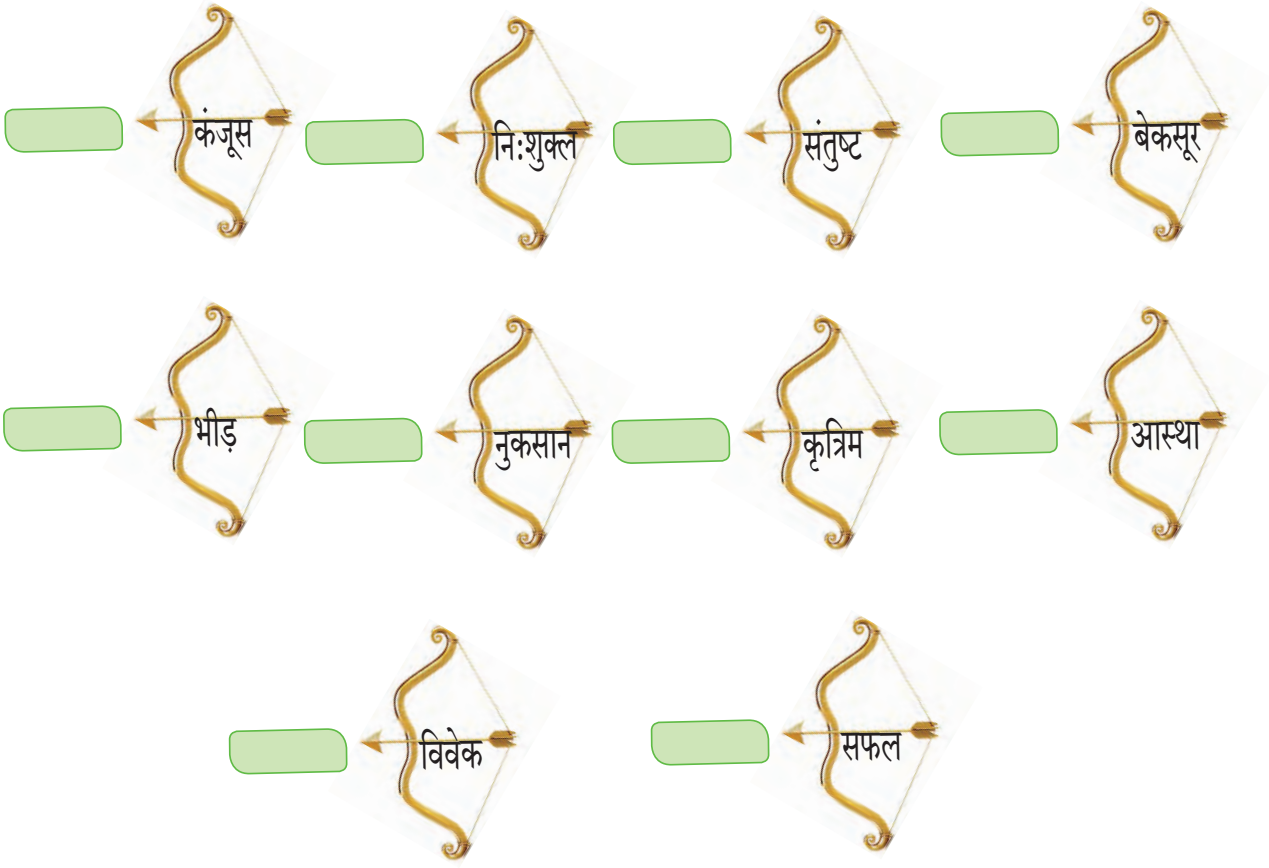

● **सुनो, समझो और बताओ :**

९. फैसला

इस कहानी में पर्यावरण प्रदूषण संबंधी सजगता निर्माण की गई है । पटाखों से होने वाले ध्वनि एवं वायु प्रदूषण दूर करने के लिए बच्चों को पटाखे फोड़ने से रोका गया है । पर्यावरण शुद्ध एवं स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित किया गया है ।

स्वयं अध्ययन

किसी एक त्योहार संबंधी चित्र बनाओ और रंग भरकर उसका महत्त्व बताओ ।

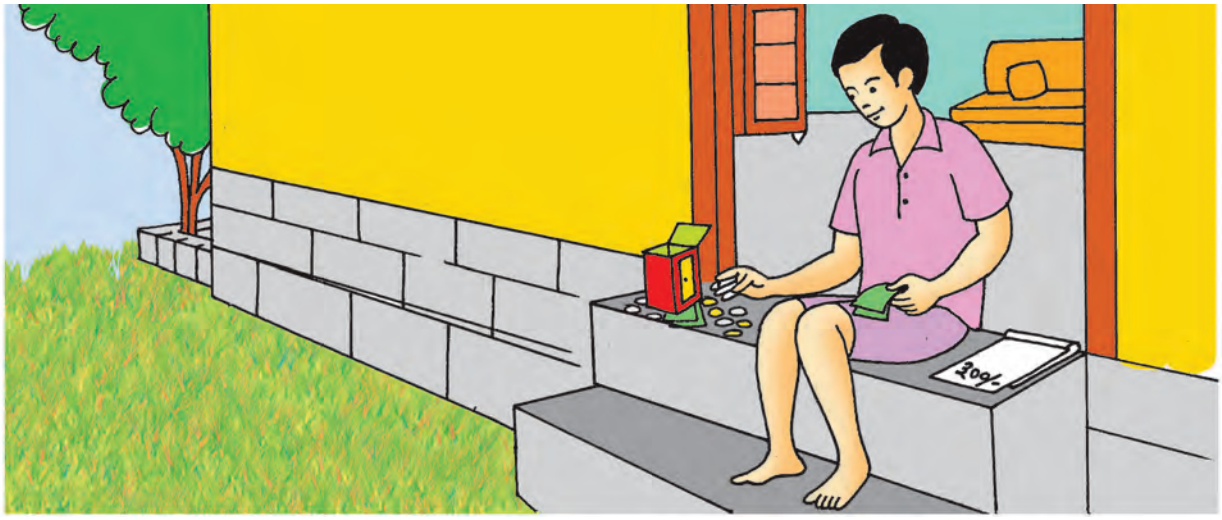

जुगनू ने अपनी गुल्लक से रुपये निकाल कर गिने । पूरे तीन सौ थे । वह खुशी से बोला, ''वाह! इस बार आएगा मजा । जितने पटाखे मैं लेकर आऊँगा, शैरी के पास तो उससे आधे भी नहीं होंगे ।''

शैरी जुगनू का दोस्त था । दोनों दोस्त भाँति-भाँति के पटाखे खरीदने की योजनाएँ बना रहे थे ।

''मैं भी इस बार स्पेशल रेल गाड़ी लाऊँगा । जब धागे से बँधी यह रेल गाड़ी इधर-उधर दौड़ेगी तो देखने वाले दंग रह जाएँगे । पाँच दर्जन बम, महताबी डिबिया, फुलझड़ियाँ, छतरी वाला बम । कई दिनों तक खतम नहीं होगी मेरी आतिशबाजी ।'' स्कूल में खेलते समय शैरी ने जुगनू से कहा ।

घर वापस आते समय दोनों दोस्तों ने गगन से पूछा, ''तुम कौन-कौन-सी आतिशबाजी ला रहे हो?''

गगन तपाक से बोला, ''मैं तो भई एक सौ बमों वाली लंबी लड़ी लाऊँगा । जब तड़पड़-कड़कड़ करती हुई चलेगी तो गली-मुहल्लेवालों को बहरा न कर दे तो कहना ! पापा से मैंने रुपये भी ले लिए हैं ।''

आखिर दीपावली का दिन भी आ गया ।

सुबह से ही बाजार में खूब चहल-पहल थी । दुकानदारों ने आतिशबाजी को अपनी-अपनी दुकानों के आगे खूब सजाया हुआ था । शाम हुई तो शैरी ने आकर जुगनू के घर की घंटी दबा दी । जुगनू बाहर आया तो शैरी एकदम उससे बोला, ''जुगनू, पाँच बज चुके हैं । पटाखों की गूँज तेज हो रही है । चलो, हम भी आतिशबाजी खरीदने चलें ।''

''चलते हैं मित्र । अभी-अभी गगन का भी फोन आया है । वह भी अपने साथ आएगा । बस पाँच मिनट

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ प्रत्येक परिच्छेद का वाचन करें । कतिपय विद्यार्थियों से मुखर वाचन करवाएँ । पूरी कहानी का मौन वाचन कराके विद्यार्थियों को कहानी के आशय पर चर्चा करने के लिए प्रेरित करें । आतिशबाजी संबंधी उनके अपने अनुभव बताने के लिए कहें ।

में आ रहा है ।'' जुगनू बोला ।

शैरी एकदम बोला, ''मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि गगन के पाँच मिनट कितने बड़े होते हैं । मैं खुद ही लेने जाता हूँ उस साहब को । तुम बस अपनी तैयारी रखना ।'' कहकर शैरी एकदम बाहर निकला और अपनी साइकिल पर उसके घर की तरफ रवाना हो गया ।

अभी शैरी को गए कुछ ही क्षण हुए थे कि अचानक ही जुगनू के घर में उसे पढ़ाने वाली अध्यापिका श्रीमती जतिंदर कौर जी ने प्रवेश किया । उनके हाथ में एक समाचार पत्र था ।

मैडम ड्राइंग रूम में आ बैठीं ।

''जुगनू ।'' मैडम बोलीं, ''मैं तुम्हारे भले की बात कहने आई हूँ । यह मत सोचना कि मैडम दीपावली के दिन मन खराब करने आ गई हैं ।''

जुगनू उन्हें पानी का गिलास देकर उनके सामने खड़ा हो गया और बोला, ''कौन-सी बात मैडम ?''

मैडम ने पूछा, ''पहले तुम यह बताओ कि तुम पटाखे खरीद लाए हो या नहीं ?''

''नहीं मैडम ।'' वह बोला, ''हम अभी खरीदने के लिए जाने ही वाले थे ।''

''कितने रुपयों के पटाखे खरीदोगे ?'' उन्होंने फिर पूछा ।

''जी, तीन सौ रुपए के ।'' जुगनू का उत्तर था ।

''अब मेरी बात सुनो ।'' यह कहकर मैडम ने पानी पिया और खाली गिलास को मेज पर रख कर बोलीं, ''देखो जुगनू, प्रकृति ने हमारे सभी के बचाव के लिए अंतरिक्ष में एक छाता ताना हुआ है जिसे हम 'ओजोन की परत' कहते हैं । यह परत ऑक्सीजन से बनी हुई है । शायद तुम्हें अभी पता न हो । फैक्ट्रियों और गाड़ियों में से निकलने वाला जहरीला धुआँ 'ओजोन' की इस परत को बहुत नुकसान पहुँचा रहा है । इसलिए इस छाते में बड़े-बड़े छेद हो गए हैं ।''

''फिर तो मैडम जो आज लाखों-करोड़ों पटाखे चलेंगे, उनका धुआँ तो इस छाते को और भी नुकसान

❑ चौंक पड़ना, सोचना, चुप होना, रोना, सिसकी भरना, सिहर उठना, सिर पर हाथ फिराने की कृतियाँ कक्षा में विद्यार्थियों से करवाएँ । कहानी में आए मुहावरों का वाक्य में प्रयोग करने के लिए कहें । कहानी में आए संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द ढूँढ़कर पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें ।

खोजबीन

विदेशों में रहने वाले भारतीय मित्र अपने-अपने पर्व कैसे मनाते हैं? अंतरजाल की सहायता से बताओ।

पहुँचा सकता है।'' जुगनू ने अपना डर प्रकट किया।

मैडम जतिंदर कौर एकदम बोल उठीं, ''बिलकुल ठीक कहा तुमने।'' इसके साथ ही उन्होंने एक प्रश्न भी जुगनू से कर दिया, ''यदि फैक्ट्रियों, पटाखों और मोटर-गाड़ियों का धुआँ इस तरह ही निकलता रहा तो मालूम है क्या होगा?''

जुगनू ने 'न' में सिर हिला दिया।

''इस अत्यंत हानिकारक धुएँ के कारण ओजोन-छाते में पड़ चुके छेद और भी बड़े हो जाएँगे। परिणाम यह होगा कि सूर्य की पराबैंगनी घातक किरणें, फसलों और पशु-पक्षियों को ही नहीं बल्कि सारी मनुष्य-जाति को बरबाद करके रख देंगी। अगर हम इस अंधाधुंध प्रवृत्ति को बिलकुल नहीं रोक सकते, कुछ हद तक खत्म करने का प्रयास तो करना ही चाहिए न? फैसला तुम्हारे हाथ में है। पटाखे खरीदने से पहले तुम इस समाचार-पत्र में छपा यह निबंध जरूर पढ़ लेना।''

मैडम जुगनू के हाथ में समाचार-पत्र थमा कर चली गईं। जुगनू निबंध पढ़ने लगा। ज्यों-ज्यों वह निबंध पढ़ता जा रहा था, उसकी आँखें खुलती जा रही थीं।

''क्या पढ़ने में व्यस्त हो जनाब? इसे छोड़ो और जल्दी आओ पटाखे खरीदने। देखो, गगन को भी ले आया हूँ।'' शैरी ने घर में प्रवेश करते हुए कहा।

''सॉरी शैरी! अब मैं पटाखे खरीदने नहीं जाऊँगा।'' जुगनू ने कहा।

''क्या?'' दोनों एकदम चौंक पड़े।

''पहले तुम ये निबंध पढ़ो। फिर अपना फैसला बताना।'' इतना कहकर जुगनू ने वह समाचारपत्र शैरी की तरफ बढ़ा दिया। शैरी और गगन आश्चर्य से वह निबंध पढ़ने लगे। ज्यों-ज्यों वे दोनों निबंध पढ़ रहे थे त्यों-त्यों उनके तेवर बदलते जा रहे थे।

गर्म लोहे पर चोट लगाता हुआ जुगनू बोला, ''अब चलें पटाखे खरीदने?''

गगन बोला, ''इन पटाखों का धुआँ इतना खतरनाक भी हो सकता है? इसके बारे में तो पहले कभी इतना बढ़िया निबंध पढ़ा ही नहीं था।''

''क्या फैसला किया शैरी?'' इस बार जुगनू ने शैरी की तरफ मुड़ते हुए पूछा।

''जो तुम्हारा फैसला है।'' शैरी बोला।

''चलो इन रुपयों को किसी अच्छे काम के लिए अपनी-अपनी गुल्लक में डाल दें।'' अभी जुगनू ने यह बात कही ही थी कि पड़ोस में चीखें सुनाई दीं। पता चला कि जब सरघी की मम्मी काम करने के बाद अपने घर लौट रही थीं तो किसी नटखट लड़के ने एक बड़े बम को आग लगाकर सड़क पर फेंक दिया और उस बम के कुछेक कण मम्मी की आँखों में पड़ गए थे। उनकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। उन्हें फौरन ही पास के अस्पताल में ले जाया गया।

कुछ ही क्षणों के पश्चात् तीनों दोस्त अपने-अपने रुपए लेकर अस्पताल में बैठे सरघी के पिता जी को देने के लिए घर से रवाना हो गए।

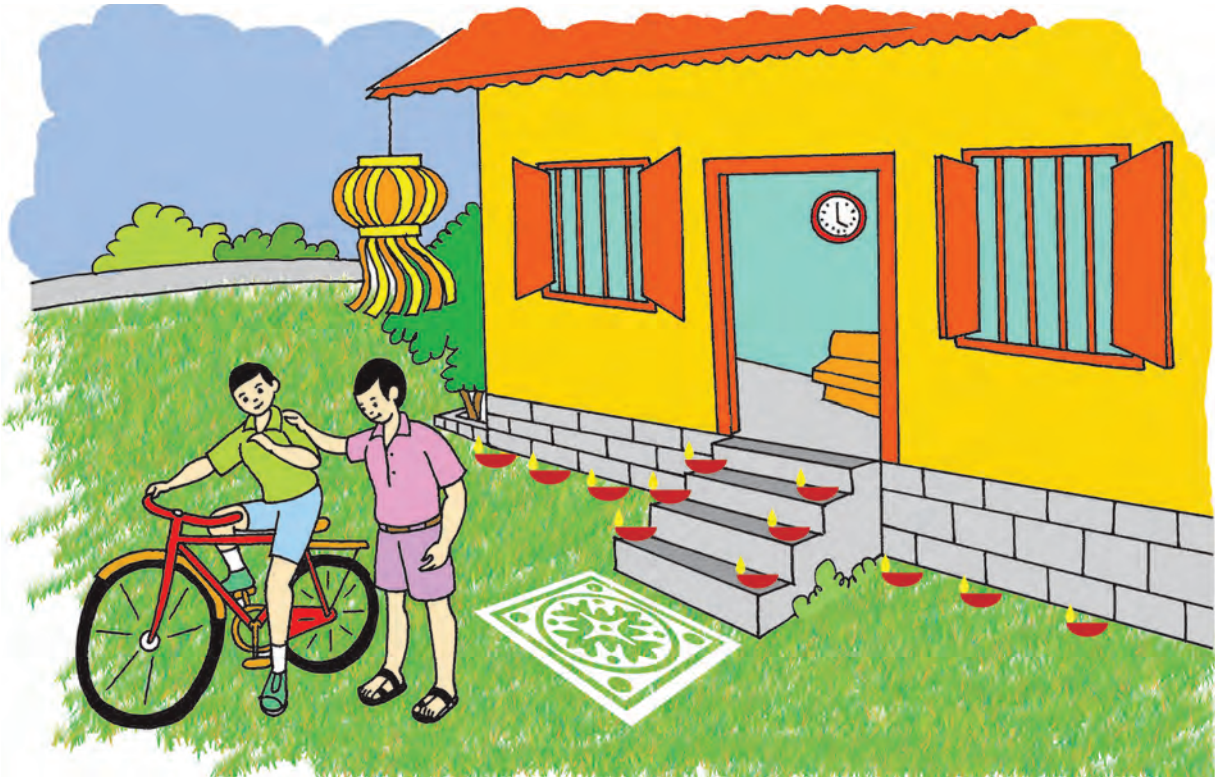

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

भाँति-भाँति = तरह-तरह

आतिशबाजी = पटाखे

मुहावरे

आँखें खुलना = सही बात समझ में आना

तेवर बदलना = नाखुश होना

स्वयं अध्ययन

प्रदूषण फैलाने वाली विभिन्न वस्तुओं का प्रदूषण के प्रकार के अनुसार वर्गीकरण करो।

अध्ययन कौशल

अंतरजाल की सहायता से 'बालवीर पुरस्कार' प्राप्त बालकों की जानकारी प्राप्त करके लिखो।

सुनो तो जरा

दैनिक समाचार सुनो और मुख्य समाचार फलक पर लिखकर सुनाओ ।

वाचन जगत से

अंतरजाल से मंगल यान संबंधी जानकारी पढ़ो और कॉपी में लिखो।

* संक्षेप में जानकारी लिखो ।

१. ओजोन छाते में पड़ चुके छेद ।
२. बच्चों का पटाखे न खरीदने का फैसला ।

जरा सोचो तो ..... बताओ ।

यदि पटाखों से आवाज गायब हो जाए तो ...

बताओ तो सही

प्रकृति से प्राप्त होने वाला संदेश अपने शब्दों में बताओ ।

मेरी कलम से

तितली तुमसे बात करने लगे तो... संवाद लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

पर्यावरण संरक्षण में हम सबका योगदान आवश्यक है ।

विचार मंथन

।। स्वच्छ, शुद्ध पर्यावरण, देता स्वस्थ जीवन ।।

भाषा की ओर

स्त्री-पुरुष समानता दर्शाने वाले चित्रों को देखकर प्रभात फेरी के लिए घोषणाएँ तयार करो ।

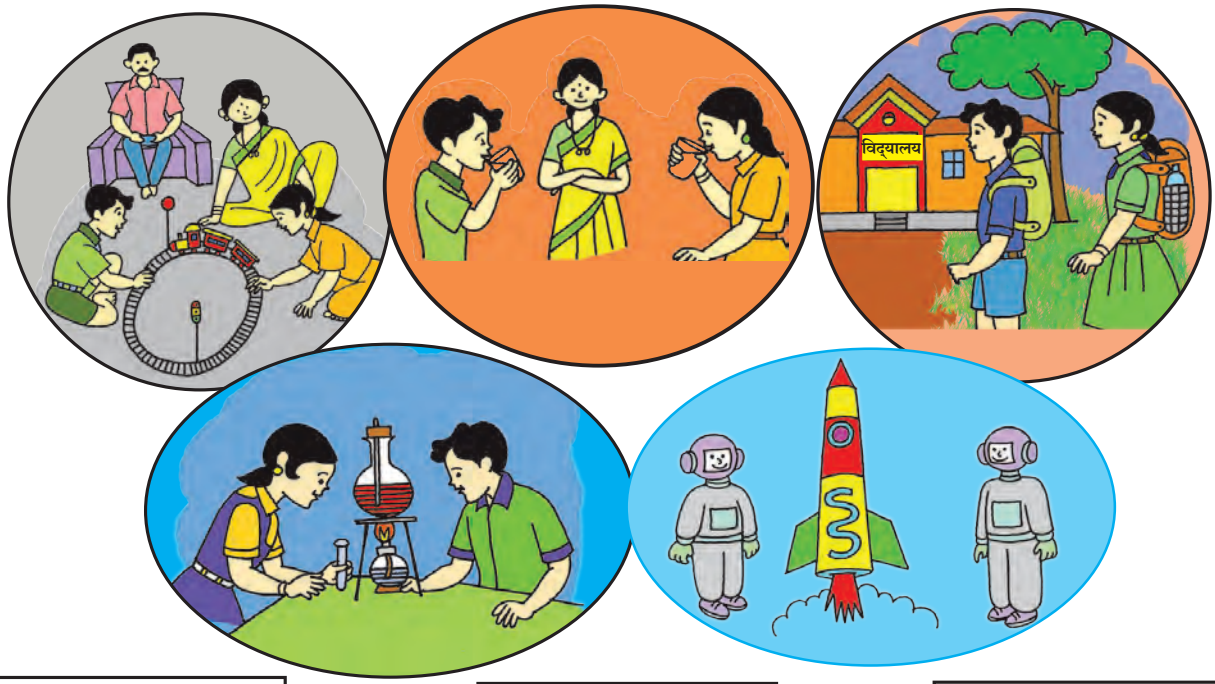

● **पढ़ो, समझो और कृति करो :**

१०. दिनदर्शिका

आओ, कैलेंडर बनाएँ ।

क्या तुम कैलेंडर बनाना जानते हो ? बहुत आसान है चलो, हम बनाते हैं ।

AUGUST 2016

अगस्त/ऑगस्ट २०१६ **आषाढ़/श्रावण** **विक्रम संवत**

सोमवार		7 ७ सात नाग पंचमी				
मंगलवार	1 १ एक					
बुधवार	2 २ दो					
गुरुवार	3 ३ तीन					
शुक्रवार	4 ४ चार					
शनिवार	5 ५ पाँच					
रविवार	6 ६ छह					

*** गतिविधि – जिस महीने में आपका जन्मदिन आता है, उस महीने का कैलेंडर बनाओ ।**

❑ 'दिनदर्शिका' बनाने की सामग्री एवं प्रक्रिया पर चर्चा करें । कक्षा के कार्यक्रमों का नियोजन करने हेतु इसका प्रयोग करने के लिए कहें । आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें । महीने, वार, तिथियों के हिंदी नामों की सूची बनवाएँ ।

● **सुनो, पढ़ो और लिखो :**

११. सुनहरे हिमालय के दर्शन

–श्रीमती रंजना अजय

जन्म : २५ अक्टूबर १९७३ **रचनाएँ :** 'सांझ' (मराठी यात्रा वृत्तांत)
प्रस्तुत यात्रा वर्णन में दार्जिलिंग के प्राकृतिक सौंदर्य से सजे स्थलों का मनोरम वर्णन किया है ।

चिलचिलाती गर्मी और महानगर की आपाधापी से मन ऊबा तो हमारे परिवार ने पूर्वी हिमालय की गोद में बसे दार्जिलिंग यात्रा का मन बनाया । पश्चिम बंगाल के उत्तरी छोर पर स्थित इस मनोरम स्थल तक पहुँचने के लिए दिल्ली से हमें गुवाहाटी रेलमार्ग पर स्थित न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन पहुँचना था । न्यू जलपाईगुड़ी से हम सिलीगुड़ी पहुँचे । इसे कई पर्वतीय पर्यटन स्थलों का प्रवेश द्वार कहा जाता है । यहाँ से दार्जिलिंग के लिए टैक्सी, जीप, बस और टॉय ट्रेनें जाती हैं । घुमावदार पहाड़ी मार्ग की यात्रा के लिए 'टॉय ट्रेन' हमें सबसे अच्छा विकल्प लगी और सिलीगुड़ी जंक्शन से अगले दिन सुबह की पहली ट्रेन से हम दार्जिलिंग चल पड़े ।

खिलौना गाड़ी का सफर

लगभग दस किलोमीटर का मैदानी रास्ता तय करने के बाद टॉय ट्रेन पर्वतीय मार्ग पर बढ़ती है । देवदार, ताड़ और बाँस आदि के पेड़ों से भरे इस मार्ग पर इस अनोखी ट्रेन से पर्यटकों को प्रकृति के मनोरम दृश्य देखने का भरपूर आनंद मिलता है । मार्ग में तिनधरिया स्टेशन के पास टॉय ट्रेन एक वृत्ताकार लूप से गुजरती है । कुर्सियांग पहुँचकर तो सब कुछ रेल लाइन के एकदम निकट लगने लगता है । सैलानियों को यह देखकर आश्चर्य होता है कि रेलगाड़ी मानो दुकानों और घरों को छू कर जा रही हो । इस अनोखी खिलौना रेलगाड़ी की शुरुआत १२२ वर्ष पूर्व हुई थी । गहरी घाटियों, दूर तक फैले चाय बागान, कृत्रिम पुलों और छोटी-छोटी सुरंगों को पार करती हुई यह ट्रेन जब 'घूम' स्टेशन पहुँचती है तो पर्यटक रोमांचित हो उठते हैं ।

❑ कथात्मक पद्धति से इस यात्रावर्णन को समझाएँ । यात्रा करने का महत्त्व बताएँ । विद्यार्थियों द्वारा की हुई किसी सैर का वर्णन करने के लिए कहें । सैर पर निकलने से पहले किन-किन वस्तुओं को इकट्ठा करना पड़ता हैं पूछें, सामग्री की सूची बनवाएँ ।

स्वयं अध्ययन

सैर पर जाने से पूर्व संबंधित स्थल की प्राथमिक जानकारी प्राप्त करो ।

दार्जिलिंग का पुराना नाम दोर्जीलिंग था । सदियों पहले यहाँ एक छोटा-सा गाँव था । चाय के शौकीन अंग्रेजों ने इस क्षेत्र की आबोहवा को चाय की खेती के योग्य पाकर यहाँ चाय बागान विकसित किए ।

एक हिमालय छोटा-सा

'हैप्पी वैली टी इस्टेट' से निकलकर हम हिमालय पर्वतारोहण संस्थान पहुँचे । हिमालय के शिखरों को छू लेने की चाह रखने वालों को यहाँ पर्वतारोहण का प्रशिक्षण दिया जाता है । इसकी स्थापना एवरेस्ट पर पहली विजय के बाद की गई थी । शेरपा तेनसिंह लंबे अरसे तक इस संस्थान के निदेशक रहे । संस्थान में एक महत्त्वपूर्ण संग्रहालय भी है । इसमें पर्वतारोहण के दौरान उपयोग में आने वाले कई नए-पुराने उपकरण, पोशाकें, कई पर्वतारोहियों की यादगार वस्तुएँ और रोमांचक चित्र प्रदर्शित किए गए हैं । इसके निकट ही स्थित है 'पद्मजा नायडू हिमालय चिड़ियाघर' जो बच्चों को ही नहीं बड़ों को भी बहुत पसंद आता है । पर्वतों पर रहने वाले कई दुर्लभ प्राणी यहाँ देखने को मिलते हैं । इनमें खास हैं लाल पांडा, साइबेरियन टाइगर, स्नो ल्योपार्ड, हिमालयी काला भालू आदि ।

सूरज के स्वागत का मजा

अगले दिन बहुत जल्दी उठकर हमें तैयार होना पड़ा क्योंकि मुँह अँधेरे ही हमें दार्जिलिंग से तेरह किलोमीटर दूर 'टाइगर हिल' पहुँचना था । समुद्री तल से ८४८२ फीट की ऊँचाई पर स्थित 'टाइगर हिल' सूर्योदय के अद्‌भुत नजारे के लिए प्रसिद्ध है । सुबह चार बजे ही जीप हमारे होटल के सामने आ पहुँची । ठंड से ठिठुरते हुए हम 'टाइगर हिल' की ओर चल पड़े । वहाँ दूर तक जीप और टैक्सियों की कतार लगी थी । वहाँ पहुँचते-पहुँचते पर्यटकों का हुजूम देखकर लगा जैसे पूरा देश ही सूर्य के स्वागत में टाइगर हिल पर आ खड़ा हुआ हो । कंचनजंघा और अन्य हिमशिखरों पर सूर्य की पहली किरण ने अपना नारंगी रंग फैला दिया जो कुछ क्षण बाद ही सुनहरे रंग में परिवर्तित हो गया । सूर्य की किरण कुछ तेज हुई तो ऐसा लगने लगा कि पर्वतों पर चाँदी की वर्षा हो गई हो । जैसे-जैसे सूर्य आगे बढ़ने लगा, सभी हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियाँ दूध-सी सफेद नजर आने लगीं । सूर्योदय के साथ ही पल-प्रतिपल रंग बदलती पर्वतमाला का ऐसा अविस्मरणीय दृश्य देख पर्यटक अवाक रह जाते हैं ।

खोजबीन

अंतरजाल की सहायता से हिमालय की ऊँची चोटियों के नाम, ऊँचाई आदि की जानकारी प्राप्त करो ।

टाइगर हिल से वापस आते हुए हम 'घूम मॉनेस्ट्री' देखने पहुँचे । यह दार्जिलिंग का एक प्रसिद्ध और सुंदर बौद्धमठ है । यहाँ स्थापित मैत्रेयी बुद्ध की ऊँची, सुनहरी प्रतिमा अत्यंत मनभावन है । इस प्राचीन मठ में कई दुर्लभ पांडुलिपियों और बौद्धग्रंथों का संग्रह है । मठ से कुछ ही दूरी पर बतासिया लूप में युद्ध स्मारक भी है । यह स्मारक शहीद सैनिकों की याद में बनवाया गया था । मार्ग में हमने प्रसिद्ध आवा गैलरी देखी और धीरधाम मंदिर के दर्शन भी किए ।

मिरिक से कलिंपोंग तक का मनोहारी रास्ता हमने टैक्सी से तय किया । रास्ते में तिस्ता नदी की खूबसूरती ने हमें बहुत प्रभावित किया । तिस्ता पुल पार करके टैक्सी फिर उपर की ओर बढ़ने लगी । रास्ते में एक जगह टैक्सी

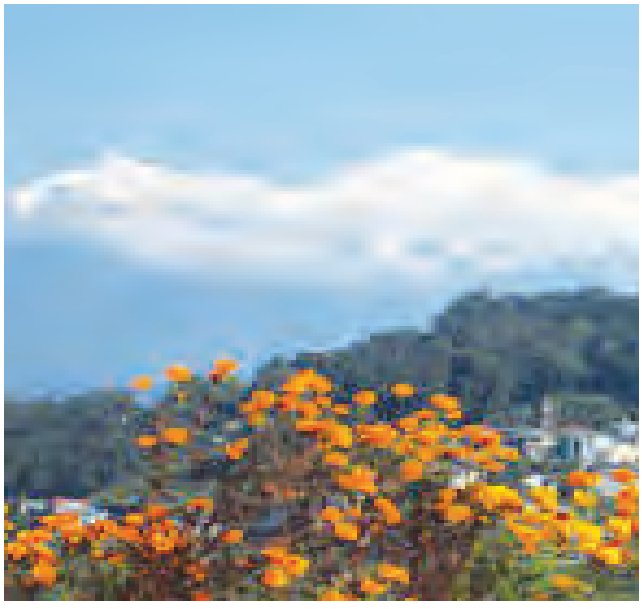

रोक कर ड्राइवर ने हमें एक प्राकृतिक दृश्य देखने को कहा । वहाँ से हमें तिस्ता और अन्य नदियों के संगम का अनुपम दृश्य देखने को मिला । विभिन्न दिशाओं से पहाड़ों से उतरती ये नदियाँ एक-दूसरे में आ समाती हैं । इस छोटे-से पहाड़ी शहर में पर्यटकों को सिक्किमी, भूटानी और तिब्बती संस्कृति का मिला-जुला रूप देखने को मिलता है ।

देखने के लिए यहाँ पर्यटकों को योग्सा मठ, फो ब्रांग मॉनेस्ट्री, थार्पा चाओलिंग मॉनेस्ट्री, ग्राहम होम्स और चर्च हैं । फूल प्रेमियों के लिए तो यह जगह स्वर्ग ही है । अनुकूल जलवायु के कारण यहाँ फूलों की खेती की जाती है । इसे भारत का हॉलैंड कहना गलत न होगा । यहाँ सैकड़ों नर्सरियाँ हैं । यहाँ तरह-तरह के फूल, ऑर्किड और कैक्टस देखने योग्य होते हैं । पर्यटक कुछ खास नर्सरियाँ देखने जरूर जाते हैं ।

कलिंपोंग भ्रमण के साथ ही हमारी पर्वतीय त्रिकोण की यह यात्रा पूरी हो चली थी। प्रकृति से भरपूर इन स्थानों की यात्रा में हमने कंचनजंघा के पावन हिमशिखर, हरियाली से सटे हुए ढलान, कल-कल करते झरने, उलझे हुए पहाड़ी रास्ते, बलखाती नदियाँ, आस्था जगाते गोंपा और विश्व धरोहर टॉय ट्रेन इन सबको मन में छवि रूप में अंकित कर लिया । इससे यह एक अविस्मरणीय यात्रा बन गई ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

चिलचिलाती = चमकती
आपाधापी = भागदौड़
सैलानी = घूमने वाला
हुजूम = भीड़
पांडुलिपि = पुस्तक की हस्तलिखित प्रति
दुर्लभ = कठिनता से प्राप्त होने वाला
धरोहर = थाती, अमानत

अध्ययन कौशल

भारत के मानचित्र में प्रमुख पर्वत दर्शाओ ।

विचार मंथन

।। असफलता सफलता की पहली सीढ़ी है ।।

जरा सोचो तो ... बताओ

यदि देश की सीमा पर सैनिक न होते तो....

सदैव ध्यान में रखो

प्रदूषण की रोकथाम ही प्राकृतिक सुंदरता को अक्षुण्ण रखती है ।

सुनो तो जरा

कोई एक प्रहसन सुनो और उसके किसी एक पात्र के संवाद को सुनाओ ।

बताओ तो सही

हिमालय के लिए विशेषण बताओ और लिखो ।

वाचन जगत से

किसी पर्वतारोही के संस्मरण पढ़ो और सुनाओ ।

मेरी कलम से

'हिमालय से देश की सीमा सुरक्षित है' इस विषय पर दस-बारह वाक्य लिखो ।

⁂ चार-पाँच पंक्तियों में उत्तर लिखो ।

१. पर्यटक कब रोमांचित हो उठते हैं ?
२. हिमालय पर्वतारोहण संस्थान की जानकारी लिखो ।
३. लेखिका ने 'टाइगर हिल' से दिखाई देने वाले सूर्योदय का वर्णन किन शब्दों में किया है ?
४. 'घूम मॉनेस्ट्री' क्या है ?
५. पर्यटकों को सिक्किमी, भूटानी एवं तिब्बती संस्कृति का मिला जुला रूप कहाँ देखने को मिला ?
६. भारत का हॉलैंड किसे और क्यों कहते हैं ?

भाषा की ओर

टोकरी में दिए गए कारक चिह्नों का प्रयोग करके तालिका पूर्ण करो तथा वाक्य बनाकर लिखो ।

को	से	ने	का/की/के	से	में/पर	अरे!	के लिए

खेल		मैदान		बच्चे भाग गए ।
सभी		मोहन		प्रशंसा की ।
मिट्टी		फल		आकार बनाओ ।
अरे! यात्री		थकान		शीघ्र नींद लग गई ।
बच्चों		जोकर		मन मोह लिया ।
माँ ने पौधे		गमले		लगाया गया ।
खेत		गेहूँ		बीज बोए ।
दीवार		चित्र		जगह बनाई ।

१. ----------
२. ----------
३. ----------
४. ----------
५. ----------
६. ----------
७. ----------
८. ----------

● **सुनो और गाओ :**

१२. दोहे

परिचय : कबीर, रहीम, तुलसीदास और बिहारी ये मध्यकालीन कवि हैं । इनके द्‌वारा लिखे 'दोहे' हिंदी के अमूल्य अक्षरधन हैं । प्रस्तुत दोहे नीति मूल्यों पर आधारित हैं ।

स्वयं अध्ययन

सुवाच्य, सुडौल अक्षरों में दोहों की वाक्य पट्‌टियाँ बनाओ ।

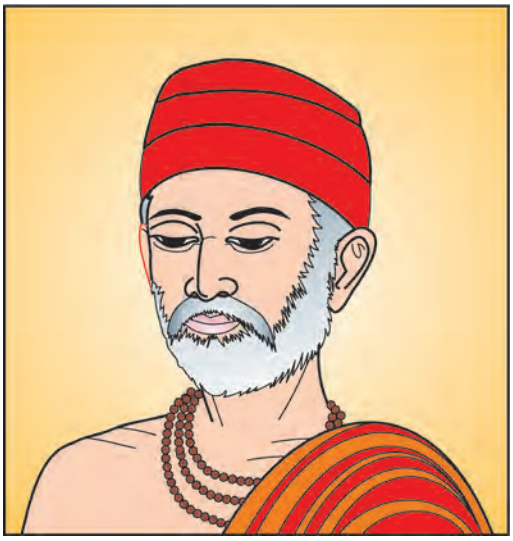

कबीर

काल्ह करे सो आज कर, आज करे सो अब ।
पल में परलै होइगी, बहुरि करैगा कब ।।१।।

कथनी मीठी खाँड़-सी, करनी विष की लोय ।
कथनी तजि करनी करै, विष से अमृत होय ।।२।।

रहीम

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत ।
बिपति कसौटी जे कसे, सोई साँचे मीत ।।१।।

रहिमन विद्‌याबुद्‌धि नहीं, नहीं धरम जस दान ।
भू पर जनम वृथा धरै, पसु बिनु पूँछ समान ।।२।।

❑ विद्‌यार्थियों से दोहों का मौन एवं मुखर वाचन कराएँ । दोहा रचना से परिचय कराएँ । दोहों का सरल अर्थ बताएँ । विद्‌यार्थियों को प्रश्नोत्तर के माध्यम से दोहों का भावार्थ समझाएँ । उनसे दोहों की गेय प्रस्तुति कराएँ ।

सदैव ध्यान में रखो

सदाचरण अच्छे चरित्र का निर्माण करता है ।

तुलसीदास

मुखिया मुख-सौ चाहिए, खान पान को एक ।
पालै, पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक ।।१।।
तुलसी या संसार में, भाँति-भाँति के लोग ।
सबसे हँस-मिल बोलिए, नदी नाव संजोग ।।२।।

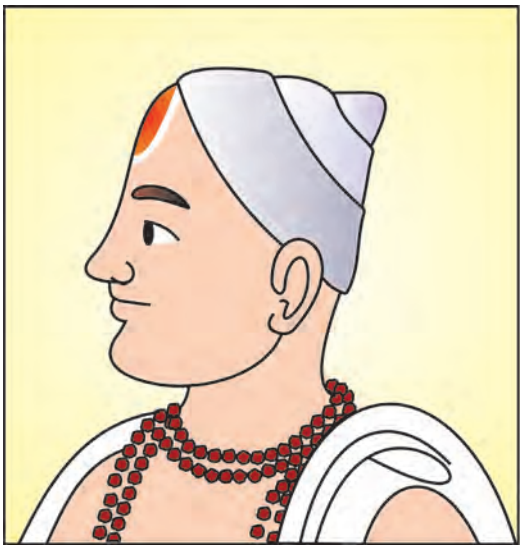

बिहारी

बढ़त बढ़त संपत्ति-सलिलु, मन सरोज बढ़ि जाइ ।
घटत घटत पुनि ना घटै, बरु समूल कुम्हिलाइ ।।
संगति सुमति न पाबही, परे कुमति के धंध ।
राखौ मेलि कपूर में, हींग न होत सुगंध ।।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

काल्ह = कल	मीत = दोस्त
परलै = प्रलय	सलिलु = पानी
बहुरि = फिर	सरोज = कमल
लोय = आग की लपट	बरु = बल्कि
बिपति = संकट	समूल = जड़ से
साँचे = सच्चे	पाबही = प्राप्त होता है

अध्ययन कौशल

किसी एक दोहे के अर्थ को चित्र द्वारा स्पष्ट करो और समझाओ ।

खोजबीन

'भारत रत्न पुरस्कार' प्राप्त किन्हीं दो व्यक्तियों की जानकारी ढूँढ़ो ।

सुनो तो जरा

अन्य दोहों को सस्वर सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

कौन-कौन-से गुण तुम्हें आदर्श विद्यार्थी का स्थान दिला सकते हैं? सोचो और बताओ ।

वाचन जगत से

किसी अन्य कवि के दोहों को पढ़ो ।

मेरी कलम से

बालपत्रिका में आने वाली कविताओं को संकलित कर हस्तपुस्तिका तैयार करो ।

❊ उचित जोड़ियाँ मिलाओ

'अ'		'ब'
१. कथनी तजि करनी करै	–	रहीम
२. सबसे हँस मिल बोल बोलिए	–	कबीर
३. पसु बिनु पूँछ समान	–	बिहारी
४. संगति सुमति न पाबहि	–	तुलसीदास

जरा सोचो तो ... बताओ

यदि समय जानने का यंत्र (घड़ी) न होता तो .....

विचार मंथन

।। गागर में सागर भरना ।।

भाषा की ओर

पत्ते पर दिए गए प्रत्यय से शब्द तैयार करो और लिखो ।

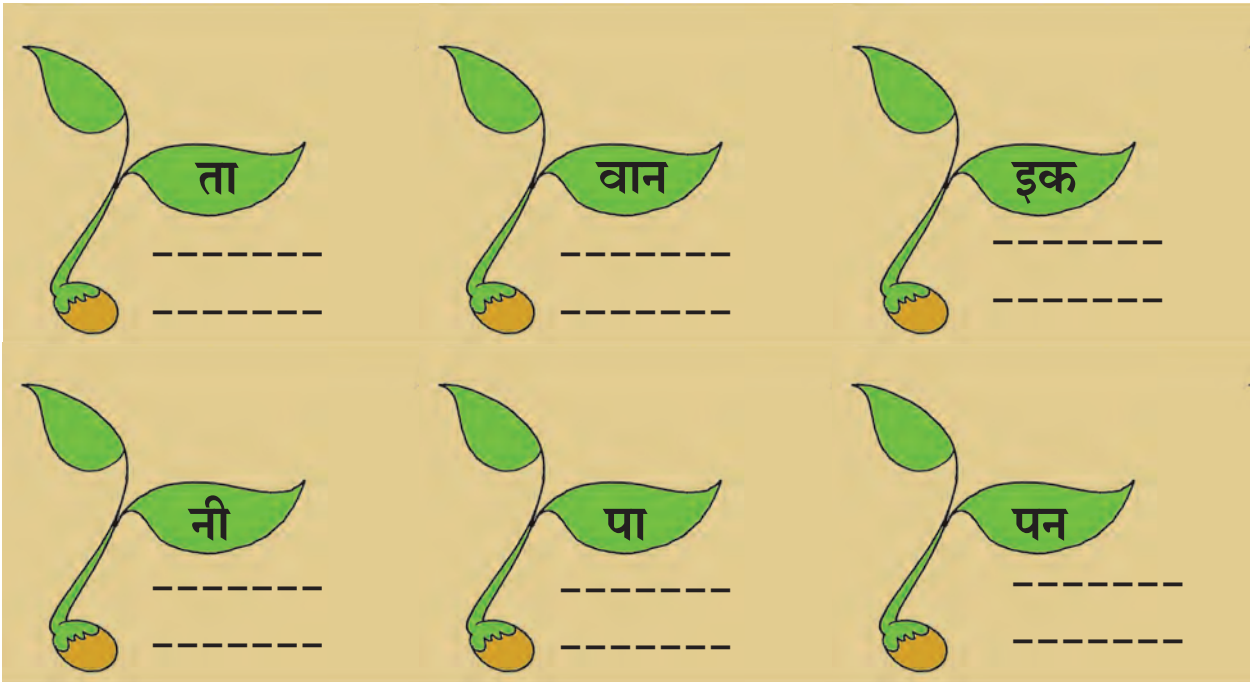

● सुनो, समझो और लिखो :

१३. नई राह की ओर

इस कहानी के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि आने वाले संकटों से बेझिझक लड़ना चाहिए । अपने जीवन की नई राह की निरंतर खोज करनी चाहिए ।

*** चित्रों में दिए गए संवादों को पढ़ो तथा समझो ।**

एक दार्शनिक अपने एक शिष्य के साथ कहीं से गुजर रहे थे। चलते-चलते वे एक खेत के पास पहुँचे। खेत अच्छी जगह स्थित था लेकिन उसकी हालत देखकर लगता था मानो उसका मालिक उसपर जरा भी ध्यान नहीं देता है।

खैर, दोनों को प्यास लगी थी सो वे खेत के बीचोंबीच बने एक टूटे-फूटे घर के सामने पहुँचे । उन्होंने दरवाजा खटखटाया।

अंदर से एक आदमी निकला, उसके साथ उसकी पत्नी और दो बच्चे भी थे। सभी फटे-पुराने कपड़े पहने हुए थे।

"श्रीमान, क्या हमें पानी मिल सकता है? बड़ी प्यास लगी है!" जरूर!, आदमी उन्हें पानी का लोटा थमाते हुए बोला।

"मैं देख रहा हूँ कि आपका खेत इतना बड़ा है पर इसमें कोई फसल नहीं बोई गई है, न ही यहाँ फलों के वृक्ष दिखाई दे रहे हैं...तो आखिर आप लोगों का गुजारा कैसे चलता है?" दार्शनिक ने प्रश्न किया।

❑ विद्यार्थियों से चित्रों के आधार पर प्रश्न पूछें । वाक्य बनाने की प्रक्रिया एवं रचना के आधार पर वाक्यों के प्रकार (१. विधानार्थक, २. निषेधात्मक, ३. आज्ञार्थक, ४. प्रश्नार्थक, ५. संकेतवाचक, ६. संदेहार्थक, ७. इच्छार्थक तथा ८. विस्मयादि बोधक वाक्य) उदाहरणसहित समझाएँ । कहानी से इस प्रकार के वाक्य ढूँढ़कर लिखवाएँ ।

खोजबीन

भारत के विभिन्न राज्यों में पाए जाने वाले प्राणियों की चित्र सहित सूची बनाओ ।

"जी, हमारे पास एक भैंस है, वह काफी दूध देती है । उसे पास के गाँव में बेच कर कुछ पैसे मिल जाते हैं और बचे हुए दूध का सेवन करके हमारा गुजारा चल जाता है।" आदमी ने समझाया।

दार्शनिक और शिष्य आगे बढ़ने को हुए तभी आदमी बोला, " शाम काफी हो गई है, आप लोग चाहे तो आज रात यहीं रुक जाएँ!"

दोनों रुकने को तैयार हो गए।

आधी रात के करीब जब सभी गहरी नींद में सो रहे थे तभी दार्शनिक ने शिष्य को उठाया और बोले, "चलो, हमें अभी यहाँ से चलना है । चलने से पहले हम उस आदमी की भैंस को लेकर जाएँगे ।'' ''लेकिन क्यों गुरुदेव ?'' गुरुदेव बोले, ''उस आदमी की भलाई के लिए उसे कार्यरत करने के लिए ।'' शिष्य को अपने गुरु की बात पर यकीन नहीं हो रहा था पर वह उनकी बात काट भी नहीं सकता था। दोनों भैंस को लेकर रातों-रात गायब हो गए!

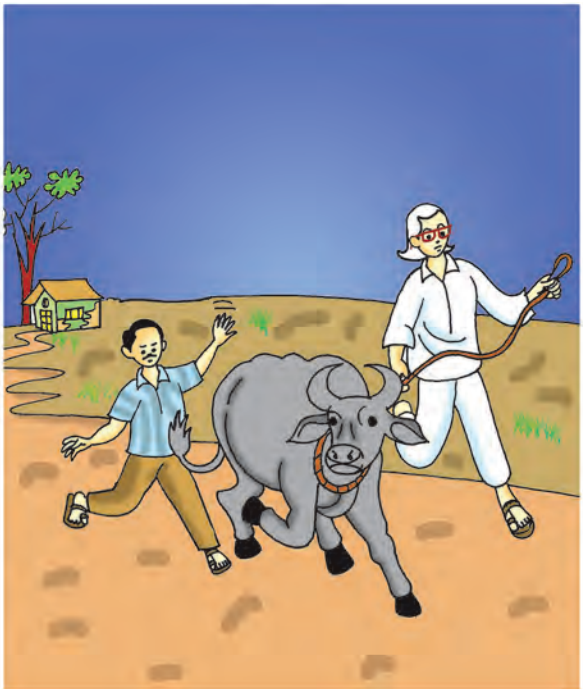

यह घटना शिष्य के जेहन में बैठ गई । करीब १० साल बाद जब वह एक सफल आदमी बन गया उसने सोचा क्यों न अपनी गलती का पश्चाताप करने के लिए एक बार फिर उसी आदमी से मिला जाए । उसकी

आर्थिक मदद की जाए। अपनी चमचमाती कार से वह उस खेत के सामने पहुँचा।

शिष्य को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था । वह उजाड़ खेत अब फलों के बगीचे में बदल चुका था। टूटे-फूटे घर की जगह एक शानदार बंगला खड़ा था । जहाँ अकेली भैंस बँधी रहती थी वहाँ अच्छी नस्ल की कई गायें और भैंसें अपना चारा चर रही थीं।

शिष्य ने सोचा कि शायद भैंस के न रहने के बाद वह परिवार सब कुछ बेच-बाच कर कहीं चला गया होगा। वहाँ से वापस लौटने के लिए वह अपनी कार स्टार्ट करने लगा कि तभी उसे वही दस साल पहले

❑ कहानी का आदर्श वाचन करें । उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ का आशय समझाएँ । विद्यार्थियों से मौन वाचन कराएँ । कहानी को नाट्यीकरण के रूप में प्रस्तुत करने के लिए मार्गदर्शन करें । कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ ।

अध्ययन कौशल

वाहन नियंत्रण कक्ष द्वारा निर्धारित नियम-पालन हेतु सूचना फलक बनाओ और विद्यालय में लगाओ ।

वाला आदमी दिखाई दिया।

" शायद आप मुझे पहचान नहीं पाए, सालों पहले मैं आपसे मिला था।" शिष्य उस आदमी की तरफ बढ़ते हुए बोला।

"नहीं-नहीं, ऐसा नहीं है । मुझे अच्छी तरह याद है, आप और आपके गुरु यहाँ आए थे । कैसे भूल सकता हूँ उस दिन को ! उस दिन ने तो मेरा जीवन ही बदल कर रख दिया। आप लोग तो बिना बताए चले गए, पर उसी दिन न जाने कैसे हमारी भैंस भी कहीं चली गई । कुछ दिन तो समझ ही नहीं आया कि क्या करें? पर जीने के लिए कुछ तो करना ही था, सो हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहने के बदले यहाँ-वहाँ छोटे-बड़े काम करके उससे कुछ रुपये कमाना शुरू किया । जमा रुपयों से खेत में बोआई कर दी । सौभाग्य से फसल की अच्छी पैदावार हुई । फसल बेचने पर जो रुपये मिले उससे फलों के बगीचे लगवा दिए । यह काम अच्छा चल पड़ा और इस समय मैं आस-पास के हज़ार गाँवों में फलों का सबसे बड़ा व्यापारी हूँ । सचमुच, ये सब कुछ न हुआ होता अगर उस दिन हमारी भैंस चली न जाती ।''

"लेकिन यही काम तो आप पहले भी कर सकते थे ।" शिष्य ने आश्चर्य से पूछा।

आदमी बोला, " बिलकुल कर सकता था । पर तब जिंदगी बिना किसी मेहनत के आराम से चल रही थी । कभी लगा ही नहीं कि मेरे अंदर इतना सब कुछ करने की क्षमता है । मैंने कोशिश ही नहीं की पर जब भैंस कहीं चली गई तब हाथ-पाँव मारने पड़े । मुझ जैसा गरीब-बेहाल इनसान तभी आज इस मुकाम तक पहुँच पाया।"

आज शिष्य अपने गुरु के उस निर्देश का असली मतलब समझ चुका था और बिना किसी पश्चाताप के वापस लौट पा रहा था।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
दार्शनिक = तत्त्वज्ञानी
जेहन = बुद्धि
नस्ल = वंश
बोवाई = बीज बोने का काम

मुहावरे
हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहना = कोई काम न करना
हाथ-पाँव मारना = प्रयत्न करना

जरा सोचो तो ... चर्चा करो ।

कहानी के शिष्य की जगह तुम होते तो ...

स्वयं अध्ययन

'भैंस' पर आधारित मुहावरे एवं कहावतें पढ़ो और संकलित करो ।

सुनो तो जरा

डोरेमॉन की कोई एक कहानी सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

'अक्ल बड़ी या भैंस' इसे स्पष्ट करते हुए कोई घटना बताओ ।

वाचन जगत से

मीरा के पद पढ़ो और उसका अनुलेखन करो ।

मेरी कलम से

''हेलन केलर'' के बारे में संक्षेप में जानकारी लिखो ।

❊ सही पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखो ।

१. तो आखिर आप लोगों का ..... कैसे चलता है ?
[काम, गुजारा, परिवार, खाना-पीना]

२. यह घटना शिष्य के ..... में बैठ गई ।
[जेहन, अंतरात्मा, हृदय, मन]

३. शिष्य को अपनी आँखों पर ..... नहीं हो रहा था।
[अविश्वास, विश्वास, यकीन, भरोसा]

४. उससे कुछ पैसे जमा हुए तो खेत में ..... कर दी ।
[कटाई, औसाई, बोआई, निगरानी]

सदैव ध्यान में रखो

समस्या ही समाधान का उद्‌गम है ।

विचार मंथन

।। हमें पहुँचना उस मंजिल तक जिसके आगे राह नहीं ।।

भाषा की ओर

अशुद्‌ध शब्दों को शुद्‌ध करके उसका वाक्य में प्रयोग करके लिखो ।

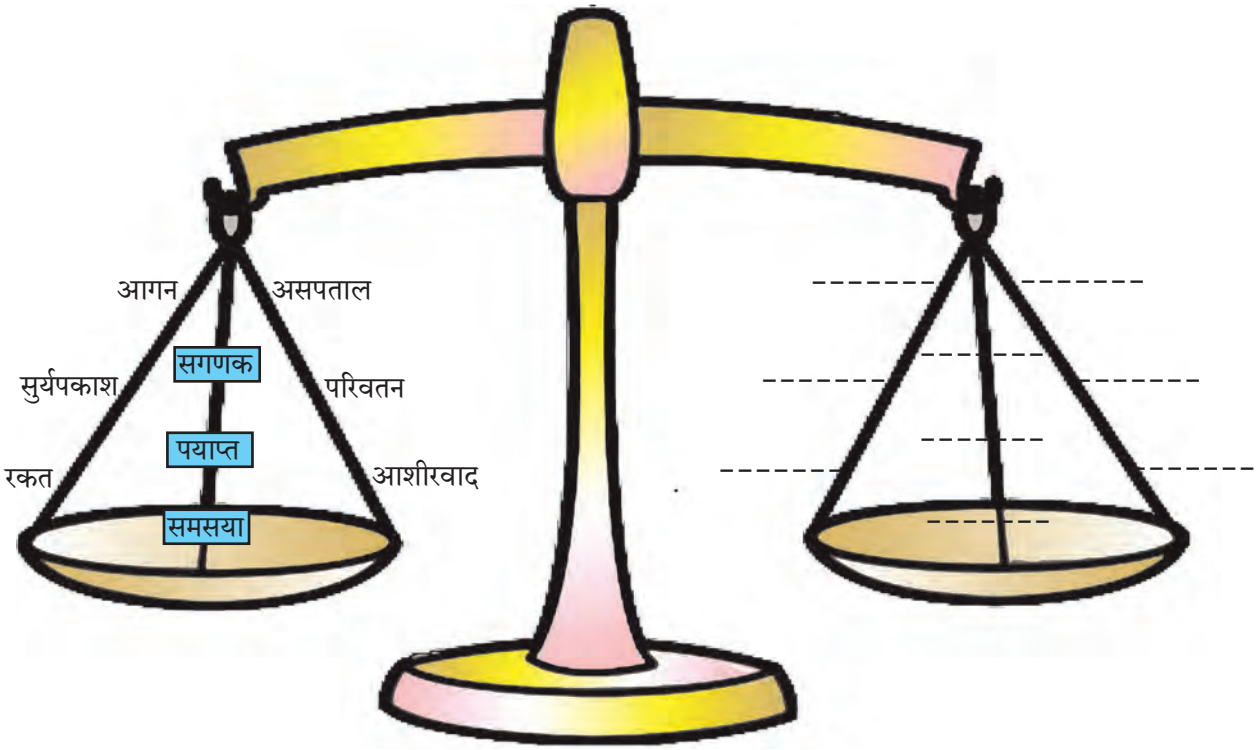

● सुनो, समझो और बोलो :

१४. सारे जहाँ से अच्छा

–जयप्रकाश भारती

प्रस्तुत एकांकी में संवादों के माध्यम से राकेश शर्मा की अंतरिक्षयात्रा की जानकारी दी गई है । इस पाठ से देश–प्रेम एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास किया गया है ।

⁎ चित्र के आधार पर काल संबंधी अन्य वाक्य बनाओ और समझो :

(परदा उठने तक मंच पर 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा' गीत गूँजता है । धीरे–धीरे मंच पर रोशनी फैलती है। गीत धीरे–धीरे धीमा होते–होते समाप्त हो जाता है । रोशनी में राकेश अधबना हवाई जहाज हाथ में लिए बैठा है । जहाज बनाने के औजार उसके सामने पड़े हैं । दादा जी और आठ–नौ वर्ष की लड़की छाया का प्रवेश ।)

दादा जी : अरे राकेश, बड़े मग्न हो ! अरे भई, ये क्या लिए बैठे हो ?

राकेश : दादा जी, हवाई जहाज । बस, अब बनकर तैयार ही समझो ।

दादा जी : क्यों नहीं बेटे राकेश, जो सच्ची लगन से मेहनत करता है, उसे सफलता जरूर मिलती है ।

छाया : पर दादा जी, राकेश मेहनत करता है ? जब देखो तब 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा' गाना गुनगुनाता रहता है ।

दादा जी : छाया बेटी, अपने देश की महिमा गाना बड़ी अच्छी बात है ।

राकेश : दादा जी, मैंने पहले–पहल इस गाने के बारे में तब जाना, जब अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा (छाती फुलाकर) यानी कि मैं, अंतरिक्ष में गए थे ।

दादा जी : लेकिन छाया बेटी, तुम्हें मालूम है राकेश शर्मा ने अंतरिक्ष यान से क्या कहा था ?

राकेश : उन्होंने कहा था, सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा ।

छाया : हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलसिताँ हमारा ।

दादा जी : अरे वाह–वाह ...! छाया बेटी, तुम तो बड़ी जागरूक लड़की हो । जब राकेश आकाश में उड़ रहे थे,

❑ संवाद में आए काल (था, है, रहेगा) तथा उनके भेदों (सामान्य, पूर्ण, अपूर्ण) को समझाएँ । काल के भेदों सहित संवाद में आए अन्य वाक्य कहलवाएँ और दृढ़ीकरण होने तक अभ्यास करवाएँ ।

खोजबीन

अपने तहसील के स्थल की जानकारी इकट्ठा करो ।

तब उन्होंने अनेक देश देखे लेकिन उन्होंने कहा कि तीन सौ किलोमीटर की ऊँचाई से भी अपने देश भारत को पहचानना मेरे लिए बहुत आसान था ।

राकेश : दादा जी, मेरी इच्छा है कि मैं भी राकेश शर्मा की तरह सारी दुनिया के ऊपर उड़ता फिरूँ !

(माँ का प्रवेश)

दादा जी : आओ बहू ... देख लो, तुम्हारा लाड़ला पायलट बनना चाहता है ।

माँ : राकेश बेटे, अब तुम अपनी इच्छा पूरी कर सकोगे ।

राकेश : दादा जी, मुझे योगासन भी करने चाहिए । राकेश शर्मा ने भी तो अंतरिक्ष में योग क्रियाएँ की थीं ।

दादा जी : हाँ बेटे, अंतरिक्ष में यात्रियों को कई बीमारियाँ हो जाती हैं । योग का अभ्यास यही देखने के लिए किया गया है कि क्या योग से अंतरिक्षयात्री अधिक स्वस्थ रह सकते हैं?

छाया : दादा जी, आप एक बात तो कहना भूल ही गए । राकेश शर्मा ने अंतरिक्ष में कहा था कि यहाँ से तारे और ग्रह स्पष्ट नजर आते हैं । तारे बहुत बड़े होते हैं । कुछ तो इतने बड़े हैं कि पृथ्वी जैसे अनेक ग्रह इनमें समा जाएँ ।

दादा जी : बिलकुल ठीक कहा तुमने । सूरज पृथ्वी से पंद्रह करोड़ किलोमीटर दूर है । वह आग के विशाल गोले की तरह है । यदि पृथ्वी सूरज से दूर-दूर होती जाए तो सूरज छोटा, अधिक छोटा मालूम होगा।

राकेश : जैसे रात में तारे नजर आते हैं, वैसे ही सूरज भी नजर आएगा ।

दादा जी : हमारा सूरज भी एक तारा है । हमें वह इसीलिए बड़ा नजर आता है क्योंकि पृथ्वी उसके समीप है ।

छाया : राकेश और उनके सहयोगी कितने दिन अंतरिक्ष में रहे ?

❑ संवाद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों द्वारा पात्रों का चयन कर संवाद वाचन कराएँ । संवाद की नाट्यप्रस्तुति के लिए आवश्यक तैयारी के संबंध में चर्चा करें । संवाद का नाट्यीकरण कर प्रस्तुति कराएँ ।

दादा जी : एक सप्ताह उन्होंने अंतरिक्ष स्थानक में बिताया । उन्होंने वे सब प्रयोग किए; जिन्हें करने के लिए उन्हें कहा गया था । उन्होंने अनेक चित्र खींचे; भारत भूमि के चित्र भी लिए ।

राकेश : दादा जी, इतनी दूर से फोटो कैसे खींचे ?

दादा जी : खास तरह के कैमरे अंतरिक्षयान में होते हैं । ऐसे कैमरे, जो धरती पर रखी बोतल जैसी छोटी चीज का भी फोटो ले सकें ।

छाया–राकेश : (आश्चर्य से) अच्छा... यह तो कमाल ही है ।

दादा जी : हाँ, विज्ञान का यह चमत्कार ही है ।

राकेश : दादा जी, इस यात्रा से लाभ क्या हुआ ?

दादा जी : इससे जो जानकारी मिली, वैज्ञानिक उसका अध्ययन कर रहे हैं । उन्हें देश की धरती पर और धरती के भीतर भी क्या कुछ छिपा है, यह जानने में मदद मिलेगी । मौसम, फसलों, नदी–पहाड़ों के बारे में और अधिक जानकारी मिल सकेगी ।

छाया : और यह बड़े साहस का काम तो था ही ।

राकेश : इससे अंतरिक्ष की खोज और अनुसंधान की दिशा में देश की दिलचस्पी बढ़ेगी ।

दादा जी : बिलकुल ठीक । आज काफी जानकारी तुम लोगों को मिल गई है । बड़े होकर तुम भी राकेश शर्मा का अनुसरण कर अंतरिक्ष में घूमोगे और गाओगे–'सारे जहाँ से अच्छा...'

(गीत गूँजता है और परदा गिरता है ।)

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

अधबना = आधा बना हुआ
औजार = हथियार
महिमा = महानता
गुलसिताँ = बगीचा
पायलट = विमान चालक
अनुसंधान = शोधकार्य
अनुसरण = के अनुसार

स्वयं अध्ययन

देशभक्ति पर आधारित गीतों को पढ़ो और गाओ ।

अध्ययन कौशल

देश की स्वतंत्रता के लिए दिए गए नारों का (घोषवाक्यों का) संकलन करके उनकी वाक्य पट्टियाँ बनाकर कक्षा में लगाओ ।

सुनो तो जरा

स्वतंत्रता सेनानी की जीवनी से संबंधित कोई घटना सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

तुम अपनी देशभक्ति को अपने शब्दों में बताओ ।

वाचन जगत से

संविधान की उद्देशिका पढ़ो और परिपाठ में सुनाओ ।

मेरी कलम से

'सबसे न्यारा देश हमारा' इस विषय पर अपने विचार लिखो ।

❊ उत्तर लिखो ।

१. राकेश शर्मा के बारे में जानकारी लिखो ।

२. प्रस्तुत पाठ से क्या संदेश मिलता है ?

जरा सोचो तो ... बताओ

यदि संचार माध्यम कुछ समय के लिए रुक जाए तो...

सदैव ध्यान में रखो

देश की उन्नति में हम सबका योगदान होना चाहिए ।

विचार मंथन

।। विद्या ददाति विनयम् ।।

भाषा की ओर

सौर्य मंड़ल की आकृति को देखकर नीचे दिए गए वाक्य का निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तन करके लिखो ।

१	नीरव पुस्तक पढ़ता है ।	५	
२		६	
३		७	
४		८	

● **सुनो, समझो और गाओ :**

१५. झाँसी की रानी

– सुभद्राकुमारी चौहान

जन्म : १९०४ **मृत्यु :** १९३९ **रचनाएँ :** 'मुकुल', 'उन्मादिनी', 'श्रीधारा' आदि । **परिचय :** आपकी रचनाएँ राष्ट्रप्रेम और नारीसुलभ भावनाओं से ओतप्रोत हैं । प्रस्तुत कविता में कवयित्री ने झाँसी की रानी की शौर्यगाथा एवं स्वतंत्रता संग्राम में उनके बलिदान का वर्णन किया है ।

अध्ययन कौशल

अब तक पढ़े नए शब्दों का लघु शब्दकोश तैयार करो ।

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार ।
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार ।।
नकली युद्ध , व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार ।
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवार ।।
महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी ।।१।।

कुटियों में थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान ।
वीर सैनिकों के मन में था, अपने पुरखों का अभिमान ।।
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान ।
बहिन छबीली ने रणचंडी का कर दिया प्रकट आह्वान ।।
हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी ।।२।।

❑ कविता की लय-ताल, हाव-भाव सहित प्रस्तुति करें । झाँसी की रानी के युद्धकौशल संबंधी प्रश्न पूछें । कविता के एक-एक चरण का गुट में गायन कराएँ । देशभक्ति की अन्य कविता सुनाने के लिए कहें ।

जरा सोचो तो ..... चर्चा करो

यदि यातायात के सिग्नल न हों तो ...

महलों ने दी आग, झोंपड़ों ने ज्वाला सुलगाई थी ।
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी ।।
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थीं ।
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी ।।
जबलपुर, कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी ।।३।।

जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी ।
यह तेरा बलिदान जगाएगा स्वतंत्रता अविनाशी ।।
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी ।
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी ।।
तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी ।।४।।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

खिलवार = खेल
दुर्ग = किला
चिनगारी = अग्निकण
मदमाती = मतवाली
बलिदान = त्याग
अमिट = न मिटने वाली

स्वयं अध्ययन

'वसुंधरा दिवस' कैसे मनाएँ ,इसके बारे में जानकारी लिखो ।

खोजबीन

आकाश गंगा की जानकारी प्राप्त करो ।

सुनो तो जरा

कोई स्फूर्ति गीत सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

झाँसी की रानी के बचपन संबंधी कोई प्रसंग/घटना बताओ ।

वाचन जगत से

विभिन्न क्षेत्रों की प्रथम भारतीय महिलाओं की जानकारी पढ़ो और बताओ ।

मेरी कलम से

अपने परिवेश के दिव्यांग व्यक्ति का साक्षात्कार लेने हेतु पाँच-छह प्रश्न बनाकर लिखो ।

❊निम्नलिखित भावों से संबंधित पंक्तियाँ लिखो ।

१. स्वतंत्रता की इच्छा हर भारतीय के मन में जाग उठी थी ।

२. झाँसी की रानी अपने आप में एक स्मारक है ।

सदैव ध्यान में रखो

देश के प्रति त्याग और समर्पण की भावना होनी चाहिए ।

विचार मंथन

।। स्वतंत्रता अनमोल होती है ।।

भाषा की ओर

निम्न वाक्यों के काल पहचान कर उसे अन्य दो कालों में परिवर्तित करके लिखो :

मैं साइकिल चलाना सीखूँगा ।

काल

शीतल ने पत्र लिखा है ।

तृषा पुस्तक पढ़ रही थी ।

सलीम जा रहा था ।

हम मुंबई जाएँगे ।

● **गाओ :**

एकता का गूँजे इकतारा

– डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

मंदिर मस्जिद से मिलते हैं
मस्जिद से गुरुद्वारा ।
सचमुच ही पावन लगता है हिंदुस्तान हमारा ।।

उत्तर–दक्षिण पूरब–पश्चिम
दूर–दूर तक नाता ।
भारत वाशी कहलाने में
हर कोई सुख पाता ।।
भाषा–धर्म–जाति कोई हो
किंतु एक स्वर धारा ।।

मेल–जोल की महिमा हमने
धरती पर फैलाई ।
यहाँ शांति के आँगन में
बजती सुख की शहनाई ।
एक नींव पर खड़ा हुआ है
अपना भारत सारा ।।

बगिया के गुलाब की खुशबू
को मत बाँटो भाई ।
बाँट सको तो बाँटो भइया
मिलकर पीर पराई ।
भेदभाव के बिना
एकता का गूँजे इकतारा ।

* पुनरावर्तन * ३

१. 'जल संधारण योजना' की जानकारी सुनो ।

२. अपने सबसे अच्छे दो मित्रों के बारे में बताओ ।

३. अपने परिसर की किसी जनकल्याणकारी सामाजिक संस्था के कार्य पढ़ो ।

४. ट्रैफिक पुलिस और वाहन चालक के बीच जेब्रा क्रॉसिंग पर हुए वार्तालाप को लिखो ।

५. निम्नलिखित चौखट में तुम्हारी पाठ्यपुस्तक में आए नौ लेखकों/कवियों के नाम दिए हैं, उन्हें ढूँढ़कर लिखो ।

रा	दि	वि	क	र	मे	श	द
जें	म	दि	र	स	ले	सा	रा
द्र	नी	धा	ल	म	प्र	ख	स
प्र	बि	हा	री	र	मा	दा	ह
सा	न	दे	क	सिं	सी	ती	सिं
द	वें	शं	र	ल	ह	ला	थ
र्य	य	बी	तु	ही	ह	डू	ना
ज	क	आ	प	ना	म	नी	श्री

उपक्रम/प्रकल्प

उपग्रहों का इतिहास सुनो ।	प्रति शनिवार को विश्व के सात आश्चर्यों में से किसी एक की जानकारी बताओ ।	अंधविश्वासों के दुष्परिणामों को पढ़ो ।	व्यावसायिक पत्र का ढाँचा तैयार करो ।

❊ पुनरावर्तन ❊ ४

१. दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले रोचक विज्ञापनों को ध्यानपूर्वक सुनो ।

२. किसी सार्वजनिक स्थल पर दी गई सूचनाओं को बताओ ।

३. बेताल पच्चीसी की कोई कहानी पढ़ो ।

४. 'वन-महोत्सव' की जानकारी लिखो ।

५. नीचे दिए गए शब्दों को उचित स्थान पर लिखो ।

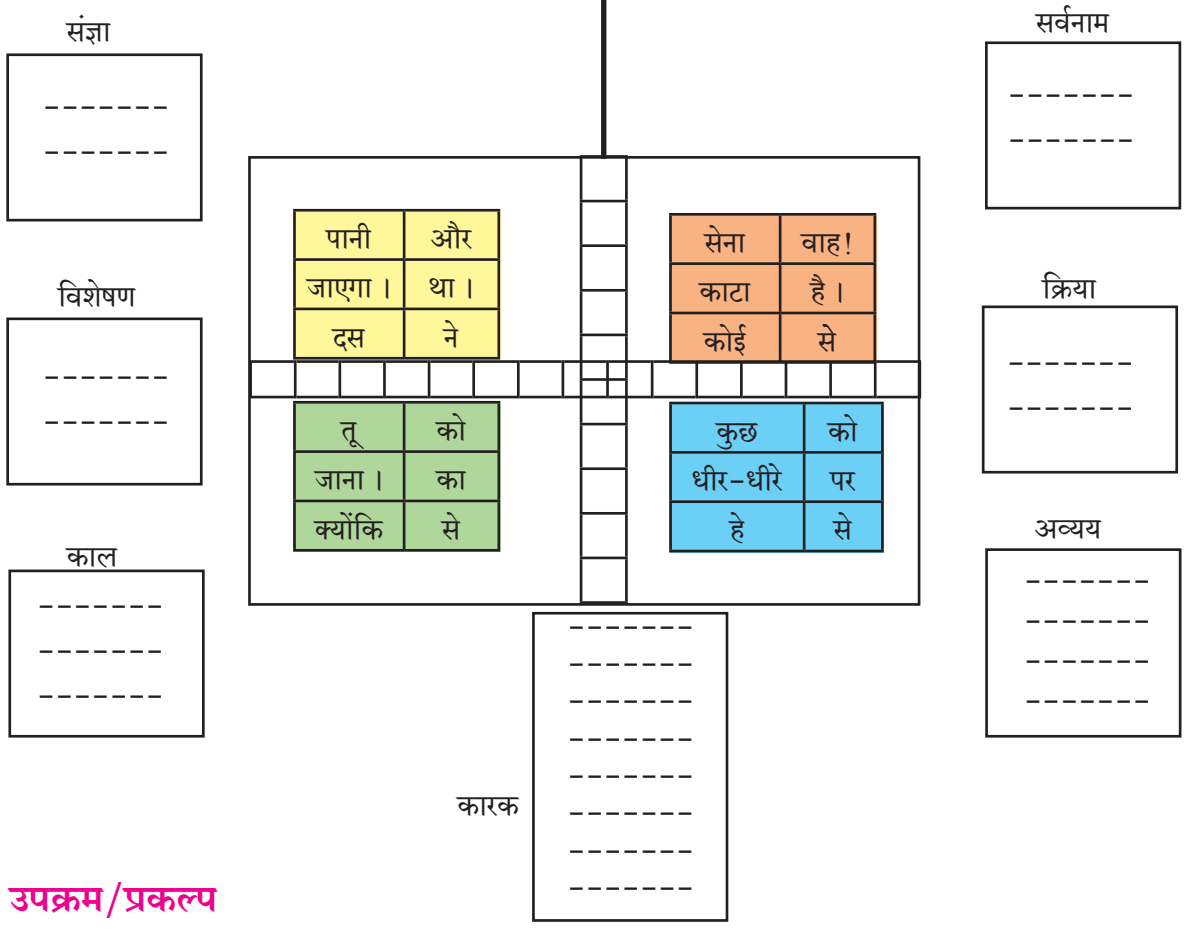

उपक्रम/प्रकल्प

प्रतिदिन समाचार सुनो ।	कागज, कलम, स्याही के बारे में बताओ ।	स्वतंत्रता सेनानियों की जानकारी पत्र-पत्रिकाओं से पढ़ो ।	अपने मनपसंद खिलौने के बारे में लिखो ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

बालभारती इयत्ता ६ वी (हिंदी)

₹ 46.00